ज्योतिष संजीवनी

Name - Sample
Date - 10/08/1941
Time - 02:15:00
POB - New delhi (Delhi) India
Longitude - 077:12:00 E
Latitude - 028:36:00 N

Mindsutra Software Technologies
A-16, Ground Floor Uttam Nagar New Delhi - 110059
Phone: 011-49043166, 91 9818193410

© lalkitabnadi.com

श्री गणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्रिसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्री–पुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण

लिंग	पुरूष
जन्म दिनांक	10:08:1941
जन्म समय	02:15:00
जन्म दिन	रविवार
जन्म स्थान	new delhi
राज्य	Delhi
देश	India
अक्षांश	028:36:00N
रेखांश	077:12:00E
स्थानीय समय संस्कार	-000:21:11
स्थानीय समय	001:53:48 hrs
समय क्षेत्र	05:30 E
समय संशोधन	-00:00
सांपातिक काल	023:05:35 hrs
इष्ट काल	51: 03: 50 Ghati

पंचांग विवरण

विक्रम संवत	1998
शक संवत	1863
संवत्सर	वृष
ऋतु	वर्षा
मास	भाद्र
पक्ष	कृष्ण
वार	
तिथि	तृतीया
नक्षत्र (पद)	पूर्वाभाद (2)
योग	अतिगण्ड
करन	विष्टी

अवकहड़ा चक्र

पाया	रजत
वर्ण	शुद्र
वश्य	जलचर
योनि	शेर (पु०)
गण	मनुष्य
नाड़ी	आदि
रज्जु	नाभि
तत्व	आकाश
तत्वाधिपति	बृहस्पति
विहग	मयूर
नाड़ी पद	मध्य
वेध	उत्तरफाल्गु
आद्याक्षर	सा
दशा बैलेंस	बृहस्पति–९ .० व .1 .0 म .11 द .
वर्तमान दशा	चन्द्र–शनि–केतु
भयात	26: 58: 05 Ghati
भभोग	63: 13: 54 Ghati
सूर्य राशि (वैदिक)	कर्क
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	सिहं
अयनांश	N.C.Lahiri
अयनांश मान	023:02:29
देकानेट	2
फेस	IV
सूर्योदय	05:50:28AM
सूर्यास्त	07:02:42PM
जन्मदिन का ग्रह	सूर्य
जन्मसमय का ग्रह	शनि

♊ **लग्न** मिथुन	♒ **राशि** कुम्भ	**नक्षत्र – पद** पूर्वाभाद – 2
☿ **लग्नाधिपति** बुध	♄ **राशिपति** शनि	♃ **नक्षत्रपति** बृहस्पति

घात चक्र

चैत्र अशुभ मास	वृहस्पतिवार अशुभ वार	3 अशुभ प्रहर
धनु अशुभ राशि	कन्या अशुभ लग्न	3, 8, 13 अशुभ तिथि
अरिद्रा अशुभ नक्षत्र	ब्याधात अशुभ योग	किम्सतुघ्न अशुभ करन

शुभ बिन्दु

1 मूलांक	6 भाग्यांक	3, 9 मित्रांक
1, 8 शत्रु अंक	18, 21, 24, 27, 30, 33, 36, 39 शुभ वर्ष	बुधवार, शुक्रवार, शनिवार शुभ दिन
बुध, शुक्र, शनि शुभ ग्रह	बृहस्पति अशुभ ग्रह	वृष, सिहं, तुला, धनु मित्र राशि
कन्या, धनु, कुम्भ, मेष मित्र लग्न	पन्ना शुभ रत्न	पन्नी, संगपन्ना, मरगज शुभ उपरत्न
नीलम भाग्य रत्न	गणेश अनुकूल देवता	कांसा शुभ धातु
हरित शुभ रंग	उत्तर दिशा	सूर्योदय के 2 घंटे बाद शुभ समय
शक्कर, हाथीदांत, कपूर, फल शुभ पदार्थ	मूंग (साबुत) शुभ अन्न	घी शुभ द्रब्य

ग्रह स्थिति (पराशरी)

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	संबंध
सूर्य	कर्क	23:47:42	अश्लेषा (3)	मित्र राशि
चन्द्रमा	कुम्भ	25:44:26	पूर्वाभाद (2)	सम राशि
मंगल	मीन	25:32:30	रेवती (3)	मित्र राशि
बुध (अ.)	कर्क	14:00:17	पुष्य (4)	शत्रु राशि
बृहस्पति	वृष	22:48:58	रोहिणी (4)	शत्रु राशि
शुक्र	सिहं	23:31:29	पुर्वफाल्ग (4)	स्व नक्षत्र
शनि	वृष	04:37:01	कृतिका (3)	मित्र राशि
राहु	कन्या	01:26:07	उत्तरफाल्ग (2)	मित्र राशि
केतु	मीन	01:26:07	पूर्वाभाद (4)	सम राशि
हर्षल	वृष	07:00:34	कृतिका (4)	सम राशि
नेपच्यून	कन्या	02:55:44	उत्तरफाल्ग (2)	सम राशि
प्लूटो	कर्क	11:15:04	पुष्य (3)	सम राशि
लग्न	मिथुन	07:01:34	अरिद्रा (1)	....
10वां कस्प	मीन	22:11:00	पूर्वाभाद (1)	....

ग्रह स्थिति (पराशरी)

	ग्रह	व/अ		राशि	अंश	नक्षत्र	पद	कारक	विशेष
AC	लग्न		♊	मिथुन	07:01:34	अरिद्रा (6)	1		
☉	सूर्य		♋	कर्क	23:47:42	अश्लेषा (9)	3	भ्रात्रि	मित्र राशि
☽	चन्द्रमा		♒	कुम्भ	25:44:26	पूर्वाभाद (25)	2	आत्म	सम राशि
♂	मंगल		♓	मीन	25:32:30	रेवती (27)	3	अमात्य	मित्र राशि
☿	बुध	अ.	♋	कर्क	14:00:17	पुष्य (8)	4	ज्ञाति	शत्रु राशि
♃	बृहस्पति		♉	वृष	22:48:58	रोहिणी (4)	4	अपत्या	शत्रु राशि
♀	शुक्र		♌	सिहं	23:31:29	पुर्वफाल्ग (11)	4	मात्रि	स्व नक्षत्र
♄	शनि		♉	वृष	04:37:01	कृतिका (3)	3	दारा	मित्र राशि
☊	राहु		♍	कन्या	01:26:07	उत्तरफाल्ग (12)	2		मित्र राशि
☋	केतु		♓	मीन	01:26:07	पूर्वाभाद (25)	4		सम राशि
♅	हर्षल		♉	वृष	07:00:34	कृतिका (3)	4		सम राशि
♆	नेपच्यून		♍	कन्या	02:55:44	उत्तरफाल्ग (12)	2		सम राशि
♇	प्लूटो		♋	कर्क	11:15:04	पुष्य (8)	3		सम राशि

लग्न कुण्डली

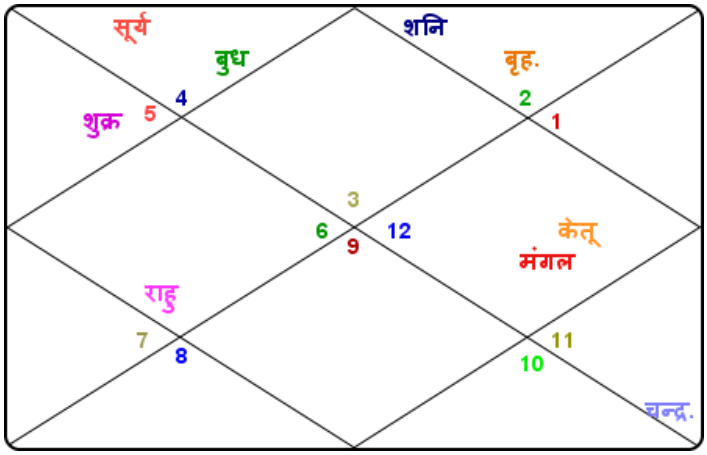

नवांश कुण्डली

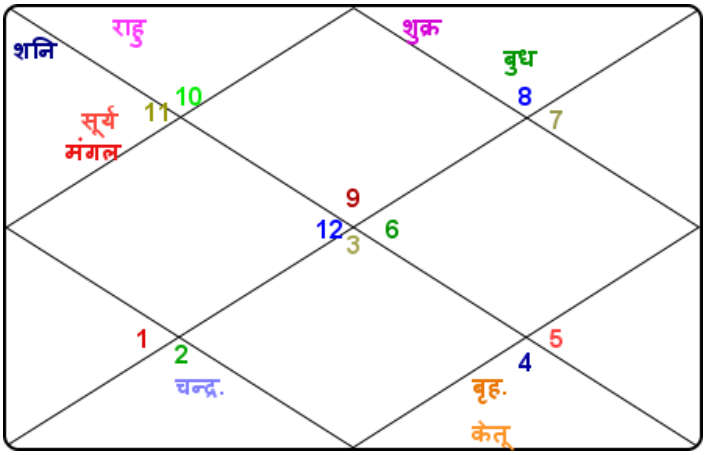

D-16 षोडश वर्ग कुण्डली

जन्म/लग्न कुण्डली (डी 1)

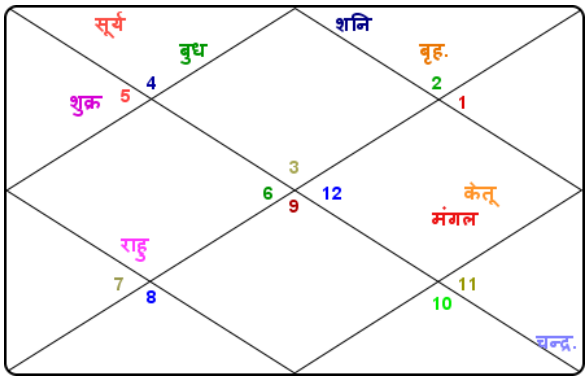

जन्मकुण्डली या लग्न कुण्डली एक व्यक्ति के जीवन की एक विस्तृत तस्वीर है। यह 12 घरों में विभाजित है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रत्येक घर एक अलग राशि और ग्रह द्वारा नियंत्रित होता है। विभिन्न घरों में ग्रहों और राशियों के स्थान और परस्पर क्रिया का मूल्यांकन करके, कुण्डली किसी के व्यक्तित्व, रिश्तों, नौकरी, धन और सामान्य जीवन पथ में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

होरा कुण्डली (डी 2)

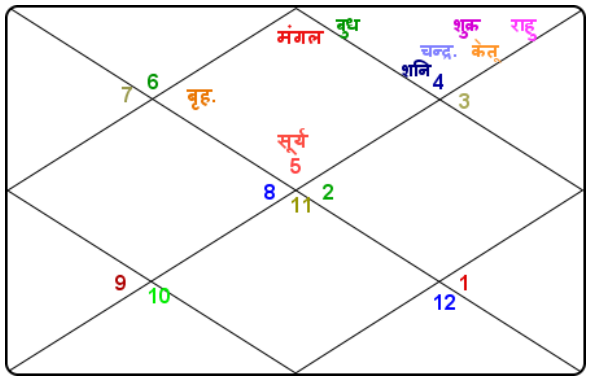

होरा कुण्डली मुख्य जन्म कुण्डली से निर्मित एक विभागीय कुण्डली है जिसका उपयोग समृद्धि और वित्तीय संभावनाओं को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह जन्म कुंडली में प्रत्येक राशि को आधे में विभाजित करता है, जिसमें सूर्य पहले अर्द्ध भाग पर शासन करता है और चंद्रमा दूसरे पर शासन करता है। ज्योतिषी ग्रहों की स्थिति और होरा कुण्डली के भीतर उनके संबंध या संयोजन का मूल्यांकन करके जीवन भर धन और वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति की क्षमता का अनुमान लगा सकते हैं।

द्रेष्काण कुण्डली (डी 3)

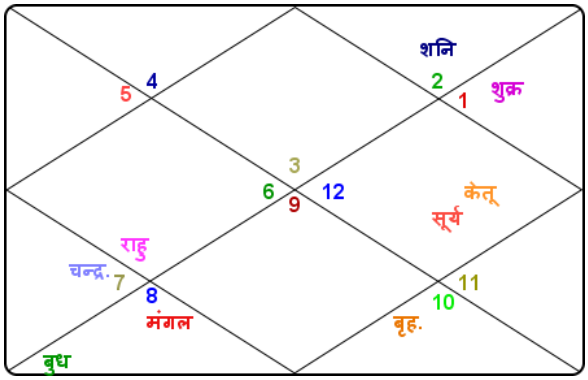

द्रेक्कन कुण्डली, प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 3 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 10 डिग्री माप का होता है। इस कुण्डली का उपयोग किसी के जीवन पर उसके भाई--बहनों, चचेरे भाई--बहनों और अन्य करीबी रिश्तेदारों के प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति की संचार क्षमता, छोटी यात्रा और साहस पर अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

चतुर्थांश कुण्डली (डी 4)

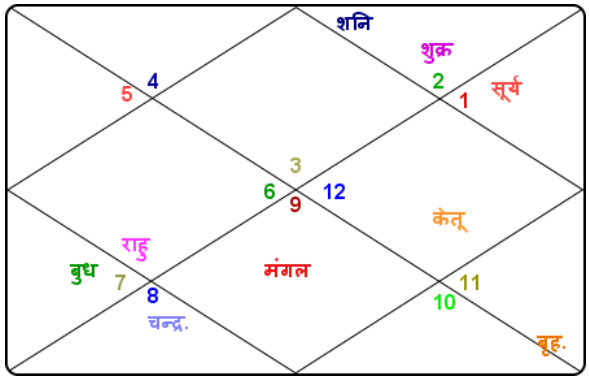

चतुर्थांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 4 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 7. 5 डिग्री तक फैला हुआ है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के घर, जमीन और अoटोमोबाइल के संबंध में उसकी खुशी, संपत्ति और भाग्य का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की सुरक्षा, भावनात्मक कल्याण, और उनकी मां या मातृभाषा के साथ संबंध में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों के बारे में बेहतर ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करता है।

सप्तमांश कुण्डली (डी 7)

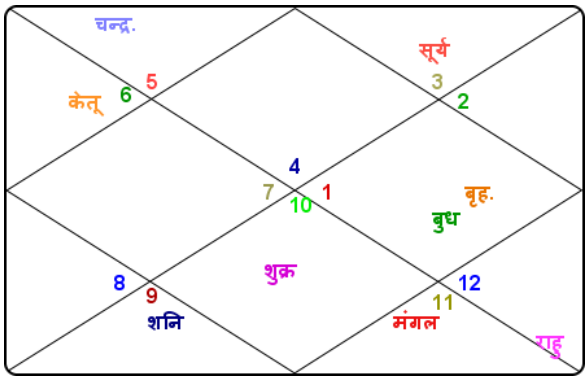

सप्तांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो मुख्य जन्म कुण्डली के प्रत्येक चिन्ह को 7 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप लगभग 4.29 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग सामान्यतः किसी व्यक्ति के जीवन में संतान, प्रजनन क्षमता और प्रसव से संबंधित मुद्दों का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य, कल्याण और बच्चों से उत्पन्न होने वाले सामान्य आनंद के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, साथ ही साथ किसी व्यक्ति के बच्चों की संख्या के बारे में अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है।

नवांश कुण्डली (डी 9)

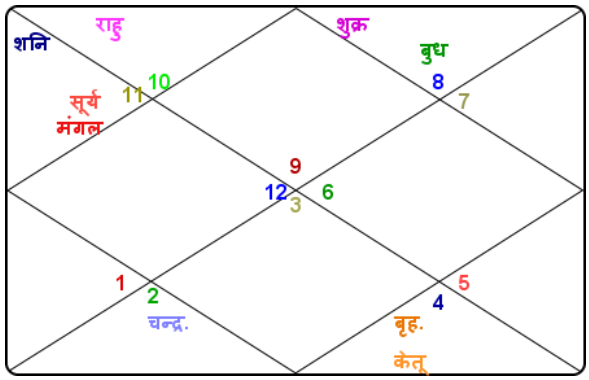

नवांश कुण्डली वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण संभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 9 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.20 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर ग्रहों की ताकत और कमजोरियों, वैवाहिक जीवन की गुणवत्ता और किसी के जीवनसाथी की प्रकृति का निर्धारण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास और आकांक्षाओं की पूर्ति में गहरी अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों के लिए व्यक्ति के जीवन के कई क्षेत्रों को समझने में यह एक महत्वपूर्ण उपकरण बन जाता है।

दशमांश कुण्डली (डी 10)

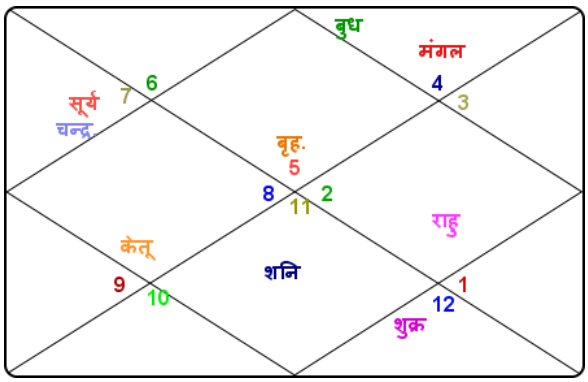

दशमांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 10 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 3 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के करियर, पेशे और समग्र व्यावसायिक उपलब्धि का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को पेशेवर प्रगति और सफलता के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ--साथ सर्वोत्तम कार्य मार्ग, संभावित उन्नति और कार्यस्थल की बाधाओं के बारे में जानकारी देता है।

द्वादशांश कुण्डली (डी 12)

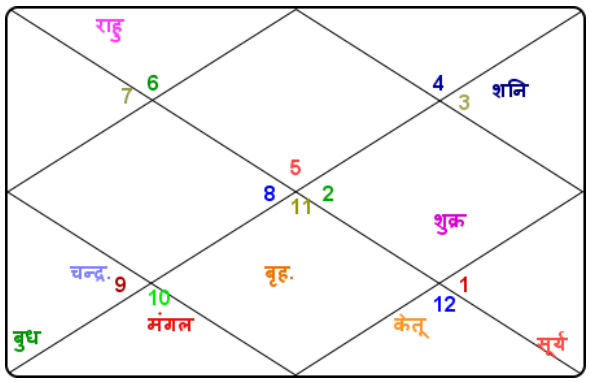

द्वादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 12 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 2.5 डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति के माता--पिता, पूर्वजों और पारिवारिक वंश के मुद्दों की जांच करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के माता--पिता, विरासत और पारिवारिक कर्म के साथ एक व्यक्ति के संबंध को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को एक व्यक्ति के जीवन के इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

षोडशांश कुण्डली (डी 16)

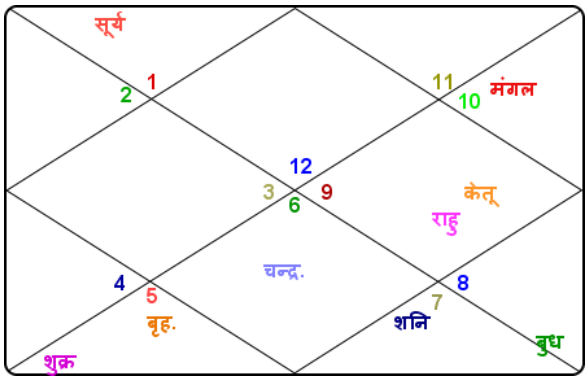

षोडशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 16 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.875 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के अoटोमोबाइल, आराम और विलासिता की विशेषताओं की जांच करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की वाहन, अचल संपत्ति, और अन्य वस्तुओं को हासिल करने और बनाए रखने की क्षमता को प्रकट करता है जो उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के अस्तित्व के इन विशिष्ट पहलुओं को समझने में सहायता मिलती है।

विशांश कुण्डली (डी 20)

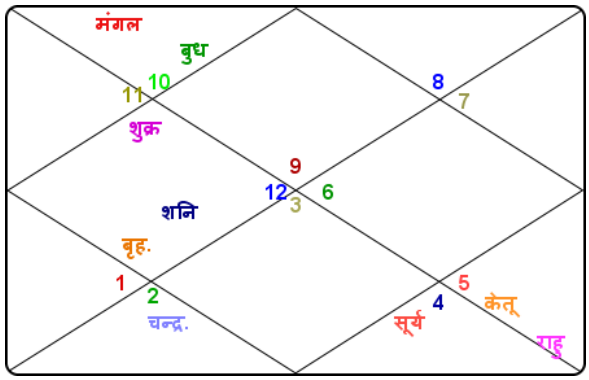

विशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 20 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 1.5 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास, धार्मिक प्राथमिकताओं और अधिक ज्ञान की खोज का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के अंतर्रात्मा, आध्यात्मिक क्षमता और उनके जीवन में धर्म और आध्यात्मिकता के महत्व के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन तत्वों का पता लगाने में सहायता मिलती है।

चर्तुविंशांश कुण्डली (डी 24)

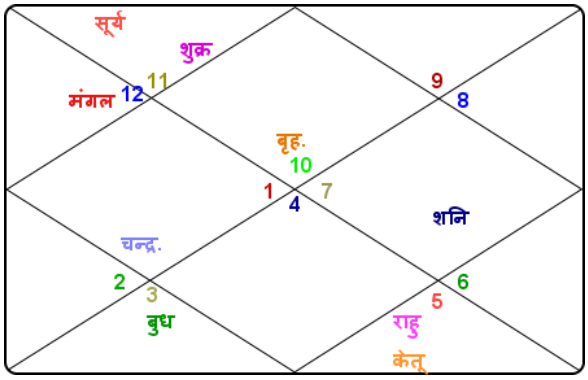

चर्तुविंशांश कुण्डली एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 24 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 1.25 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग आमतौर पर किसी व्यक्ति की शिक्षा, प्रतिभा और सीखने की क्षमता का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह कुछ विषयों, विशेषज्ञता के क्षेत्रों और शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक व्यक्ति की योग्यता को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को अकादमिक उन्नति प्राप्त करने और बौद्धिक क्षमता तक पहुंचने के लिए मागदर्शन प्रदान करने की अनुमति देता है।

सप्तविंशांश कुण्डली (डी 27)

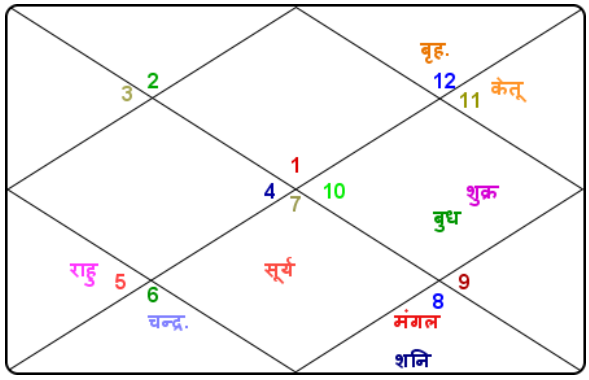

सप्तविंशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 27 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.11 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के नक्षत्रों या चंद्र राशियों की ताकत और उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को व्यक्ति के स्वभाव, आचरण और अंतर्निहित नक्षत्रों से प्रभावित जीवन की घटनाओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करके व्यक्ति के भाग्य और आध्यात्मिक झुकाव के बारे में बेहतर ज्ञान देता है।

त्रिंशांश कुण्डली (डी 30)

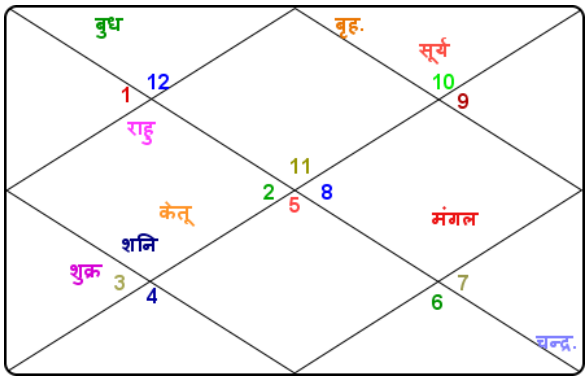

त्रिशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 30 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को एक डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग ज्यादातर उन कई कठिनाइयों और आपदाओं का आकलन करने के लिए किया जाता है जो एक व्यक्ति अपने जीवन के दौरान अनुभव कर सकता है। यह एक व्यक्ति की छिपी ताकत, कमजोरियों और उनकी कठिनाइयों के स्रोत को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को बाधाओं पर काबू पाने और जीवन के कई पहलुओं में कठिनाइयों का सामना करने हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

खवेदांश कुण्डली (डी 40)

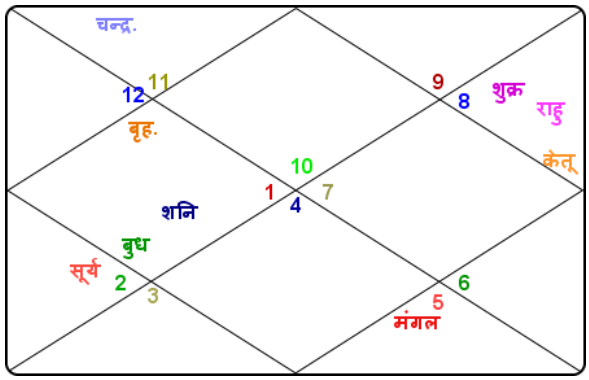

खवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 40 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.75 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति की समग्र भलाई और शुभता की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के साथ--साथ उनके समग्र सुख और समृद्धि के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने और एक सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली प्राप्त करने के बारे में सलाह देने की अनुमति मिलती है।

अक्षवेदांश कुण्डली (डी 45)

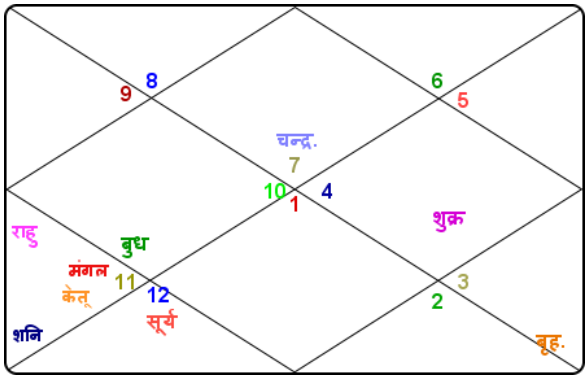

अक्षवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 45 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 0.67 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक और दिव्य गुणों का आकलन करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह एक व्यक्ति की प्रा.तिक आध्यात्मिक क्षमता, दैवीय आशीर्वाद और आध्यात्मिक विकास स्तर को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को आध्यात्मिक विकास में उन्नति और जागरूकता के उच्च स्तर की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षष्ठांश कुण्डली (डी 60)

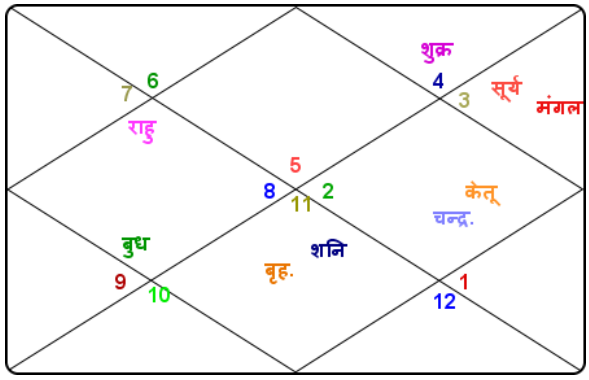

षष्ठांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 60 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.5 डिग्री मापता है। यह कुण्डली अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है और इसका उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले सबसे गहरे कर्म प्रभावों को प्रकट करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के पूर्व जीवन के कर्मों, अव्यक्त झुकावों और उनकी गतिविधियों के सूक्ष्म प्रभावों को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को कर्म असंतुलन को ठीक करने और अत्यधिक संतोषप्रद जीवन जीने का मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षडबल और भावबल

षड्बल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
उच्च बल	25.4	37.58	40.82	39.67	45.94	11.16	4.87
सप्त वर्ग बल	86.25	78.75	135	45	86.25	91.88	131.25
युग्म अयुग्म बल	15	15	15	0	0	15	15
केन्द्रादी बल	30	15	60	30	15	15	15
द्रेक्कन बल	0	15	0	15	0	15	0
स्थान बल	**156.65**	**161.33**	**250.82**	**129.67**	**147.19**	**148.03**	**166.12**
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	94.94	121.3	261.27	78.59	89.21	111.3	173.04
दिग बल	**9.46**	**1.19**	**48.88**	**47.67**	**55.26**	**59.55**	**10.8**
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	27.04	2.37	162.94	136.21	157.9	119.11	36.01
नतोन्नत बल	50.92	9	9	50.92	60	50.92	9
पक्ष बल	10.65	49.35	10.65	10.65	49.35	49.35	10.65
त्रिभाग बल	0	0	60	0	60	0	0
वर्ष बल	0	0	0	0	15	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
दिन बल	45	0	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	0	0	60
अयन बल	49.31	35.07	38.71	52.63	58.04	36.17	4.9
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
काल बल	**155.88**	**93.42**	**118.36**	**114.19**	**242.39**	**136.44**	**114.54**
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	139.18	93.42	176.66	101.96	216.42	136.44	170.96
चेष्टा बल	**49.31**	**49.35**	**15**	**0**	**30**	**45**	**30**
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	98.62	164.51	37.5	0	60	150	75
नैसर्गिक बल	**60**	**51.43**	**17.14**	**25.71**	**34.29**	**42.86**	**8.57**
द्रिक बल	**-27.75**	**4.52**	**9.77**	**-30.32**	**-10.21**	**-10.93**	**-2.21**
कुल षड्बल	**403.55**	**361.24**	**459.98**	**286.92**	**498.91**	**420.95**	**327.83**
षड्बल (रूप में)	**6.73**	**6.02**	**7.67**	**4.78**	**8.32**	**7.02**	**5.46**
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछित अंश	103.47	100.35	153.33	68.32	127.93	127.56	109.28
तुलनात्मक स्थिति	**4**	**5**	**2**	**7**	**1**	**3**	**6**
इष्ट फल	**33.58**	**43.07**	**24.74**	**0**	**37.12**	**22.41**	**12.09**
कष्ट फल	**26.42**	**16.93**	**35.26**	**60**	**22.88**	**37.59**	**47.91**
दिप्ति बल	**100**	**49.35**	**39.42**	**20.98**	**20.33**	**37.95**	**26.39**

भावबल

भाव सँख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव राशि	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
भावाधिपति बल	286.92	361.24	361.24	403.55	286.92	459.98	498.91	327.83	327.83	327.83	498.91	420.95
भाव दिग्बल	60	40	10	30	20	50	0	40	20	0	50	40
भाव दृष्टिबल	-3.82	-14.87	-16.1	-3.5	10.83	-21.04	-16.76	-11.59	8.25	9.53	5.25	3.64
भावबल योग	343.1	386.37	355.14	430.05	317.75	488.94	482.16	356.24	356.08	337.36	554.16	464.59
भावबल (रूप में)	5.72	6.44	5.92	7.17	5.3	8.15	8.04	5.94	5.93	5.62	9.24	7.74
तुलनात्मक स्थिति	10	6	9	5	12	2	3	7	8	11	1	4

विंशोत्तरी दशा (1)

बृहस्पति (9.0 व.1.0 म.11 द.)

दशा बैलेंश

N.C.Lahiri (023:02:29)

Ayanamsha

बृहस्पति (16 वर्ष)

10/08/1941 To 19/09/1950

बारहवें	वृष	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
	रोहिणी (4)	7 , 10
विशेष	नक्षत्र	भावपति
बृहस्पति	-------	-------
शनि	-------	-------
बुध	26-08-1941	00.00
केतु	02-08-1942	00.04
शुक्र	02-04-1945	00.98
सूर्य	19-01-1946	03.64
चन्द्रमा	21-05-1947	04.44
मंगल	26-04-1948	05.78
राहु	19-09-1950	06.71

शनि (19 वर्ष)

19/09/1950 To 19/09/1969

बारहवें	वृष	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	कृतिका (3)	8 , 9
विशेष	नक्षत्र	भावपति
शनि	22-09-1953	09.11
बुध	01-06-1956	12.12
केतु	11-07-1957	14.81
शुक्र	10-09-1960	15.92
सूर्य	23-08-1961	19.09
चन्द्रमा	24-03-1963	20.04
मंगल	02-05-1964	21.62
राहु	09-03-1967	22.73
बृहस्पति	19-09-1969	25.58

बुध (17 वर्ष)

19/09/1969 To 19/09/1986

दूसरे	कर्क	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
अस्त	पुष्य (4)	1 , 4
विशेष	नक्षत्र	भावपति
बुध	15-02-1972	28.11
केतु	12-02-1973	30.52
शुक्र	13-12-1975	31.51
सूर्य	19-10-1976	34.34
चन्द्रमा	21-03-1978	35.19
मंगल	18-03-1979	36.61
राहु	04-10-1981	37.60
बृहस्पति	10-01-1984	40.15
शनि	19-09-1986	42.42

केतु (7 वर्ष)

19/09/1986 To 19/09/1993

दसवें	मीन	सम
भाव	राशि	संबंन्ध
वक्री	पूर्वाभाद (4)	
विशेष	नक्षत्र	भावपति
केतु	15-02-1987	45.11
शुक्र	16-04-1988	45.52
सूर्य	22-08-1988	46.69
चन्द्रमा	24-03-1989	47.04
मंगल	20-08-1989	47.62
राहु	07-09-1990	48.03
बृहस्पति	14-08-1991	49.08
शनि	22-09-1992	50.01
बुध	19-09-1993	51.12

शुक्र (20 वर्ष)

19/09/1993 To 19/09/2013

तीसरे	सिहं	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
स्वनक्षत्र	पुर्वफाल्ग (4)	12 , 5
विशेष	नक्षत्र	भावपति
शुक्र	19-01-1997	52.11
सूर्य	19-01-1998	55.44
चन्द्रमा	19-09-1999	56.44
मंगल	19-11-2000	58.11
राहु	19-11-2003	59.28
बृहस्पति	20-07-2006	62.28
शनि	19-09-2009	64.94
बुध	20-07-2012	68.11
केतु	19-09-2013	70.94

सूर्य (6 वर्ष)

19/09/2013 To 19/09/2019

दूसरे	कर्क	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	अश्लेषा (3)	3
विशेष	नक्षत्र	भावपति
सूर्य	07-01-2014	72.11
चन्द्रमा	08-07-2014	72.41
मंगल	13-11-2014	72.91
राहु	07-10-2015	73.26
बृहस्पति	26-07-2016	74.16
शनि	08-07-2017	74.96
बुध	14-05-2018	75.91
केतु	19-09-2018	76.76
शुक्र	19-09-2019	77.11

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

विंशोत्तरी दशा (2)

चन्द्रमा (10 वर्ष)		
19/09/2019 To 19/09/2029		
नौवें	कुम्भ	सम
भाव	राशि	संबंन्ध
	पूर्वाभाद (2)	2
विशेष	नक्षत्र	भावपति
चन्द्रमा	20-07-2020	78.11
मंगल	18-02-2021	78.94
राहु	20-08-2022	79.53
बृहस्पति	19-12-2023	81.03
शनि	20-07-2025	82.36
बुध	19-12-2026	83.94
केतु	20-07-2027	85.36
शुक्र	21-03-2029	85.94
सूर्य	19-09-2029	87.61

मंगल (7 वर्ष)		
19/09/2029 To 19/09/2036		
दसवें	मीन	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	रेवती (3)	11 , 6
विशेष	नक्षत्र	भावपति
मंगल	15-02-2030	88.11
राहु	05-03-2031	88.52
बृहस्पति	09-02-2032	89.57
शनि	21-03-2033	90.50
बुध	18-03-2034	91.61
केतु	14-08-2034	92.60
शुक्र	14-10-2035	93.01
सूर्य	18-02-2036	94.18
चन्द्रमा	19-09-2036	94.53

राहु (18 वर्ष)		
19/09/2036 To 19/09/2054		
चौथे	कन्या	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
वक्री	उत्तरफाल्ग (2)	
विशेष	नक्षत्र	भावपति
राहु	02-06-2039	95.11
बृहस्पति	26-10-2041	97.81
शनि	01-09-2044	100.21
बुध	21-03-2047	103.06
केतु	07-04-2048	105.61
शुक्र	08-04-2051	106.66
सूर्य	02-03-2052	109.66
चन्द्रमा	01-09-2053	110.56
मंगल	19-09-2054	112.06

वर्तमान दशा/अन्तर/प्रत्यन्तर/ सूक्ष्म/ प्राण दशा

दशा	ग्रह	आरम्भ	समाप्त
महादशा	चन्द्रमा	19:09:2019 (16:52:31)	19:09:2029 (16:52:31)
अन्तर्दशा	शनि	19:12:2023 (22:52:31)	20:07:2025 (20:52:31)
प्रत्यन्तर्दशा	केतु	10:06:2024 (18:32:56)	14:07:2024 (13:50:56)
सूक्ष्मदशा	सूर्य	18:06:2024 (09:05:29)	20:06:2024 (01:39:23)
प्राणदशा	शनि	19:06:2024 (04:21:36)	19:06:2024 (10:46:58)

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन में दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वारा करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलूओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।

बृहस्पति दशा

(10:08:1941 – 19:09:1950)

बृहस्पति अन्तर		
बृहस्पति	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--

शनि अन्तर		
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
बृहस्पति	-------	--

बुध अन्तर		
(10:08:1941 To 26:08:1941)		
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
बृहस्पति	-------	--
शनि	26-08-1941	00.00

केतु अन्तर		
(26:08:1941 To 02:08:1942)		
केतु	15-09-1941	00.04
शुक्र	11-11-1941	00.10
सूर्य	28-11-1941	00.25
चन्द्रमा	26-12-1941	00.30
मंगल	15-01-1942	00.38
राहु	07-03-1942	00.43
बृहस्पति	21-04-1942	00.57
शनि	14-06-1942	00.70
बुध	02-08-1942	00.85

शुक्र अन्तर		
(02:08:1942 To 02:04:1945)		
शुक्र	11-01-1943	00.98
सूर्य	28-02-1943	01.42
चन्द्रमा	21-05-1943	01.56
मंगल	16-07-1943	01.78
राहु	09-12-1943	01.93
बृहस्पति	17-04-1944	02.33
शनि	19-09-1944	02.69
बुध	04-02-1945	03.11
केतु	02-04-1945	03.49

सूर्य अन्तर		
(02:04:1945 To 19:01:1946)		
सूर्य	16-04-1945	03.64
चन्द्रमा	11-05-1945	03.68
मंगल	28-05-1945	03.75
राहु	11-07-1945	03.80
बृहस्पति	19-08-1945	03.92
शनि	04-10-1945	04.02
बुध	14-11-1945	04.15
केतु	01-12-1945	04.26
शुक्र	19-01-1946	04.31

चन्द्रमा अन्तर		
(19:01:1946 To 21:05:1947)		
चन्द्रमा	28-02-1946	04.44
मंगल	29-03-1946	04.56
राहु	10-06-1946	04.63
बृहस्पति	14-08-1946	04.83
शनि	30-10-1946	05.01
बुध	07-01-1947	05.22
केतु	04-02-1947	05.41
शुक्र	26-04-1947	05.49
सूर्य	21-05-1947	05.71

मंगल अन्तर		
(21:05:1947 To 26:04:1948)		
मंगल	09-06-1947	05.78
राहु	31-07-1947	05.83
बृहस्पति	14-09-1947	05.97
शनि	07-11-1947	06.10
बुध	25-12-1947	06.24
केतु	14-01-1948	06.38
शुक्र	11-03-1948	06.43
सूर्य	28-03-1948	06.59
चन्द्रमा	26-04-1948	06.63

राहु अन्तर		
(26:04:1948 To 19:09:1950)		
राहु	04-09-1948	06.71
बृहस्पति	30-12-1948	07.07
शनि	18-05-1949	07.39
बुध	19-09-1949	07.77
केतु	09-11-1949	08.11
शुक्र	04-04-1950	08.25
सूर्य	18-05-1950	08.65
चन्द्रमा	30-07-1950	08.77
मंगल	19-09-1950	08.97

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शनि दशा

(19:09:1950 – 19:09:1969)

शनि अन्तर		
(19:09:1950 To 22:09:1953)		
शनि	12-03-1951	09.11
बुध	15-08-1951	09.59
केतु	18-10-1951	10.01
शुक्र	18-04-1952	10.19
सूर्य	12-06-1952	10.69
चन्द्रमा	12-09-1952	10.84
मंगल	15-11-1952	11.09
राहु	29-04-1953	11.27
बृहस्पति	22-09-1953	11.72

बुध अन्तर		
(22:09:1953 To 01:06:1956)		
बुध	08-02-1954	12.12
केतु	07-04-1954	12.50
शुक्र	17-09-1954	12.66
सूर्य	06-11-1954	13.11
चन्द्रमा	26-01-1955	13.24
मंगल	25-03-1955	13.47
राहु	19-08-1955	13.62
बृहस्पति	28-12-1955	14.03
शनि	01-06-1956	14.39

केतु अन्तर		
(01:06:1956 To 11:07:1957)		
केतु	25-06-1956	14.81
शुक्र	31-08-1956	14.88
सूर्य	21-09-1956	15.06
चन्द्रमा	24-10-1956	15.12
मंगल	17-11-1956	15.21
राहु	17-01-1957	15.27
बृहस्पति	12-03-1957	15.44
शनि	15-05-1957	15.59
बुध	11-07-1957	15.76

शुक्र अन्तर		
(11:07:1957 To 10:09:1960)		
शुक्र	20-01-1958	15.92
सूर्य	19-03-1958	16.45
चन्द्रमा	23-06-1958	16.61
मंगल	29-08-1958	16.87
राहु	19-02-1959	17.05
बृहस्पति	23-07-1959	17.53
शनि	22-01-1960	17.95
बुध	04-07-1960	18.45
केतु	10-09-1960	18.90

सूर्य अन्तर		
(10:09:1960 To 23:08:1961)		
सूर्य	27-09-1960	19.09
चन्द्रमा	26-10-1960	19.13
मंगल	15-11-1960	19.21
राहु	07-01-1961	19.27
बृहस्पति	22-02-1961	19.41
शनि	18-04-1961	19.54
बुध	06-06-1961	19.69
केतु	26-06-1961	19.82
शुक्र	23-08-1961	19.88

चन्द्रमा अन्तर		
(23:08:1961 To 24:03:1963)		
चन्द्रमा	10-10-1961	20.04
मंगल	13-11-1961	20.17
राहु	07-02-1962	20.26
बृहस्पति	25-04-1962	20.50
शनि	26-07-1962	20.71
बुध	16-10-1962	20.96
केतु	19-11-1962	21.18
शुक्र	23-02-1963	21.28
सूर्य	24-03-1963	21.54

मंगल अन्तर		
(24:03:1963 To 02:05:1964)		
मंगल	16-04-1963	21.62
राहु	16-06-1963	21.68
बृहस्पति	09-08-1963	21.85
शनि	12-10-1963	22.00
बुध	08-12-1963	22.17
केतु	01-01-1964	22.33
शुक्र	09-03-1964	22.40
सूर्य	29-03-1964	22.58
चन्द्रमा	02-05-1964	22.64

राहु अन्तर		
(02:05:1964 To 09:03:1967)		
राहु	05-10-1964	22.73
बृहस्पति	21-02-1965	23.16
शनि	05-08-1965	23.54
बुध	30-12-1965	23.99
केतु	01-03-1966	24.39
शुक्र	21-08-1966	24.56
सूर्य	12-10-1966	25.03
चन्द्रमा	07-01-1967	25.17
मंगल	09-03-1967	25.41

बृहस्पति अन्तर		
(09:03:1967 To 19:09:1969)		
बृहस्पति	10-07-1967	25.58
शनि	03-12-1967	25.92
बुध	13-04-1968	26.32
केतु	06-06-1968	26.68
शुक्र	07-11-1968	26.82
सूर्य	23-12-1968	27.25
चन्द्रमा	11-03-1969	27.37
मंगल	04-05-1969	27.58
राहु	19-09-1969	27.73

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बुध दशा

(19:09:1969 – 19:09:1986)

बुध अन्तर		
(19:09:1969 To 15:02:1972)		
बुध	22-01-1970	28.11
केतु	14-03-1970	28.45
शुक्र	08-08-1970	28.59
सूर्य	20-09-1970	28.99
चन्द्रमा	03-12-1970	29.11
मंगल	23-01-1971	29.32
राहु	04-06-1971	29.46
बृहस्पति	29-09-1971	29.82
शनि	15-02-1972	30.14

केतु अन्तर		
(15:02:1972 To 12:02:1973)		
केतु	08-03-1972	30.52
शुक्र	07-05-1972	30.58
सूर्य	25-05-1972	30.74
चन्द्रमा	24-06-1972	30.79
मंगल	16-07-1972	30.87
राहु	08-09-1972	30.93
बृहस्पति	26-10-1972	31.08
शनि	23-12-1972	31.21
बुध	12-02-1973	31.37

शुक्र अन्तर		
(12:02:1973 To 13:12:1975)		
शुक्र	04-08-1973	31.51
सूर्य	24-09-1973	31.98
चन्द्रमा	19-12-1973	32.13
मंगल	18-02-1974	32.36
राहु	23-07-1974	32.53
बृहस्पति	08-12-1974	32.95
शनि	21-05-1975	33.33
बुध	14-10-1975	33.78
केतु	13-12-1975	34.18

सूर्य अन्तर		
(13:12:1975 To 19:10:1976)		
सूर्य	29-12-1975	34.34
चन्द्रमा	24-01-1976	34.39
मंगल	11-02-1976	34.46
राहु	29-03-1976	34.51
बृहस्पति	09-05-1976	34.64
शनि	27-06-1976	34.75
बुध	10-08-1976	34.88
केतु	29-08-1976	35.00
शुक्र	19-10-1976	35.05

चन्द्रमा अन्तर		
(19:10:1976 To 21:03:1978)		
चन्द्रमा	02-12-1976	35.19
मंगल	01-01-1977	35.31
राहु	19-03-1977	35.40
बृहस्पति	27-05-1977	35.61
शनि	17-08-1977	35.80
बुध	30-10-1977	36.02
केतु	29-11-1977	36.22
शुक्र	23-02-1978	36.30
सूर्य	21-03-1978	36.54

मंगल अन्तर		
(21:03:1978 To 18:03:1979)		
मंगल	11-04-1978	36.61
राहु	04-06-1978	36.67
बृहस्पति	22-07-1978	36.82
शनि	18-09-1978	36.95
बुध	08-11-1978	37.11
केतु	29-11-1978	37.25
शुक्र	28-01-1979	37.31
सूर्य	15-02-1979	37.47
चन्द्रमा	18-03-1979	37.52

राहु अन्तर		
(18:03:1979 To 04:10:1981)		
राहु	04-08-1979	37.60
बृहस्पति	06-12-1979	37.99
शनि	02-05-1980	38.33
बुध	11-09-1980	38.73
केतु	05-11-1980	39.09
शुक्र	09-04-1981	39.24
सूर्य	26-05-1981	39.66
चन्द्रमा	11-08-1981	39.79
मंगल	04-10-1981	40.00

बृहस्पति अन्तर		
(04:10:1981 To 10:01:1984)		
बृहस्पति	23-01-1982	40.15
शनि	03-06-1982	40.46
बुध	28-09-1982	40.81
केतु	15-11-1982	41.14
शुक्र	02-04-1983	41.27
सूर्य	13-05-1983	41.65
चन्द्रमा	21-07-1983	41.76
मंगल	08-09-1983	41.95
राहु	10-01-1984	42.08

शनि अन्तर		
(10:01:1984 To 19:09:1986)		
शनि	14-06-1984	42.42
बुध	31-10-1984	42.85
केतु	28-12-1984	43.23
शुक्र	10-06-1985	43.38
सूर्य	29-07-1985	43.83
चन्द्रमा	19-10-1985	43.97
मंगल	15-12-1985	44.19
राहु	11-05-1986	44.35
बृहस्पति	19-09-1986	44.75

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

केतु दशा

(19:09:1986 – 19:09:1993)

केतु अन्तर		
(19:09:1986 To 15:02:1987)		
केतु	28-09-1986	45.11
शुक्र	23-10-1986	45.14
सूर्य	30-10-1986	45.20
चन्द्रमा	12-11-1986	45.22
मंगल	20-11-1986	45.26
राहु	13-12-1986	45.28
बृहस्पति	02-01-1987	45.34
शनि	25-01-1987	45.40
बुध	15-02-1987	45.46

शुक्र अन्तर		
(15:02:1987 To 16:04:1988)		
शुक्र	27-04-1987	45.52
सूर्य	19-05-1987	45.71
चन्द्रमा	23-06-1987	45.77
मंगल	18-07-1987	45.87
राहु	20-09-1987	45.94
बृहस्पति	15-11-1987	46.11
शनि	22-01-1988	46.27
बुध	22-03-1988	46.45
केतु	16-04-1988	46.62

सूर्य अन्तर		
(16:04:1988 To 22:08:1988)		
सूर्य	23-04-1988	46.69
चन्द्रमा	03-05-1988	46.70
मंगल	11-05-1988	46.73
राहु	30-05-1988	46.75
बृहस्पति	16-06-1988	46.81
शनि	07-07-1988	46.85
बुध	25-07-1988	46.91
केतु	01-08-1988	46.96
शुक्र	22-08-1988	46.98

चन्द्रमा अन्तर		
(22:08:1988 To 24:03:1989)		
चन्द्रमा	09-09-1988	47.04
मंगल	22-09-1988	47.08
राहु	24-10-1988	47.12
बृहस्पति	21-11-1988	47.21
शनि	25-12-1988	47.28
बुध	24-01-1989	47.38
केतु	06-02-1989	47.46
शुक्र	13-03-1989	47.49
सूर्य	24-03-1989	47.59

मंगल अन्तर		
(24:03:1989 To 20:08:1989)		
मंगल	01-04-1989	47.62
राहु	24-04-1989	47.64
बृहस्पति	14-05-1989	47.70
शनि	06-06-1989	47.76
बुध	27-06-1989	47.82
केतु	06-07-1989	47.88
शुक्र	31-07-1989	47.91
सूर्य	07-08-1989	47.97
चन्द्रमा	20-08-1989	47.99

राहु अन्तर		
(20:08:1989 To 07:09:1990)		
राहु	16-10-1989	48.03
बृहस्पति	06-12-1989	48.19
शनि	05-02-1990	48.33
बुध	31-03-1990	48.49
केतु	23-04-1990	48.64
शुक्र	26-06-1990	48.70
सूर्य	15-07-1990	48.88
चन्द्रमा	16-08-1990	48.93
मंगल	07-09-1990	49.02

बृहस्पति अन्तर		
(07:09:1990 To 14:08:1991)		
बृहस्पति	22-10-1990	49.08
शनि	15-12-1990	49.20
बुध	02-02-1991	49.35
केतु	22-02-1991	49.48
शुक्र	19-04-1991	49.54
सूर्य	06-05-1991	49.69
चन्द्रमा	04-06-1991	49.74
मंगल	24-06-1991	49.82
राहु	14-08-1991	49.87

शनि अन्तर		
(14:08:1991 To 22:09:1992)		
शनि	17-10-1991	50.01
बुध	13-12-1991	50.19
केतु	06-01-1992	50.34
शुक्र	13-03-1992	50.41
सूर्य	03-04-1992	50.59
चन्द्रमा	06-05-1992	50.65
मंगल	30-05-1992	50.74
राहु	30-07-1992	50.81
बृहस्पति	22-09-1992	50.97

बुध अन्तर		
(22:09:1992 To 19:09:1993)		
बुध	12-11-1992	51.12
केतु	04-12-1992	51.26
शुक्र	02-02-1993	51.32
सूर्य	20-02-1993	51.48
चन्द्रमा	22-03-1993	51.53
मंगल	12-04-1993	51.62
राहु	06-06-1993	51.67
बृहस्पति	24-07-1993	51.82
शनि	19-09-1993	51.95

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शुक्र दशा

(19:09:1993 – 19:09:2013)

शुक्र अन्तर (19:09:1993 To 19:01:1997)		
शुक्र	10-04-1994	52.11
सूर्य	10-06-1994	52.67
चन्द्रमा	19-09-1994	52.83
मंगल	29-11-1994	53.11
राहु	31-05-1995	53.31
बृहस्पति	09-11-1995	53.81
शनि	20-05-1996	54.25
बुध	09-11-1996	54.78
केतु	19-01-1997	55.25

सूर्य अन्तर (19:01:1997 To 19:01:1998)		
सूर्य	06-02-1997	55.44
चन्द्रमा	09-03-1997	55.49
मंगल	30-03-1997	55.58
राहु	24-05-1997	55.64
बृहस्पति	11-07-1997	55.79
शनि	07-09-1997	55.92
बुध	29-10-1997	56.08
केतु	19-11-1997	56.22
शुक्र	19-01-1998	56.28

चन्द्रमा अन्तर (19:01:1998 To 19:09:1999)		
चन्द्रमा	11-03-1998	56.44
मंगल	15-04-1998	56.58
राहु	15-07-1998	56.68
बृहस्पति	04-10-1998	56.93
शनि	09-01-1999	57.15
बुध	05-04-1999	57.42
केतु	10-05-1999	57.65
शुक्र	20-08-1999	57.75
सूर्य	19-09-1999	58.03

मंगल अन्तर (19:09:1999 To 19:11:2000)		
मंगल	14-10-1999	58.11
राहु	17-12-1999	58.18
बृहस्पति	12-02-2000	58.35
शनि	19-04-2000	58.51
बुध	19-06-2000	58.69
केतु	14-07-2000	58.86
शुक्र	23-09-2000	58.93
सूर्य	14-10-2000	59.12
चन्द्रमा	19-11-2000	59.18

राहु अन्तर (19:11:2000 To 19:11:2003)		
राहु	02-05-2001	59.28
बृहस्पति	25-09-2001	59.73
शनि	18-03-2002	60.13
बुध	20-08-2002	60.60
केतु	23-10-2002	61.03
शुक्र	23-04-2003	61.20
सूर्य	17-06-2003	61.70
चन्द्रमा	16-09-2003	61.85
मंगल	19-11-2003	62.10

बृहस्पति अन्तर (19:11:2003 To 20:07:2006)		
बृहस्पति	28-03-2004	62.28
शनि	30-08-2004	62.63
बुध	15-01-2005	63.06
केतु	13-03-2005	63.43
शुक्र	22-08-2005	63.59
सूर्य	09-10-2005	64.03
चन्द्रमा	30-12-2005	64.17
मंगल	24-02-2006	64.39
राहु	20-07-2006	64.54

शनि अन्तर (20:07:2006 To 19:09:2009)		
शनि	19-01-2007	64.94
बुध	02-07-2007	65.45
केतु	08-09-2007	65.89
शुक्र	18-03-2008	66.08
सूर्य	15-05-2008	66.61
चन्द्रमा	20-08-2008	66.77
मंगल	27-10-2008	67.03
राहु	18-04-2009	67.21
बृहस्पति	19-09-2009	67.69

बुध अन्तर (19:09:2009 To 20:07:2012)		
बुध	13-02-2010	68.11
केतु	14-04-2010	68.51
शुक्र	03-10-2010	68.68
सूर्य	24-11-2010	69.15
चन्द्रमा	18-02-2011	69.29
मंगल	20-04-2011	69.53
राहु	22-09-2011	69.69
बृहस्पति	07-02-2012	70.12
शनि	20-07-2012	70.50

केतु अन्तर (20:07:2012 To 19:09:2013)		
केतु	14-08-2012	70.94
शुक्र	24-10-2012	71.01
सूर्य	14-11-2012	71.21
चन्द्रमा	20-12-2012	71.27
मंगल	14-01-2013	71.36
राहु	19-03-2013	71.43
बृहस्पति	14-05-2013	71.61
शनि	21-07-2013	71.76
बुध	19-09-2013	71.95

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

सूर्य दशा

(19:09:2013 – 19:09:2019)

सूर्य अन्तर		
(19:09:2013 To 07:01:2014)		
सूर्य	25-09-2013	72.11
चन्द्रमा	04-10-2013	72.13
मंगल	10-10-2013	72.15
राहु	27-10-2013	72.17
बृहस्पति	10-11-2013	72.21
शनि	28-11-2013	72.25
बुध	13-12-2013	72.30
केतु	19-12-2013	72.34
शुक्र	07-01-2014	72.36

चन्द्रमा अन्तर		
(07:01:2014 To 08:07:2014)		
चन्द्रमा	22-01-2014	72.41
मंगल	02-02-2014	72.45
राहु	01-03-2014	72.48
बृहस्पति	25-03-2014	72.56
शनि	23-04-2014	72.62
बुध	19-05-2014	72.70
केतु	30-05-2014	72.77
शुक्र	29-06-2014	72.80
सूर्य	08-07-2014	72.89

मंगल अन्तर		
(08:07:2014 To 13:11:2014)		
मंगल	16-07-2014	72.91
राहु	04-08-2014	72.93
बृहस्पति	21-08-2014	72.98
शनि	10-09-2014	73.03
बुध	28-09-2014	73.09
केतु	06-10-2014	73.14
शुक्र	27-10-2014	73.16
सूर्य	02-11-2014	73.21
चन्द्रमा	13-11-2014	73.23

राहु अन्तर		
(13:11:2014 To 07:10:2015)		
राहु	01-01-2015	73.26
बृहस्पति	14-02-2015	73.40
शनि	07-04-2015	73.52
बुध	24-05-2015	73.66
केतु	12-06-2015	73.79
शुक्र	05-08-2015	73.84
सूर्य	22-08-2015	73.99
चन्द्रमा	18-09-2015	74.03
मंगल	07-10-2015	74.11

बृहस्पति अन्तर		
(07:10:2015 To 26:07:2016)		
बृहस्पति	15-11-2015	74.16
शनि	01-01-2016	74.27
बुध	11-02-2016	74.39
केतु	28-02-2016	74.51
शुक्र	17-04-2016	74.55
सूर्य	02-05-2016	74.69
चन्द्रमा	26-05-2016	74.73
मंगल	12-06-2016	74.79
राहु	26-07-2016	74.84

शनि अन्तर		
(26:07:2016 To 08:07:2017)		
शनि	19-09-2016	74.96
बुध	07-11-2016	75.11
केतु	28-11-2016	75.25
शुक्र	24-01-2017	75.30
सूर्य	11-02-2017	75.46
चन्द्रमा	12-03-2017	75.51
मंगल	01-04-2017	75.59
राहु	23-05-2017	75.64
बृहस्पति	08-07-2017	75.78

बुध अन्तर		
(08:07:2017 To 14:05:2018)		
बुध	21-08-2017	75.91
केतु	08-09-2017	76.03
शुक्र	30-10-2017	76.08
सूर्य	14-11-2017	76.22
चन्द्रमा	10-12-2017	76.27
मंगल	28-12-2017	76.34
राहु	13-02-2018	76.39
बृहस्पति	26-03-2018	76.51
शनि	14-05-2018	76.63

केतु अन्तर		
(14:05:2018 To 19:09:2018)		
केतु	22-05-2018	76.76
शुक्र	12-06-2018	76.78
सूर्य	19-06-2018	76.84
चन्द्रमा	29-06-2018	76.86
मंगल	07-07-2018	76.89
राहु	26-07-2018	76.91
बृहस्पति	12-08-2018	76.96
शनि	01-09-2018	77.01
बुध	19-09-2018	77.06

शुक्र अन्तर		
(19:09:2018 To 19:09:2019)		
शुक्र	19-11-2018	77.11
सूर्य	07-12-2018	77.28
चन्द्रमा	07-01-2019	77.33
मंगल	28-01-2019	77.41
राहु	24-03-2019	77.47
बृहस्पति	11-05-2019	77.62
शनि	08-07-2019	77.75
बुध	29-08-2019	77.91
केतु	19-09-2019	78.05

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

चन्द्रमा दशा

(19:09:2019 – 19:09:2029)

चन्द्रमा अन्तर		
(19:09:2019 To 20:07:2020)		
चन्द्रमा	15-10-2019	78.11
मंगल	01-11-2019	78.18
राहु	17-12-2019	78.23
बृहस्पति	27-01-2020	78.35
शनि	15-03-2020	78.47
बुध	27-04-2020	78.60
केतु	15-05-2020	78.72
शुक्र	05-07-2020	78.76
सूर्य	20-07-2020	78.90

मंगल अन्तर		
(20:07:2020 To 18:02:2021)		
मंगल	01-08-2020	78.94
राहु	02-09-2020	78.98
बृहस्पति	01-10-2020	79.07
शनि	04-11-2020	79.14
बुध	04-12-2020	79.24
केतु	16-12-2020	79.32
शुक्र	21-01-2021	79.35
सूर्य	01-02-2021	79.45
चन्द्रमा	18-02-2021	79.48

राहु अन्तर		
(18:02:2021 To 20:08:2022)		
राहु	11-05-2021	79.53
बृहस्पति	23-07-2021	79.75
शनि	18-10-2021	79.95
बुध	04-01-2022	80.19
केतु	05-02-2022	80.40
शुक्र	07-05-2022	80.49
सूर्य	03-06-2022	80.74
चन्द्रमा	19-07-2022	80.82
मंगल	20-08-2022	80.94

बृहस्पति अन्तर		
(20:08:2022 To 19:12:2023)		
बृहस्पति	24-10-2022	81.03
शनि	09-01-2023	81.21
बुध	19-03-2023	81.42
केतु	16-04-2023	81.61
शुक्र	06-07-2023	81.68
सूर्य	31-07-2023	81.91
चन्द्रमा	09-09-2023	81.97
मंगल	07-10-2023	82.08
राहु	19-12-2023	82.16

शनि अन्तर		
(19:12:2023 To 20:07:2025)		
शनि	20-03-2024	82.36
बुध	10-06-2024	82.61
केतु	14-07-2024	82.84
शुक्र	19-10-2024	82.93
सूर्य	17-11-2024	83.19
चन्द्रमा	04-01-2025	83.27
मंगल	07-02-2025	83.40
राहु	04-05-2025	83.50
बृहस्पति	20-07-2025	83.73

बुध अन्तर		
(20:07:2025 To 19:12:2026)		
बुध	02-10-2025	83.94
केतु	01-11-2025	84.15
शुक्र	26-01-2026	84.23
सूर्य	21-02-2026	84.46
चन्द्रमा	05-04-2026	84.53
मंगल	05-05-2026	84.65
राहु	22-07-2026	84.74
बृहस्पति	29-09-2026	84.95
शनि	19-12-2026	85.14

केतु अन्तर		
(19:12:2026 To 20:07:2027)		
केतु	01-01-2027	85.36
शुक्र	05-02-2027	85.40
सूर्य	16-02-2027	85.49
चन्द्रमा	06-03-2027	85.52
मंगल	18-03-2027	85.57
राहु	19-04-2027	85.60
बृहस्पति	17-05-2027	85.69
शनि	20-06-2027	85.77
बुध	20-07-2027	85.86

शुक्र अन्तर		
(20:07:2027 To 21:03:2029)		
शुक्र	30-10-2027	85.94
सूर्य	29-11-2027	86.22
चन्द्रमा	19-01-2028	86.31
मंगल	24-02-2028	86.44
राहु	25-05-2028	86.54
बृहस्पति	14-08-2028	86.79
शनि	19-11-2028	87.01
बुध	13-02-2029	87.28
केतु	21-03-2029	87.51

सूर्य अन्तर		
(21:03:2029 To 19:09:2029)		
सूर्य	30-03-2029	87.61
चन्द्रमा	14-04-2029	87.64
मंगल	25-04-2029	87.68
राहु	22-05-2029	87.71
बृहस्पति	15-06-2029	87.78
शनि	14-07-2029	87.85
बुध	09-08-2029	87.93
केतु	20-08-2029	88.00
शुक्र	19-09-2029	88.03

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

मंगल दशा

(19:09:2029 – 19:09:2036)

मंगल अन्तर

(19:09:2029 To 15:02:2030)

मंगल	28-09-2029	88.11
राहु	20-10-2029	88.14
बृहस्पति	09-11-2029	88.20
शनि	03-12-2029	88.25
बुध	24-12-2029	88.32
केतु	02-01-2030	88.37
शुक्र	26-01-2030	88.40
सूर्य	03-02-2030	88.47
चन्द्रमा	15-02-2030	88.49

राहु अन्तर

(15:02:2030 To 05:03:2031)

राहु	14-04-2030	88.52
बृहस्पति	04-06-2030	88.68
शनि	04-08-2030	88.82
बुध	27-09-2030	88.98
केतु	19-10-2030	89.13
शुक्र	22-12-2030	89.19
सूर्य	10-01-2031	89.37
चन्द्रमा	11-02-2031	89.42
मंगल	05-03-2031	89.51

बृहस्पति अन्तर

(05:03:2031 To 09:02:2032)

बृहस्पति	20-04-2031	89.57
शनि	13-06-2031	89.69
बुध	31-07-2031	89.84
केतु	20-08-2031	89.97
शुक्र	16-10-2031	90.03
सूर्य	02-11-2031	90.18
चन्द्रमा	30-11-2031	90.23
मंगल	20-12-2031	90.31
राहु	09-02-2032	90.36

शनि अन्तर

(09:02:2032 To 21:03:2033)

शनि	14-04-2032	90.50
बुध	10-06-2032	90.68
केतु	04-07-2032	90.84
शुक्र	09-09-2032	90.90
सूर्य	30-09-2032	91.08
चन्द्रमा	02-11-2032	91.14
मंगल	26-11-2032	91.23
राहु	26-01-2033	91.30
बृहस्पति	21-03-2033	91.46

बुध अन्तर

(21:03:2033 To 18:03:2034)

बुध	11-05-2033	91.61
केतु	01-06-2033	91.75
शुक्र	31-07-2033	91.81
सूर्य	19-08-2033	91.97
चन्द्रमा	18-09-2033	92.02
मंगल	09-10-2033	92.11
राहु	02-12-2033	92.16
बृहस्पति	19-01-2034	92.31
शनि	18-03-2034	92.45

केतु अन्तर

(18:03:2034 To 14:08:2034)

केतु	26-03-2034	92.60
शुक्र	20-04-2034	92.63
सूर्य	28-04-2034	92.69
चन्द्रमा	10-05-2034	92.72
मंगल	19-05-2034	92.75
राहु	10-06-2034	92.77
बृहस्पति	30-06-2034	92.83
शनि	24-07-2034	92.89
बुध	14-08-2034	92.95

शुक्र अन्तर

(14:08:2034 To 14:10:2035)

शुक्र	24-10-2034	93.01
सूर्य	14-11-2034	93.21
चन्द्रमा	19-12-2034	93.26
मंगल	13-01-2035	93.36
राहु	18-03-2035	93.43
बृहस्पति	14-05-2035	93.60
शनि	20-07-2035	93.76
बुध	19-09-2035	93.94
केतु	14-10-2035	94.11

सूर्य अन्तर

(14:10:2035 To 18:02:2036)

सूर्य	20-10-2035	94.18
चन्द्रमा	31-10-2035	94.20
मंगल	07-11-2035	94.22
राहु	26-11-2035	94.25
बृहस्पति	13-12-2035	94.30
शनि	02-01-2036	94.34
बुध	21-01-2036	94.40
केतु	28-01-2036	94.45
शुक्र	18-02-2036	94.47

चन्द्रमा अन्तर

(18:02:2036 To 19:09:2036)

चन्द्रमा	07-03-2036	94.53
मंगल	20-03-2036	94.58
राहु	21-04-2036	94.61
बृहस्पति	19-05-2036	94.70
शनि	22-06-2036	94.78
बुध	22-07-2036	94.87
केतु	04-08-2036	94.95
शुक्र	08-09-2036	94.98
सूर्य	19-09-2036	95.08

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

राहु दशा

(19:09:2036 – 19:09:2054)

राहु अन्तर		
(19:09:2036 To 02:06:2039)		
राहु	14-02-2037	95.11
बृहस्पति	25-06-2037	95.52
शनि	28-11-2037	95.88
बुध	17-04-2038	96.30
केतु	14-06-2038	96.69
शुक्र	25-11-2038	96.84
सूर्य	13-01-2039	97.29
चन्द्रमा	05-04-2039	97.43
मंगल	02-06-2039	97.65

बृहस्पति अन्तर		
(02:06:2039 To 26:10:2041)		
बृहस्पति	27-09-2039	97.81
शनि	12-02-2040	98.13
बुध	16-06-2040	98.51
केतु	06-08-2040	98.85
शुक्र	30-12-2040	98.99
सूर्य	12-02-2041	99.39
चन्द्रमा	26-04-2041	99.51
मंगल	16-06-2041	99.71
राहु	26-10-2041	99.85

शनि अन्तर		
(26:10:2041 To 01:09:2044)		
शनि	08-04-2042	100.21
बुध	03-09-2042	100.66
केतु	02-11-2042	101.07
शुक्र	25-04-2043	101.23
सूर्य	16-06-2043	101.71
चन्द्रमा	11-09-2043	101.85
मंगल	10-11-2043	102.09
राहु	15-04-2044	102.25
बृहस्पति	01-09-2044	102.68

बुध अन्तर		
(01:09:2044 To 21:03:2047)		
बुध	11-01-2045	103.06
केतु	06-03-2045	103.42
शुक्र	08-08-2045	103.57
सूर्य	24-09-2045	104.00
चन्द्रमा	10-12-2045	104.12
मंगल	03-02-2046	104.34
राहु	22-06-2046	104.49
बृहस्पति	24-10-2046	104.87
शनि	21-03-2047	105.21

केतु अन्तर		
(21:03:2047 To 07:04:2048)		
केतु	12-04-2047	105.61
शुक्र	15-06-2047	105.67
सूर्य	04-07-2047	105.85
चन्द्रमा	05-08-2047	105.90
मंगल	27-08-2047	105.99
राहु	24-10-2047	106.05
बृहस्पति	14-12-2047	106.21
शनि	13-02-2048	106.35
बुध	07-04-2048	106.51

शुक्र अन्तर		
(07:04:2048 To 08:04:2051)		
शुक्र	07-10-2048	106.66
सूर्य	01-12-2048	107.16
चन्द्रमा	02-03-2049	107.31
मंगल	05-05-2049	107.56
राहु	17-10-2049	107.74
बृहस्पति	12-03-2050	108.19
शनि	01-09-2050	108.59
बुध	03-02-2051	109.06
केतु	08-04-2051	109.49

सूर्य अन्तर		
(08:04:2051 To 02:03:2052)		
सूर्य	24-04-2051	109.66
चन्द्रमा	22-05-2051	109.71
मंगल	10-06-2051	109.78
राहु	29-07-2051	109.83
बृहस्पति	11-09-2051	109.97
शनि	02-11-2051	110.09
बुध	19-12-2051	110.23
केतु	07-01-2052	110.36
शुक्र	02-03-2052	110.41

चन्द्रमा अन्तर		
(02:03:2052 To 01:09:2053)		
चन्द्रमा	16-04-2052	110.56
मंगल	18-05-2052	110.69
राहु	09-08-2052	110.77
बृहस्पति	21-10-2052	111.00
शनि	16-01-2053	111.20
बुध	03-04-2053	111.44
केतु	05-05-2053	111.65
शुक्र	05-08-2053	111.74
सूर्य	01-09-2053	111.99

मंगल अन्तर		
(01:09:2053 To 19:09:2054)		
मंगल	23-09-2053	112.06
राहु	20-11-2053	112.12
बृहस्पति	10-01-2054	112.28
शनि	12-03-2054	112.42
बुध	05-05-2054	112.59
केतु	27-05-2054	112.74
शुक्र	30-07-2054	112.80
सूर्य	18-08-2054	112.97
चन्द्रमा	19-09-2054	113.02

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

अष्टोत्तरी दशा

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:02:29) : गुरु : 3 व. 7 मा. 8 दि.

आपकी कुण्डली में अष्टोत्तरी दशा का कितिकादी सिद्धान्त प्रभावी हो रहा है।
राहु लग्न में स्थित नहीं है, और लग्नाधिपति से केन्द्र या त्रिकोन में स्थित है। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में अनुपस्थित है।
कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में अनुपस्थित है।

बृहस्पति (19 वर्ष)

10/08/1941 To 19/03/1945

बारहवें	वृष	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
	रोहिणी (4)	7 , 10
विशेष	नक्षत्र	भावपति

बृहस्पति	-------	-------
राहु	-------	-------
शुक्र	-------	-------
सूर्य	-------	-------
चन्द्रमा	-------	-------
मंगल	-------	-------
बुध	15-06-1943	00.00
शनि	19-03-1945	01.85

राहु (12 वर्ष)

19/03/1945 To 19/03/1957

चौथे	कन्या	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
वक्री	उत्तरफाल्गु (2)	
विशेष	नक्षत्र	भावपति

राहु	19-07-1946	03.61
शुक्र	17-11-1948	04.94
सूर्य	19-07-1949	07.27
चन्द्रमा	19-03-1951	07.94
मंगल	07-02-1952	09.61
बुध	28-12-1953	10.50
शनि	06-02-1955	12.38
बृहस्पति	19-03-1957	13.50

शुक्र (21 वर्ष)

19/03/1957 To 19/03/1978

तीसरे	सिहं	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
स्वनक्षत्र	पुर्वफाल्गु (4)	12 , 5
विशेष	नक्षत्र	भावपति

शुक्र	18-04-1961	15.61
सूर्य	18-06-1962	19.69
चन्द्रमा	19-05-1965	20.86
मंगल	08-12-1966	23.77
बुध	29-03-1970	25.33
शनि	08-03-1972	28.63
बृहस्पति	17-11-1975	30.58
राहु	19-03-1978	34.27

सूर्य (6 वर्ष)

19/03/1978 To 18/03/1984

दूसरे	कर्क	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	अश्लेषा (3)	3
विशेष	नक्षत्र	भावपति

सूर्य	19-07-1978	36.61
चन्द्रमा	19-05-1979	36.94
मंगल	28-10-1979	37.77
बुध	08-10-1980	38.22
शनि	29-04-1981	39.16
बृहस्पति	19-05-1982	39.72
राहु	17-01-1983	40.77
शुक्र	18-03-1984	41.44

चन्द्रमा (15 वर्ष)

18/03/1984 To 19/03/1999

नौवें	कुम्भ	सम
भाव	राशि	संबंन्ध
	पूर्वाभाद (2)	2
विशेष	नक्षत्र	भावपति

चन्द्रमा	18-04-1986	42.61
मंगल	29-05-1987	44.69
बुध	08-10-1989	45.80
शनि	27-02-1991	48.16
बृहस्पति	18-10-1993	49.55
राहु	18-06-1995	52.19
शुक्र	19-05-1998	53.86
सूर्य	19-03-1999	56.77

मंगल (8 वर्ष)

19/03/1999 To 19/03/2007

दसवें	मीन	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	रेवती (3)	11 , 6
विशेष	नक्षत्र	भावपति

मंगल	21-10-1999	57.61
बुध	24-01-2001	58.20
शनि	21-10-2001	59.46
बृहस्पति	19-03-2003	60.20
राहु	07-02-2004	61.61
शुक्र	28-08-2005	62.50
सूर्य	06-02-2006	64.05
चन्द्रमा	19-03-2007	64.50

बुध (17 वर्ष)

19/03/2007 To 18/03/2024

दूसरे	कर्क	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
अस्त	पुष्य (4)	1 , 4
विशेष	नक्षत्र	भावपति

बुध	21-11-2009	65.61
शनि	18-06-2011	68.28
बृहस्पति	15-06-2014	69.86
राहु	05-05-2016	72.85
शुक्र	25-08-2019	74.74
सूर्य	04-08-2020	78.04
चन्द्रमा	14-12-2022	78.99
मंगल	18-03-2024	81.35

शनि (10 वर्ष)

18/03/2024 To 19/03/2034

बारहवें	वृष	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	कृतिका (3)	8 , 9
विशेष	नक्षत्र	भावपति

शनि	20-02-2025	82.61
बृहस्पति	24-11-2026	83.53
राहु	04-01-2028	85.29
शुक्र	14-12-2029	86.40
सूर्य	05-07-2030	88.35
चन्द्रमा	24-11-2031	88.90
मंगल	21-08-2032	90.29
बुध	19-03-2034	91.03

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बृहस्पति दशा

(10:08:1941 – 19:03:1945)

बृहस्पति अन्तर

बृहस्पति	-------	--
राहु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
बुध	-------	--
शनि	-------	--

राहु अन्तर

राहु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
बुध	-------	--
शनि	-------	--
बृहस्पति	-------	--

शुक्र अन्तर

शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
बुध	-------	--
शनि	-------	--
बृहस्पति	-------	--
राहु	-------	--

सूर्य अन्तर

सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
बुध	-------	--
शनि	-------	--
बृहस्पति	-------	--
राहु	-------	--
शुक्र	-------	--

चन्द्रमा अन्तर

चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
बुध	-------	--
शनि	-------	--
बृहस्पति	-------	--
राहु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--

मंगल अन्तर

मंगल	-------	--
बुध	-------	--
शनि	-------	--
बृहस्पति	-------	--
राहु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--

बुध अन्तर

(10:08:1941 To 15:06:1943)

बुध	-------	--
शनि	-------	--
बृहस्पति	26-09-1941	00.00
राहु	25-01-1942	00.13
शुक्र	26-08-1942	00.46
सूर्य	25-10-1942	01.04
चन्द्रमा	26-03-1943	01.21
मंगल	15-06-1943	01.63

शनि अन्तर

(15:06:1943 To 19:03:1945)

शनि	13-08-1943	01.85
बृहस्पति	04-12-1943	02.01
राहु	14-02-1944	02.32
शुक्र	18-06-1944	02.52
सूर्य	24-07-1944	02.86
चन्द्रमा	21-10-1944	02.95
मंगल	08-12-1944	03.20
बुध	19-03-1945	03.33

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

राहु दशा

(19:03:1945 – 19:03:1957)

राहु अन्तर

(19:03:1945 To 19:07:1946)

राहु	12-05-1945	03.61
शुक्र	15-08-1945	03.75
सूर्य	11-09-1945	04.01
चन्द्रमा	17-11-1945	04.09
मंगल	23-12-1945	04.27
बुध	10-03-1946	04.37
शनि	24-04-1946	04.58
बृहस्पति	19-07-1946	04.71

शुक्र अन्तर

(19:07:1946 To 17:11:1948)

शुक्र	31-12-1946	04.94
सूर्य	17-02-1947	05.39
चन्द्रमा	15-06-1947	05.52
मंगल	17-08-1947	05.85
बुध	29-12-1947	06.02
शनि	17-03-1948	06.39
बृहस्पति	14-08-1948	06.60
राहु	17-11-1948	07.01

सूर्य अन्तर

(17:11:1948 To 19:07:1949)

सूर्य	01-12-1948	07.27
चन्द्रमा	04-01-1949	07.31
मंगल	22-01-1949	07.40
बुध	01-03-1949	07.45
शनि	23-03-1949	07.56
बृहस्पति	05-05-1949	07.62
राहु	01-06-1949	07.74
शुक्र	19-07-1949	07.81

चन्द्रमा अन्तर

(19:07:1949 To 19:03:1951)

चन्द्रमा	11-10-1949	07.94
मंगल	25-11-1949	08.17
बुध	01-03-1950	08.29
शनि	26-04-1950	08.56
बृहस्पति	11-08-1950	08.71
राहु	18-10-1950	09.00
शुक्र	13-02-1951	09.19
सूर्य	19-03-1951	09.51

मंगल अन्तर

(19:03:1951 To 07:02:1952)

मंगल	12-04-1951	09.61
बुध	02-06-1951	09.67
शनि	02-07-1951	09.81
बृहस्पति	28-08-1951	09.89
राहु	03-10-1951	10.05
शुक्र	05-12-1951	10.15
सूर्य	23-12-1951	10.32
चन्द्रमा	07-02-1952	10.37

बुध अन्तर

(07:02:1952 To 28:12:1953)

बुध	25-05-1952	10.50
शनि	28-07-1952	10.79
बृहस्पति	27-11-1952	10.97
राहु	12-02-1953	11.30
शुक्र	26-06-1953	11.51
सूर्य	03-08-1953	11.88
चन्द्रमा	07-11-1953	11.98
मंगल	28-12-1953	12.24

शनि अन्तर

(28:12:1953 To 06:02:1955)

शनि	03-02-1954	12.38
बृहस्पति	16-04-1954	12.49
राहु	31-05-1954	12.68
शुक्र	18-08-1954	12.81
सूर्य	09-09-1954	13.02
चन्द्रमा	05-11-1954	13.08
मंगल	05-12-1954	13.24
बुध	06-02-1955	13.32

बृहस्पति अन्तर

(06:02:1955 To 19:03:1957)

बृहस्पति	22-06-1955	13.50
राहु	16-09-1955	13.87
शुक्र	13-02-1956	14.10
सूर्य	26-03-1956	14.51
चन्द्रमा	12-07-1956	14.63
मंगल	07-09-1956	14.92
बुध	07-01-1957	15.08
शनि	19-03-1957	15.41

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शुक्र दशा

(19:03:1957 – 19:03:1978)

शुक्र अन्तर		
(19:03:1957 To 18:04:1961)		
शुक्र	03-01-1958	15.61
सूर्य	27-03-1958	16.40
चन्द्रमा	20-10-1958	16.63
मंगल	07-02-1959	17.19
बुध	30-09-1959	17.50
शनि	15-02-1960	18.14
बृहस्पति	04-11-1960	18.52
राहु	18-04-1961	19.24

सूर्य अन्तर		
(18:04:1961 To 18:06:1962)		
सूर्य	12-05-1961	19.69
चन्द्रमा	10-07-1961	19.75
मंगल	11-08-1961	19.92
बुध	17-10-1961	20.00
शनि	25-11-1961	20.19
बृहस्पति	08-02-1962	20.29
राहु	27-03-1962	20.50
शुक्र	18-06-1962	20.63

चन्द्रमा अन्तर		
(18:06:1962 To 19:05:1965)		
चन्द्रमा	13-11-1962	20.86
मंगल	31-01-1963	21.26
बुध	18-07-1963	21.48
शनि	24-10-1963	21.94
बृहस्पति	29-04-1964	22.21
राहु	25-08-1964	22.72
शुक्र	21-03-1965	23.04
सूर्य	19-05-1965	23.61

मंगल अन्तर		
(19:05:1965 To 08:12:1966)		
मंगल	30-06-1965	23.77
बुध	27-09-1965	23.89
शनि	19-11-1965	24.13
बृहस्पति	27-02-1966	24.28
राहु	01-05-1966	24.55
शुक्र	19-08-1966	24.72
सूर्य	20-09-1966	25.03
चन्द्रमा	08-12-1966	25.11

बुध अन्तर		
(08:12:1966 To 29:03:1970)		
बुध	16-06-1967	25.33
शनि	05-10-1967	25.85
बृहस्पति	05-05-1968	26.16
राहु	16-09-1968	26.74
शुक्र	09-05-1969	27.10
सूर्य	15-07-1969	27.75
चन्द्रमा	30-12-1969	27.93
मंगल	29-03-1970	28.39

शनि अन्तर		
(29:03:1970 To 08:03:1972)		
शनि	03-06-1970	28.63
बृहस्पति	06-10-1970	28.81
राहु	24-12-1970	29.16
शुक्र	11-05-1971	29.37
सूर्य	19-06-1971	29.75
चन्द्रमा	26-09-1971	29.86
मंगल	17-11-1971	30.13
बुध	08-03-1972	30.27

बृहस्पति अन्तर		
(08:03:1972 To 17:11:1975)		
बृहस्पति	01-11-1972	30.58
राहु	31-03-1973	31.23
शुक्र	18-12-1973	31.64
सूर्य	03-03-1974	32.36
चन्द्रमा	06-09-1974	32.56
मंगल	15-12-1974	33.08
बुध	15-07-1975	33.35
शनि	17-11-1975	33.93

राहु अन्तर		
(17:11:1975 To 19:03:1978)		
राहु	20-02-1976	34.27
शुक्र	04-08-1976	34.53
सूर्य	21-09-1976	34.99
चन्द्रमा	17-01-1977	35.12
मंगल	21-03-1977	35.44
बुध	02-08-1977	35.61
शनि	20-10-1977	35.98
बृहस्पति	19-03-1978	36.20

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

सूर्य दशा

(19:03:1978 – 18:03:1984)

सूर्य अन्तर

(19:03:1978 To 19:07:1978)

सूर्य	26-03-1978	36.61
चन्द्रमा	12-04-1978	36.63
मंगल	21-04-1978	36.67
बुध	10-05-1978	36.70
शनि	21-05-1978	36.75
बृहस्पति	11-06-1978	36.78
राहु	25-06-1978	36.84
शुक्र	19-07-1978	36.88

चन्द्रमा अन्तर

(19:07:1978 To 19:05:1979)

चन्द्रमा	30-08-1978	36.94
मंगल	21-09-1978	37.06
बुध	08-11-1978	37.12
शनि	06-12-1978	37.25
बृहस्पति	29-01-1979	37.33
राहु	04-03-1979	37.47
शुक्र	02-05-1979	37.56
सूर्य	19-05-1979	37.73

मंगल अन्तर

(19:05:1979 To 28:10:1979)

मंगल	31-05-1979	37.77
बुध	25-06-1979	37.81
शनि	10-07-1979	37.88
बृहस्पति	08-08-1979	37.92
राहु	26-08-1979	38.00
शुक्र	26-09-1979	38.04
सूर्य	06-10-1979	38.13
चन्द्रमा	28-10-1979	38.16

बुध अन्तर

(28:10:1979 To 08:10:1980)

बुध	21-12-1979	38.22
शनि	22-01-1980	38.37
बृहस्पति	23-03-1980	38.45
राहु	30-04-1980	38.62
शुक्र	07-07-1980	38.72
सूर्य	26-07-1980	38.91
चन्द्रमा	12-09-1980	38.96
मंगल	08-10-1980	39.09

शनि अन्तर

(08:10:1980 To 29:04:1981)

शनि	26-10-1980	39.16
बृहस्पति	01-12-1980	39.21
राहु	24-12-1980	39.31
शुक्र	01-02-1981	39.37
सूर्य	12-02-1981	39.48
चन्द्रमा	13-03-1981	39.51
मंगल	28-03-1981	39.59
बुध	29-04-1981	39.63

बृहस्पति अन्तर

(29:04:1981 To 19:05:1982)

बृहस्पति	05-07-1981	39.72
राहु	17-08-1981	39.90
शुक्र	31-10-1981	40.02
सूर्य	21-11-1981	40.23
चन्द्रमा	14-01-1982	40.28
मंगल	11-02-1982	40.43
बुध	13-04-1982	40.51
शनि	19-05-1982	40.68

राहु अन्तर

(19:05:1982 To 17:01:1983)

राहु	15-06-1982	40.77
शुक्र	01-08-1982	40.85
सूर्य	15-08-1982	40.98
चन्द्रमा	17-09-1982	41.01
मंगल	06-10-1982	41.11
बुध	13-11-1982	41.16
शनि	05-12-1982	41.26
बृहस्पति	17-01-1983	41.32

शुक्र अन्तर

(17:01:1983 To 18:03:1984)

शुक्र	10-04-1983	41.44
सूर्य	04-05-1983	41.67
चन्द्रमा	02-07-1983	41.73
मंगल	02-08-1983	41.89
बुध	08-10-1983	41.98
शनि	17-11-1983	42.16
बृहस्पति	31-01-1984	42.27
राहु	18-03-1984	42.48

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

चन्द्रमा दशा

(18:03:1984 – 19:03:1999)

चन्द्रमा अन्तर		
(18:03:1984 To 18:04:1986)		
चन्द्रमा	02-07-1984	42.61
मंगल	28-08-1984	42.90
बुध	26-12-1984	43.05
शनि	06-03-1985	43.38
बृहस्पति	18-07-1985	43.57
राहु	10-10-1985	43.94
शुक्र	07-03-1986	44.17
सूर्य	18-04-1986	44.57

मंगल अन्तर		
(18:04:1986 To 29:05:1987)		
मंगल	18-05-1986	44.69
बुध	21-07-1986	44.77
शनि	28-08-1986	44.95
बृहस्पति	07-11-1986	45.05
राहु	22-12-1986	45.25
शुक्र	11-03-1987	45.37
सूर्य	03-04-1987	45.58
चन्द्रमा	29-05-1987	45.65

बुध अन्तर		
(29:05:1987 To 08:10:1989)		
बुध	12-10-1987	45.80
शनि	30-12-1987	46.17
बृहस्पति	30-05-1988	46.39
राहु	03-09-1988	46.81
शुक्र	18-02-1989	47.07
सूर्य	07-04-1989	47.53
चन्द्रमा	05-08-1989	47.66
मंगल	08-10-1989	47.99

शनि अन्तर		
(08:10:1989 To 27:02:1991)		
शनि	24-11-1989	48.16
बृहस्पति	21-02-1990	48.29
राहु	18-04-1990	48.54
शुक्र	26-07-1990	48.69
सूर्य	23-08-1990	48.96
चन्द्रमा	01-11-1990	49.04
मंगल	09-12-1990	49.23
बुध	27-02-1991	49.33

बृहस्पति अन्तर		
(27:02:1991 To 18:10:1993)		
बृहस्पति	15-08-1991	49.55
राहु	30-11-1991	50.02
शुक्र	05-06-1992	50.31
सूर्य	29-07-1992	50.82
चन्द्रमा	10-12-1992	50.97
मंगल	19-02-1993	51.33
बुध	21-07-1993	51.53
शनि	18-10-1993	51.95

राहु अन्तर		
(18:10:1993 To 18:06:1995)		
राहु	24-12-1993	52.19
शुक्र	22-04-1994	52.38
सूर्य	26-05-1994	52.70
चन्द्रमा	18-08-1994	52.79
मंगल	02-10-1994	53.02
बुध	06-01-1995	53.15
शनि	03-03-1995	53.41
बृहस्पति	18-06-1995	53.56

शुक्र अन्तर		
(18:06:1995 To 19:05:1998)		
शुक्र	11-01-1996	53.86
सूर्य	11-03-1996	54.42
चन्द्रमा	06-08-1996	54.59
मंगल	24-10-1996	54.99
बुध	10-04-1997	55.21
शनि	17-07-1997	55.67
बृहस्पति	21-01-1998	55.94
राहु	19-05-1998	56.45

सूर्य अन्तर		
(19:05:1998 To 19:03:1999)		
सूर्य	05-06-1998	56.77
चन्द्रमा	17-07-1998	56.82
मंगल	08-08-1998	56.94
बुध	25-09-1998	57.00
शनि	24-10-1998	57.13
बृहस्पति	16-12-1998	57.21
राहु	19-01-1999	57.35
शुक्र	19-03-1999	57.44

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

मंगल दशा

(19:03:1999 – 19:03:2007)

मंगल अन्तर		
(19:03:1999 To 21:10:1999)		
मंगल	04-04-1999	57.61
बुध	08-05-1999	57.65
शनि	28-05-1999	57.74
बृहस्पति	05-07-1999	57.80
राहु	29-07-1999	57.90
शुक्र	09-09-1999	57.97
सूर्य	21-09-1999	58.08
चन्द्रमा	21-10-1999	58.12

बुध अन्तर		
(21:10:1999 To 24:01:2001)		
बुध	02-01-2000	58.20
शनि	13-02-2000	58.40
बृहस्पति	04-05-2000	58.51
राहु	25-06-2000	58.74
शुक्र	22-09-2000	58.88
सूर्य	18-10-2000	59.12
चन्द्रमा	21-12-2000	59.19
मंगल	24-01-2001	59.37

शनि अन्तर		
(24:01:2001 To 21:10:2001)		
शनि	18-02-2001	59.46
बृहस्पति	07-04-2001	59.53
राहु	07-05-2001	59.66
शुक्र	28-06-2001	59.74
सूर्य	13-07-2001	59.88
चन्द्रमा	20-08-2001	59.92
मंगल	09-09-2001	60.03
बुध	21-10-2001	60.08

बृहस्पति अन्तर		
(21:10:2001 To 19:03:2003)		
बृहस्पति	20-01-2002	60.20
राहु	18-03-2002	60.45
शुक्र	26-06-2002	60.60
सूर्य	24-07-2002	60.88
चन्द्रमा	04-10-2002	60.95
मंगल	11-11-2002	61.15
बुध	30-01-2003	61.25
शनि	19-03-2003	61.48

राहु अन्तर		
(19:03:2003 To 07:02:2004)		
राहु	24-04-2003	61.61
शुक्र	26-06-2003	61.71
सूर्य	14-07-2003	61.88
चन्द्रमा	28-08-2003	61.93
मंगल	21-09-2003	62.05
बुध	11-11-2003	62.12
शनि	11-12-2003	62.26
बृहस्पति	07-02-2004	62.34

शुक्र अन्तर		
(07:02:2004 To 28:08:2005)		
शुक्र	27-05-2004	62.50
सूर्य	28-06-2004	62.80
चन्द्रमा	15-09-2004	62.88
मंगल	27-10-2004	63.10
बुध	25-01-2005	63.22
शनि	18-03-2005	63.46
बृहस्पति	26-06-2005	63.60
राहु	28-08-2005	63.88

सूर्य अन्तर		
(28:08:2005 To 06:02:2006)		
सूर्य	06-09-2005	64.05
चन्द्रमा	29-09-2005	64.08
मंगल	11-10-2005	64.14
बुध	05-11-2005	64.17
शनि	20-11-2005	64.24
बृहस्पति	19-12-2005	64.28
राहु	06-01-2006	64.36
शुक्र	06-02-2006	64.41

चन्द्रमा अन्तर		
(06:02:2006 To 19:03:2007)		
चन्द्रमा	04-04-2006	64.50
मंगल	04-05-2006	64.65
बुध	07-07-2006	64.73
शनि	13-08-2006	64.91
बृहस्पति	24-10-2006	65.01
राहु	08-12-2006	65.21
शुक्र	24-02-2007	65.33
सूर्य	19-03-2007	65.54

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बुध दशा

(19:03:2007 – 18:03:2024)

बुध अन्तर		
(19:03:2007 To 21:11:2009)		
बुध	20-08-2007	65.61
शनि	18-11-2007	66.03
बृहस्पति	08-05-2008	66.28
राहु	25-08-2008	66.75
शुक्र	03-03-2009	67.04
सूर्य	27-04-2009	67.56
चन्द्रमा	09-09-2009	67.71
मंगल	21-11-2009	68.08

शनि अन्तर		
(21:11:2009 To 18:06:2011)		
शनि	13-01-2010	68.28
बृहस्पति	24-04-2010	68.43
राहु	27-06-2010	68.71
शुक्र	17-10-2010	68.88
सूर्य	17-11-2010	69.19
चन्द्रमा	05-02-2011	69.27
मंगल	20-03-2011	69.49
बुध	18-06-2011	69.61

बृहस्पति अन्तर		
(18:06:2011 To 15:06:2014)		
बृहस्पति	27-12-2011	69.86
राहु	27-04-2012	70.38
शुक्र	26-11-2012	70.71
सूर्य	25-01-2013	71.30
चन्द्रमा	26-06-2013	71.46
मंगल	15-09-2013	71.88
बुध	06-03-2014	72.10
शनि	15-06-2014	72.57

राहु अन्तर		
(15:06:2014 To 05:05:2016)		
राहु	30-08-2014	72.85
शुक्र	12-01-2015	73.06
सूर्य	19-02-2015	73.42
चन्द्रमा	26-05-2015	73.53
मंगल	16-07-2015	73.79
बुध	01-11-2015	73.93
शनि	04-01-2016	74.23
बृहस्पति	05-05-2016	74.40

शुक्र अन्तर		
(05:05:2016 To 25:08:2019)		
शुक्र	26-12-2016	74.74
सूर्य	03-03-2017	75.38
चन्द्रमा	18-08-2017	75.56
मंगल	15-11-2017	76.02
बुध	24-05-2018	76.27
शनि	13-09-2018	76.79
बृहस्पति	13-04-2019	77.09
राहु	25-08-2019	77.67

सूर्य अन्तर		
(25:08:2019 To 04:08:2020)		
सूर्य	13-09-2019	78.04
चन्द्रमा	31-10-2019	78.09
मंगल	25-11-2019	78.23
बुध	19-01-2020	78.30
शनि	20-02-2020	78.44
बृहस्पति	21-04-2020	78.53
राहु	29-05-2020	78.70
शुक्र	04-08-2020	78.80

चन्द्रमा अन्तर		
(04:08:2020 To 14:12:2022)		
चन्द्रमा	02-12-2020	78.99
मंगल	04-02-2021	79.31
बुध	20-06-2021	79.49
शनि	08-09-2021	79.86
बृहस्पति	06-02-2022	80.08
राहु	13-05-2022	80.49
शुक्र	27-10-2022	80.76
सूर्य	14-12-2022	81.22

मंगल अन्तर		
(14:12:2022 To 18:03:2024)		
मंगल	17-01-2023	81.35
बुध	31-03-2023	81.44
शनि	12-05-2023	81.64
बृहस्पति	01-08-2023	81.76
राहु	21-09-2023	81.98
शुक्र	20-12-2023	82.12
सूर्य	14-01-2024	82.36
चन्द्रमा	18-03-2024	82.43

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शनि दशा

(18:03:2024 – 19:03:2034)

शनि अन्तर

(18:03:2024 To 20:02:2025)

शनि	19-04-2024	82.61
बृहस्पति	17-06-2024	82.69
राहु	25-07-2024	82.86
शुक्र	29-09-2024	82.96
सूर्य	18-10-2024	83.14
चन्द्रमा	04-12-2024	83.19
मंगल	29-12-2024	83.32
बुध	20-02-2025	83.39

बृहस्पति अन्तर

(20:02:2025 To 24:11:2026)

बृहस्पति	13-06-2025	83.53
राहु	23-08-2025	83.84
शुक्र	26-12-2025	84.04
सूर्य	31-01-2026	84.38
चन्द्रमा	30-04-2026	84.48
मंगल	17-06-2026	84.72
बुध	26-09-2026	84.85
शनि	24-11-2026	85.13

राहु अन्तर

(24:11:2026 To 04:01:2028)

राहु	08-01-2027	85.29
शुक्र	28-03-2027	85.42
सूर्य	20-04-2027	85.63
चन्द्रमा	15-06-2027	85.69
मंगल	15-07-2027	85.85
बुध	17-09-2027	85.93
शनि	24-10-2027	86.10
बृहस्पति	04-01-2028	86.21

शुक्र अन्तर

(04:01:2028 To 14:12:2029)

शुक्र	21-05-2028	86.40
सूर्य	30-06-2028	86.78
चन्द्रमा	06-10-2028	86.89
मंगल	28-11-2028	87.16
बुध	20-03-2029	87.30
शनि	25-05-2029	87.61
बृहस्पति	26-09-2029	87.79
राहु	14-12-2029	88.13

सूर्य अन्तर

(14:12:2029 To 05:07:2030)

सूर्य	26-12-2029	88.35
चन्द्रमा	23-01-2030	88.38
मंगल	07-02-2030	88.46
बुध	11-03-2030	88.50
शनि	29-03-2030	88.58
बृहस्पति	04-05-2030	88.64
राहु	27-05-2030	88.73
शुक्र	05-07-2030	88.79

चन्द्रमा अन्तर

(05:07:2030 To 24:11:2031)

चन्द्रमा	14-09-2030	88.90
मंगल	21-10-2030	89.10
बुध	09-01-2031	89.20
शनि	25-02-2031	89.42
बृहस्पति	25-05-2031	89.55
राहु	20-07-2031	89.79
शुक्र	27-10-2031	89.94
सूर्य	24-11-2031	90.21

मंगल अन्तर

(24:11:2031 To 21:08:2032)

मंगल	14-12-2031	90.29
बुध	26-01-2032	90.35
शनि	20-02-2032	90.46
बृहस्पति	08-04-2032	90.53
राहु	08-05-2032	90.66
शुक्र	29-06-2032	90.74
सूर्य	14-07-2032	90.89
चन्द्रमा	21-08-2032	90.93

बुध अन्तर

(21:08:2032 To 19:03:2034)

बुध	20-11-2032	91.03
शनि	12-01-2033	91.28
बृहस्पति	23-04-2033	91.43
राहु	26-06-2033	91.70
शुक्र	16-10-2033	91.88
सूर्य	17-11-2033	92.18
चन्द्रमा	04-02-2034	92.27
मंगल	19-03-2034	92.49

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

योगिनी दशा – 1

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:02:29) : भ्रमरी (मंगल) : 2 व. 3 मा. 10 दि.

भ्रमरी (मंगल) (पूर्वाभाद्र) दशा	
10:08:1941 To 19:11:1943	
भ्रमरी (मंगल)	19:11:1939
भद्रिका (बुध)	30:04:1940
उल्का (शनि)	19:11:1940
सिद्धा (शुक्र)	20:07:1941
संकटा (राहु)	30:04:1942
मंगला (चन्द्रमा)	21:03:1943
पिंगला (सुर्य)	30:04:1943
धन्या (बृहस्पति)	20:07:1943

भद्रिका (बुध) (उत्तरभाद्र) दशा	
19:11:1943 To 19:11:1948	
भद्रिका (बुध)	19:11:1943
उल्का (शनि)	30:07:1944
सिद्धा (शुक्र)	31:05:1945
संकटा (राहु)	21:05:1946
मंगला (चन्द्रमा)	30:06:1947
पिंगला (सुर्य)	20:08:1947
धन्या (बृहस्पति)	29:11:1947
भ्रमरी (मंगल)	30:04:1948

उल्का (शनि) (रेवाति) दशा	
19:11:1948 To 19:11:1954	
उल्का (शनि)	19:11:1948
सिद्धा (शुक्र)	19:11:1949
संकटा (राहु)	19:01:1951
मंगला (चन्द्रमा)	20:05:1952
पिंगला (सुर्य)	20:07:1952
धन्या (बृहस्पति)	19:11:1952
भ्रमरी (मंगल)	21:05:1953
भद्रिका (बुध)	19:01:1954

सिद्धा (शुक्र) (अश्विनी) दशा	
19:11:1954 To 19:11:1961	
सिद्धा (शुक्र)	19:11:1954
संकटा (राहु)	30:03:1956
मंगला (चन्द्रमा)	20:10:1957
पिंगला (सुर्य)	30:12:1957
धन्या (बृहस्पति)	21:05:1958
भ्रमरी (मंगल)	19:12:1958
भद्रिका (बुध)	29:09:1959
उल्का (शनि)	19:09:1960

संकटा (राहु) (भरणी) दशा	
19:11:1961 To 19:11:1969	
संकटा (राहु)	19:11:1961
मंगला (चन्द्रमा)	30:08:1963
पिंगला (सुर्य)	19:11:1963
धन्या (बृहस्पति)	30:04:1964
भ्रमरी (मंगल)	30:12:1964
भद्रिका (बुध)	19:11:1965
उल्का (शनि)	30:12:1966
सिद्धा (शुक्र)	30:04:1968

मंगला (चन्द्रमा) (कृतिका) दशा	
19:11:1969 To 19:11:1970	
मंगला (चन्द्रमा)	19:11:1969
पिंगला (सुर्य)	29:11:1969
धन्या (बृहस्पति)	19:12:1969
भ्रमरी (मंगल)	19:01:1970
भद्रिका (बुध)	28:02:1970
उल्का (शनि)	20:04:1970
सिद्धा (शुक्र)	20:06:1970
संकटा (राहु)	30:08:1970

पिंगला (सुर्य) (रोहिणी) दशा	
19:11:1970 To 19:11:1972	
पिंगला (सुर्य)	19:11:1970
धन्या (बृहस्पति)	30:12:1970
भ्रमरी (मंगल)	28:02:1971
भद्रिका (बुध)	21:05:1971
उल्का (शनि)	30:08:1971
सिद्धा (शुक्र)	30:12:1971
संकटा (राहु)	20:05:1972
मंगला (चन्द्रमा)	30:10:1972

धन्या (बृहस्पति) (मृगशिरा) दशा	
19:11:1972 To 19:11:1975	
धन्या (बृहस्पति)	19:11:1972
भ्रमरी (मंगल)	18:02:1973
भद्रिका (बुध)	20:06:1973
उल्का (शनि)	19:11:1973
सिद्धा (शुक्र)	21:05:1974
संकटा (राहु)	19:12:1974
मंगला (चन्द्रमा)	20:08:1975
पिंगला (सुर्य)	19:09:1975

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

योगिनी दशा – 2

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:02:29) : भ्रमरी (मंगल) : 2 व. 3 मा. 10 दि.

भ्रमरी (मंगल) (अद्रिा) दशा	
19:11:1975 To 19:11:1979	
भ्रमरी (मंगल)	19:11:1975
भद्रिका (बुध)	30:04:1976
उल्का (शनि)	19:11:1976
सिद्धा (शुक्र)	20:07:1977
संकटा (राहु)	30:04:1978
मंगला (चन्द्रमा)	21:03:1979
पिंगला (सुर्य)	30:04:1979
धन्या (बृहस्पति)	20:07:1979

भद्रिका (बुध) (पुनर्वसु) दशा	
19:11:1979 To 19:11:1984	
भद्रिका (बुध)	19:11:1979
उल्का (शनि)	30:07:1980
सिद्धा (शुक्र)	31:05:1981
संकटा (राहु)	21:05:1982
मंगला (चन्द्रमा)	30:06:1983
पिंगला (सुर्य)	20:08:1983
धन्या (बृहस्पति)	29:11:1983
भ्रमरी (मंगल)	30:04:1984

उल्का (शनि) (पु) दशा	
19:11:1984 To 19:11:1990	
उल्का (शनि)	19:11:1984
सिद्धा (शुक्र)	19:11:1985
संकटा (राहु)	19:01:1987
मंगला (चन्द्रमा)	20:05:1988
पिंगला (सुर्य)	20:07:1988
धन्या (बृहस्पति)	19:11:1988
भ्रमरी (मंगल)	21:05:1989
भद्रिका (बुध)	19:01:1990

सिद्धा (शुक्र) (अश्लेा) दशा	
19:11:1990 To 19:11:1997	
सिद्धा (शुक्र)	19:11:1990
संकटा (राहु)	30:03:1992
मंगला (चन्द्रमा)	20:10:1993
पिंगला (सुर्य)	30:12:1993
धन्या (बृहस्पति)	21:05:1994
भ्रमरी (मंगल)	19:12:1994
भद्रिका (बुध)	29:09:1995
उल्का (शनि)	19:09:1996

संकटा (राहु) (मघा) दशा	
19:11:1997 To 19:11:2005	
संकटा (राहु)	19:11:1997
मंगला (चन्द्रमा)	30:08:1999
पिंगला (सुर्य)	19:11:1999
धन्या (बृहस्पति)	30:04:2000
भ्रमरी (मंगल)	30:12:2000
भद्रिका (बुध)	19:11:2001
उल्का (शनि)	30:12:2002
सिद्धा (शुक्र)	30:04:2004

मंगला (चन्द्रमा) (पुर्वफाल्गुनी) दशा	
19:11:2005 To 19:11:2006	
मंगला (चन्द्रमा)	19:11:2005
पिंगला (सुर्य)	29:11:2005
धन्या (बृहस्पति)	19:12:2005
भ्रमरी (मंगल)	19:01:2006
भद्रिका (बुध)	28:02:2006
उल्का (शनि)	20:04:2006
सिद्धा (शुक्र)	20:06:2006
संकटा (राहु)	30:08:2006

पिंगला (सुर्य) (उत्तरफाल्गुनी) दशा	
19:11:2006 To 19:11:2008	
पिंगला (सुर्य)	19:11:2006
धन्या (बृहस्पति)	30:12:2006
भ्रमरी (मंगल)	28:02:2007
भद्रिका (बुध)	21:05:2007
उल्का (शनि)	30:08:2007
सिद्धा (शुक्र)	30:12:2007
संकटा (राहु)	20:05:2008
मंगला (चन्द्रमा)	30:10:2008

धन्या (बृहस्पति) (हस्ता) दशा	
19:11:2008 To 19:11:2011	
धन्या (बृहस्पति)	19:11:2008
भ्रमरी (मंगल)	18:02:2009
भद्रिका (बुध)	20:06:2009
उल्का (शनि)	19:11:2009
सिद्धा (शुक्र)	21:05:2010
संकटा (राहु)	19:12:2010
मंगला (चन्द्रमा)	20:08:2011
पिंगला (सुर्य)	19:09:2011

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

योगिनी दशा – 3

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:02:29) : भ्रमरी (मंगल) : 2 व. 3 मा. 10 दि.

भ्रमरी (मंगल) (चित्रा) दशा	
19:11:2011 To 19:11:2015	
भ्रमरी (मंगल)	19:11:2011
भद्रिका (बुध)	30:04:2012
उल्का (शनि)	19:11:2012
सिद्धा (शुक्र)	20:07:2013
संकटा (राहु)	30:04:2014
मंगला (चन्द्रमा)	21:03:2015
पिंगला (सुर्य)	30:04:2015
धन्या (बृहस्पति)	20:07:2015

भद्रिका (बुध) (स्वाति) दशा	
19:11:2015 To 19:11:2020	
भद्रिका (बुध)	19:11:2015
उल्का (शनि)	30:07:2016
सिद्धा (शुक्र)	31:05:2017
संकटा (राहु)	21:05:2018
मंगला (चन्द्रमा)	30:06:2019
पिंगला (सुर्य)	20:08:2019
धन्या (बृहस्पति)	29:11:2019
भ्रमरी (मंगल)	30:04:2020

उल्का (शनि) (विशाखा) दशा	
19:11:2020 To 19:11:2026	
उल्का (शनि)	19:11:2020
सिद्धा (शुक्र)	19:11:2021
संकटा (राहु)	19:01:2023
मंगला (चन्द्रमा)	20:05:2024
पिंगला (सुर्य)	20:07:2024
धन्या (बृहस्पति)	19:11:2024
भ्रमरी (मंगल)	21:05:2025
भद्रिका (बुध)	19:01:2026

सिद्धा (शुक्र) (अनुराधा) दशा	
19:11:2026 To 19:11:2033	
सिद्धा (शुक्र)	19:11:2026
संकटा (राहु)	30:03:2028
मंगला (चन्द्रमा)	20:10:2029
पिंगला (सुर्य)	30:12:2029
धन्या (बृहस्पति)	21:05:2030
भ्रमरी (मंगल)	19:12:2030
भद्रिका (बुध)	29:09:2031
उल्का (शनि)	19:09:2032

संकटा (राहु) (ज्येश्ठा) दशा	
19:11:2033 To 19:11:2041	
संकटा (राहु)	19:11:2033
मंगला (चन्द्रमा)	30:08:2035
पिंगला (सुर्य)	19:11:2035
धन्या (बृहस्पति)	30:04:2036
भ्रमरी (मंगल)	30:12:2036
भद्रिका (बुध)	19:11:2037
उल्का (शनि)	30:12:2038
सिद्धा (शुक्र)	30:04:2040

मंगला (चन्द्रमा) (मूला) दशा	
19:11:2041 To 19:11:2042	
मंगला (चन्द्रमा)	19:11:2041
पिंगला (सुर्य)	29:11:2041
धन्या (बृहस्पति)	19:12:2041
भ्रमरी (मंगल)	19:01:2042
भद्रिका (बुध)	28:02:2042
उल्का (शनि)	20:04:2042
सिद्धा (शुक्र)	20:06:2042
संकटा (राहु)	30:08:2042

पिंगला (सुर्य) (पूर्वाशाढ़) दशा	
19:11:2042 To 19:11:2044	
पिंगला (सुर्य)	19:11:2042
धन्या (बृहस्पति)	30:12:2042
भ्रमरी (मंगल)	28:02:2043
भद्रिका (बुध)	21:05:2043
उल्का (शनि)	30:08:2043
सिद्धा (शुक्र)	30:12:2043
संकटा (राहु)	20:05:2044
मंगला (चन्द्रमा)	30:10:2044

धन्या (बृहस्पति) (उत्तराशाढ़) दशा	
19:11:2044 To 19:11:2047	
धन्या (बृहस्पति)	19:11:2044
भ्रमरी (मंगल)	18:02:2045
भद्रिका (बुध)	20:06:2045
उल्का (शनि)	19:11:2045
सिद्धा (शुक्र)	21:05:2046
संकटा (राहु)	19:12:2046
मंगला (चन्द्रमा)	20:08:2047
पिंगला (सुर्य)	19:09:2047

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

जैमिनी चर दशा

जैमिनी चर दशा, जैसा कि ईरानगति रंगाचार्य द्वारा समझाया गया है, वैदिक ज्योतिष में एक सम्मानित प्रगति प्रणाली है जो महत्वपूर्ण जीवन की घटनाओं की भविष्यवाणी के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है। यह गतिशील कारकों पर जोर देता है और ग्रहों की स्थिति के बजाय संकेतों के स्थान पर निर्भर करता है, जो इसे अद्वितीय बनाता है। रंगाचार्य की व्याख्या सूक्ष्म बारीकियों को सामने लाती है, जिससे सटीक और प्रासंगिक रूप से सुसंगत भविष्यवाणियां प्रदान करने में प्रणाली की प्रभावशीलता बढ़ जाती है।

मिथुन दशा		
(10:08:1941 - 10:08:1943)		
कर्क	10-08-1942	00.00
मिथुन	10-08-1943	01.00

तुला दशा		
(10:08:1943 - 10:08:1946)		
सिहं	10-08-1944	02.00
कन्या	10-08-1945	03.00
तुला	10-08-1946	04.00

कुम्भ दशा		
(10:08:1946 - 10:08:1950)		
वृष	10-08-1947	05.00
मेष	10-08-1948	06.00
मीन	10-08-1949	07.00
कुम्भ	10-08-1950	08.00

कर्क दशा		
(10:08:1950 - 09:08:1956)		
कुम्भ	10-08-1951	09.00
मीन	10-08-1952	10.00
मेष	10-08-1953	11.00
वृष	10-08-1954	12.00
मिथुन	10-08-1955	13.00
कर्क	10-08-1956	14.00

वृश्चिक दशा		
(09:08:1956 - 10:08:1961)		
मीन	10-08-1957	15.00
कुम्भ	10-08-1958	16.00
मकर	10-08-1959	17.00
धनु	10-08-1960	18.00
वृश्चिक	10-08-1961	19.00

मीन दशा		
(10:08:1961 - 09:08:1964)		
वृष	10-08-1962	20.00
मेष	10-08-1963	21.00
मीन	10-08-1964	22.00

सिहं दशा

(09:08:1964 - 09:08:1976)

कर्क	10-08-1965	23.00
मिथुन	10-08-1966	24.00
वृष	10-08-1967	25.00
मेष	10-08-1968	26.00
मीन	10-08-1969	27.00
कुम्भ	10-08-1970	28.00
मकर	10-08-1971	29.00
धनु	10-08-1972	30.00
वृश्चिक	10-08-1973	31.00
तुला	10-08-1974	32.00
कन्या	10-08-1975	33.00
सिहं	10-08-1976	34.00

धनु दशा

(09:08:1976 - 10:08:1982)

वृष	10-08-1977	35.00
मेष	10-08-1978	36.00
मीन	10-08-1979	37.00
कुम्भ	10-08-1980	38.00
मकर	10-08-1981	39.00
धनु	10-08-1982	40.00

मेष दशा

(10:08:1982 - 10:08:1994)

मीन	10-08-1983	41.00
कुम्भ	10-08-1984	42.00
मकर	10-08-1985	43.00
धनु	10-08-1986	44.00
वृश्चिक	10-08-1987	45.00
तुला	10-08-1988	46.00
कन्या	10-08-1989	47.00
सिहं	10-08-1990	48.00
कर्क	10-08-1991	49.00
मिथुन	10-08-1992	50.00
वृष	10-08-1993	51.00
मेष	10-08-1994	52.00

कन्या दशा

(10:08:1994 - 10:08:2005)

कर्क	10-08-1995	53.00
मिथुन	10-08-1996	54.00
वृष	10-08-1997	55.00
मेष	10-08-1998	56.00
मीन	10-08-1999	57.00
कुम्भ	10-08-2000	58.00
मकर	10-08-2001	59.00
धनु	10-08-2002	60.00
वृश्चिक	10-08-2003	61.00
तुला	10-08-2004	62.00
कन्या	10-08-2005	63.00

मकर दशा

(10:08:2005 - 10:08:2010)

वृष	10-08-2006	64.00
मेष	10-08-2007	65.00
मीन	10-08-2008	66.00
कुम्भ	10-08-2009	67.00
मकर	10-08-2010	68.00

वृष दशा

(10:08:2010 - 09:08:2020)

सिहं	10-08-2011	69.00
कन्या	10-08-2012	70.00
तुला	10-08-2013	71.00
वृश्चिक	10-08-2014	72.00
धनु	10-08-2015	73.00
मकर	10-08-2016	74.00
कुम्भ	10-08-2017	75.00
मीन	10-08-2018	76.00
मेष	10-08-2019	77.00
वृष	10-08-2020	78.00

जैमिनी चर दशा

मिथुन दशा

(10:08:1941 TO 10:08:1943)

कर्क भुक्ति		
(10:08:1941 - 10:08:1942)		
कुम्भ	09:09:1941	00.00
मीन	09:10:1941	00.08
मेष	09:11:1941	00.17
वृष	09:12:1941	00.25
मिथुन	09:01:1942	00.33
कर्क	08:02:1942	00.42
सिहं	11:03:1942	00.50
कन्या	10:04:1942	00.58
तुला	10:05:1942	00.67
वृश्चिक	10:06:1942	00.75
धनु	10:07:1942	00.83
मकर	10:08:1942	00.92

मिथुन भुक्ति		
(10:08:1942 - 10:08:1943)		
कर्क	09:09:1942	01.00
मिथुन	09:10:1942	01.08
वृष	09:11:1942	01.17
मेष	09:12:1942	01.25
मीन	09:01:1943	01.33
कुम्भ	08:02:1943	01.42
मकर	11:03:1943	01.50
धनु	10:04:1943	01.58
वृश्चिक	10:05:1943	01.67
तुला	10:06:1943	01.75
कन्या	10:07:1943	01.83
सिहं	10:08:1943	01.92

जैमिनी चर दशा

तुला दशा

(10:08:1943 TO 10:08:1946)

सिहं भुक्ति		
(10:08:1943 - 10:08:1944)		
कर्क	09:09:1943	02.00
मिथुन	10:10:1943	02.08
वृष	09:11:1943	02.17
मेष	10:12:1943	02.25
मीन	09:01:1944	02.33
कुम्भ	09:02:1944	02.42
मकर	10:03:1944	02.50
धनु	10:04:1944	02.58
वृश्चिक	10:05:1944	02.67
तुला	10:06:1944	02.75
कन्या	10:07:1944	02.83
सिहं	10:08:1944	02.92

कन्या भुक्ति		
(10:08:1944 - 10:08:1945)		
कर्क	09:09:1944	03.00
मिथुन	10:10:1944	03.08
वृष	09:11:1944	03.17
मेष	10:12:1944	03.25
मीन	09:01:1945	03.33
कुम्भ	08:02:1945	03.42
मकर	11:03:1945	03.50
धनु	10:04:1945	03.58
वृश्चिक	11:05:1945	03.67
तुला	10:06:1945	03.75
कन्या	11:07:1945	03.83
सिहं	10:08:1945	03.92

तुला भुक्ति		
(10:08:1945 - 10:08:1946)		
सिहं	09:09:1945	04.00
कन्या	10:10:1945	04.08
तुला	09:11:1945	04.17
वृश्चिक	10:12:1945	04.25
धनु	09:01:1946	04.33
मकर	08:02:1946	04.42
कुम्भ	11:03:1946	04.50
मीन	10:04:1946	04.58
मेष	11:05:1946	04.67
वृष	10:06:1946	04.75
मिथुन	11:07:1946	04.83
कर्क	10:08:1946	04.92

जैमिनी चर दशा

कुम्भ दशा

(10:08:1946 TO 10:08:1950)

वृष भुक्ति		
(10:08:1946 - 10:08:1947)		
सिहं	09:09:1946	05.00
कन्या	10:10:1946	05.08
तुला	09:11:1946	05.17
वृश्चिक	10:12:1946	05.25
धनु	09:01:1947	05.33
मकर	08:02:1947	05.42
कुम्भ	11:03:1947	05.50
मीन	10:04:1947	05.58
मेष	11:05:1947	05.67
वृष	10:06:1947	05.75
मिथुन	11:07:1947	05.83
कर्क	10:08:1947	05.92

मेष भुक्ति		
(10:08:1947 - 10:08:1948)		
मीन	09:09:1947	06.00
कुम्भ	10:10:1947	06.08
मकर	09:11:1947	06.17
धनु	10:12:1947	06.25
वृश्चिक	09:01:1948	06.33
तुला	09:02:1948	06.42
कन्या	10:03:1948	06.50
सिहं	10:04:1948	06.58
कर्क	10:05:1948	06.67
मिथुन	10:06:1948	06.75
वृष	10:07:1948	06.83
मेष	10:08:1948	06.92

मीन भुक्ति		
(10:08:1948 - 10:08:1949)		
वृष	09:09:1948	07.00
मेष	10:10:1948	07.08
मीन	09:11:1948	07.17
कुम्भ	10:12:1948	07.25
मकर	09:01:1949	07.33
धनु	08:02:1949	07.42
वृश्चिक	11:03:1949	07.50
तुला	10:04:1949	07.58
कन्या	11:05:1949	07.67
सिहं	10:06:1949	07.75
कर्क	11:07:1949	07.83
मिथुन	10:08:1949	07.92

कुम्भ भुक्ति		
(10:08:1949 - 10:08:1950)		
वृष	09:09:1949	08.00
मेष	10:10:1949	08.08
मीन	09:11:1949	08.17
कुम्भ	10:12:1949	08.25
मकर	09:01:1950	08.33
धनु	08:02:1950	08.42
वृश्चिक	11:03:1950	08.50
तुला	10:04:1950	08.58
कन्या	11:05:1950	08.67
सिहं	10:06:1950	08.75
कर्क	11:07:1950	08.83
मिथुन	10:08:1950	08.92

जैमिनी चर दशा

कर्क दशा

(10:08:1950 TO 09:08:1956)

कुम्भ भुक्ति		
(10:08:1950 - 10:08:1951)		
वृष	09:09:1950	09.00
मेष	10:10:1950	09.08
मीन	09:11:1950	09.17
कुम्भ	10:12:1950	09.25
मकर	09:01:1951	09.33
धनु	08:02:1951	09.42
वृश्चिक	11:03:1951	09.50
तुला	10:04:1951	09.58
कन्या	11:05:1951	09.67
सिहं	10:06:1951	09.75
कर्क	11:07:1951	09.83
मिथुन	10:08:1951	09.92

मीन भुक्ति		
(10:08:1951 - 10:08:1952)		
वृष	09:09:1951	10.00
मेष	10:10:1951	10.08
मीन	09:11:1951	10.17
कुम्भ	10:12:1951	10.25
मकर	09:01:1952	10.33
धनु	09:02:1952	10.42
वृश्चिक	10:03:1952	10.50
तुला	10:04:1952	10.58
कन्या	10:05:1952	10.67
सिहं	10:06:1952	10.75
कर्क	10:07:1952	10.83
मिथुन	10:08:1952	10.92

मेष भुक्ति		
(10:08:1952 - 10:08:1953)		
मीन	09:09:1952	11.00
कुम्भ	10:10:1952	11.08
मकर	09:11:1952	11.17
धनु	10:12:1952	11.25
वृश्चिक	09:01:1953	11.33
तुला	08:02:1953	11.42
कन्या	11:03:1953	11.50
सिहं	10:04:1953	11.58
कर्क	11:05:1953	11.67
मिथुन	10:06:1953	11.75
वृष	11:07:1953	11.83
मेष	10:08:1953	11.92

वृष भुक्ति		
(10:08:1953 - 10:08:1954)		
सिहं	09:09:1953	12.00
कन्या	10:10:1953	12.08
तुला	09:11:1953	12.17
वृश्चिक	10:12:1953	12.25
धनु	09:01:1954	12.33
मकर	08:02:1954	12.42
कुम्भ	11:03:1954	12.50
मीन	10:04:1954	12.58
मेष	11:05:1954	12.67
वृष	10:06:1954	12.75
मिथुन	11:07:1954	12.83
कर्क	10:08:1954	12.92

मिथुन भुक्ति		
(10:08:1954 - 10:08:1955)		
कर्क	09:09:1954	13.00
मिथुन	10:10:1954	13.08
वृष	09:11:1954	13.17
मेष	10:12:1954	13.25
मीन	09:01:1955	13.33
कुम्भ	08:02:1955	13.42
मकर	11:03:1955	13.50
धनु	10:04:1955	13.58
वृश्चिक	11:05:1955	13.67
तुला	10:06:1955	13.75
कन्या	11:07:1955	13.83
सिहं	10:08:1955	13.92

कर्क भुक्ति		
(10:08:1955 - 10:08:1956)		
कुम्भ	09:09:1955	14.00
मीन	10:10:1955	14.08
मेष	09:11:1955	14.17
वृष	10:12:1955	14.25
मिथुन	09:01:1956	14.33
कर्क	09:02:1956	14.42
सिहं	10:03:1956	14.50
कन्या	10:04:1956	14.58
तुला	10:05:1956	14.67
वृश्चिक	10:06:1956	14.75
धनु	10:07:1956	14.83
मकर	10:08:1956	14.92

जैमिनी चर दशा

वृश्चिक दशा

(09:08:1956 TO 10:08:1961)

मीन भुक्ति		
(10:08:1956 - 10:08:1957)		
वृष	09:09:1956	15.00
मेष	10:10:1956	15.08
मीन	09:11:1956	15.17
कुम्भ	10:12:1956	15.25
मकर	09:01:1957	15.33
धनु	08:02:1957	15.42
वृश्चिक	11:03:1957	15.50
तुला	10:04:1957	15.58
कन्या	11:05:1957	15.67
सिहं	10:06:1957	15.75
कर्क	11:07:1957	15.83
मिथुन	10:08:1957	15.92

कुम्भ भुक्ति		
(10:08:1957 - 10:08:1958)		
वृष	09:09:1957	16.00
मेष	10:10:1957	16.08
मीन	09:11:1957	16.17
कुम्भ	10:12:1957	16.25
मकर	09:01:1958	16.33
धनु	08:02:1958	16.42
वृश्चिक	11:03:1958	16.50
तुला	10:04:1958	16.58
कन्या	11:05:1958	16.67
सिहं	10:06:1958	16.75
कर्क	11:07:1958	16.83
मिथुन	10:08:1958	16.92

मकर भुक्ति		
(10:08:1958 - 10:08:1959)		
वृष	09:09:1958	17.00
मेष	10:10:1958	17.08
मीन	09:11:1958	17.17
कुम्भ	10:12:1958	17.25
मकर	09:01:1959	17.33
धनु	08:02:1959	17.42
वृश्चिक	11:03:1959	17.50
तुला	10:04:1959	17.58
कन्या	11:05:1959	17.67
सिहं	10:06:1959	17.75
कर्क	11:07:1959	17.83
मिथुन	10:08:1959	17.92

धनु भुक्ति		
(10:08:1959 - 10:08:1960)		
वृष	09:09:1959	18.00
मेष	10:10:1959	18.08
मीन	09:11:1959	18.17
कुम्भ	10:12:1959	18.25
मकर	09:01:1960	18.33
धनु	09:02:1960	18.42
वृश्चिक	10:03:1960	18.50
तुला	10:04:1960	18.58
कन्या	10:05:1960	18.67
सिहं	10:06:1960	18.75
कर्क	10:07:1960	18.83
मिथुन	10:08:1960	18.92

वृश्चिक भुक्ति		
(10:08:1960 - 10:08:1961)		
मीन	09:09:1960	19.00
कुम्भ	10:10:1960	19.08
मकर	09:11:1960	19.17
धनु	10:12:1960	19.25
वृश्चिक	09:01:1961	19.33
तुला	08:02:1961	19.42
कन्या	11:03:1961	19.50
सिहं	10:04:1961	19.58
कर्क	11:05:1961	19.67
मिथुन	10:06:1961	19.75
वृष	11:07:1961	19.83
मेष	10:08:1961	19.92

जैमिनी चर दशा

मीन दशा

(10:08:1961 TO 09:08:1964)

वृष भुक्ति		
(10:08:1961 - 10:08:1962)		
सिहं	09:09:1961	20.00
कन्या	10:10:1961	20.08
तुला	09:11:1961	20.17
वृश्चिक	10:12:1961	20.25
धनु	09:01:1962	20.33
मकर	08:02:1962	20.42
कुम्भ	11:03:1962	20.50
मीन	10:04:1962	20.58
मेष	11:05:1962	20.67
वृष	10:06:1962	20.75
मिथुन	11:07:1962	20.83
कर्क	10:08:1962	20.92

मेष भुक्ति		
(10:08:1962 - 10:08:1963)		
मीन	09:09:1962	21.00
कुम्भ	10:10:1962	21.08
मकर	09:11:1962	21.17
धनु	10:12:1962	21.25
वृश्चिक	09:01:1963	21.33
तुला	08:02:1963	21.42
कन्या	11:03:1963	21.50
सिहं	10:04:1963	21.58
कर्क	11:05:1963	21.67
मिथुन	10:06:1963	21.75
वृष	11:07:1963	21.83
मेष	10:08:1963	21.92

मीन भुक्ति		
(10:08:1963 - 10:08:1964)		
वृष	09:09:1963	22.00
मेष	10:10:1963	22.08
मीन	09:11:1963	22.17
कुम्भ	10:12:1963	22.25
मकर	09:01:1964	22.33
धनु	09:02:1964	22.42
वृश्चिक	10:03:1964	22.50
तुला	10:04:1964	22.58
कन्या	10:05:1964	22.67
सिहं	10:06:1964	22.75
कर्क	10:07:1964	22.83
मिथुन	10:08:1964	22.92

जैमिनी चर दशा

सिहं दशा

(09:08:1964 TO 09:08:1976)

कर्क भुक्ति		
(10:08:1964 - 10:08:1965)		
कुम्भ	09:09:1964	23.00
मीन	10:10:1964	23.08
मेष	09:11:1964	23.17
वृष	10:12:1964	23.25
मिथुन	09:01:1965	23.33
कर्क	08:02:1965	23.42
सिहं	11:03:1965	23.50
कन्या	10:04:1965	23.58
तुला	11:05:1965	23.67
वृश्चिक	10:06:1965	23.75
धनु	11:07:1965	23.83
मकर	10:08:1965	23.92

मिथुन भुक्ति		
(10:08:1965 - 10:08:1966)		
कर्क	09:09:1965	24.00
मिथुन	10:10:1965	24.08
वृष	09:11:1965	24.17
मेष	10:12:1965	24.25
मीन	09:01:1966	24.33
कुम्भ	08:02:1966	24.42
मकर	11:03:1966	24.50
धनु	10:04:1966	24.58
वृश्चिक	11:05:1966	24.67
तुला	10:06:1966	24.75
कन्या	11:07:1966	24.83
सिहं	10:08:1966	24.92

वृष भुक्ति		
(10:08:1966 - 10:08:1967)		
सिहं	09:09:1966	25.00
कन्या	10:10:1966	25.08
तुला	09:11:1966	25.17
वृश्चिक	10:12:1966	25.25
धनु	09:01:1967	25.33
मकर	08:02:1967	25.42
कुम्भ	11:03:1967	25.50
मीन	10:04:1967	25.58
मेष	11:05:1967	25.67
वृष	10:06:1967	25.75
मिथुन	11:07:1967	25.83
कर्क	10:08:1967	25.92

मेष भुक्ति		
(10:08:1967 - 10:08:1968)		
मीन	09:09:1967	26.00
कुम्भ	10:10:1967	26.08
मकर	09:11:1967	26.17
धनु	10:12:1967	26.25
वृश्चिक	09:01:1968	26.33
तुला	09:02:1968	26.42
कन्या	10:03:1968	26.50
सिहं	10:04:1968	26.58
कर्क	10:05:1968	26.67
मिथुन	10:06:1968	26.75
वृष	10:07:1968	26.83
मेष	10:08:1968	26.92

मीन भुक्ति		
(10:08:1968 - 10:08:1969)		
वृष	09:09:1968	27.00
मेष	10:10:1968	27.08
मीन	09:11:1968	27.17
कुम्भ	10:12:1968	27.25
मकर	09:01:1969	27.33
धनु	08:02:1969	27.42
वृश्चिक	11:03:1969	27.50
तुला	10:04:1969	27.58
कन्या	11:05:1969	27.67
सिहं	10:06:1969	27.75
कर्क	11:07:1969	27.83
मिथुन	10:08:1969	27.92

कुम्भ भुक्ति		
(10:08:1969 - 10:08:1970)		
वृष	09:09:1969	28.00
मेष	10:10:1969	28.08
मीन	09:11:1969	28.17
कुम्भ	10:12:1969	28.25
मकर	09:01:1970	28.33
धनु	08:02:1970	28.42
वृश्चिक	11:03:1970	28.50
तुला	10:04:1970	28.58
कन्या	11:05:1970	28.67
सिहं	10:06:1970	28.75
कर्क	11:07:1970	28.83
मिथुन	10:08:1970	28.92

मकर भुक्ति		
(10:08:1970 - 10:08:1971)		
वृष	09:09:1970	29.00
मेष	10:10:1970	29.08
मीन	09:11:1970	29.17
कुम्भ	10:12:1970	29.25
मकर	09:01:1971	29.33
धनु	08:02:1971	29.42
वृश्चिक	11:03:1971	29.50
तुला	10:04:1971	29.58
कन्या	11:05:1971	29.67
सिहं	10:06:1971	29.75
कर्क	11:07:1971	29.83
मिथुन	10:08:1971	29.92

धनु भुक्ति		
(10:08:1971 - 10:08:1972)		
वृष	09:09:1971	30.00
मेष	10:10:1971	30.08
मीन	09:11:1971	30.17
कुम्भ	10:12:1971	30.25
मकर	09:01:1972	30.33
धनु	09:02:1972	30.42
वृश्चिक	10:03:1972	30.50
तुला	10:04:1972	30.58
कन्या	10:05:1972	30.67
सिहं	10:06:1972	30.75
कर्क	10:07:1972	30.83
मिथुन	10:08:1972	30.92

वृश्चिक भुक्ति		
(10:08:1972 - 10:08:1973)		
मीन	09:09:1972	31.00
कुम्भ	10:10:1972	31.08
मकर	09:11:1972	31.17
धनु	10:12:1972	31.25
वृश्चिक	09:01:1973	31.33
तुला	08:02:1973	31.42
कन्या	11:03:1973	31.50
सिहं	10:04:1973	31.58
कर्क	11:05:1973	31.67
मिथुन	10:06:1973	31.75
वृष	11:07:1973	31.83
मेष	10:08:1973	31.92

तुला भुक्ति		
(10:08:1973 - 10:08:1974)		
सिहं	09:09:1973	32.00
कन्या	10:10:1973	32.08
तुला	09:11:1973	32.17
वृश्चिक	10:12:1973	32.25
धनु	09:01:1974	32.33
मकर	08:02:1974	32.42
कुम्भ	11:03:1974	32.50
मीन	10:04:1974	32.58
मेष	11:05:1974	32.67
वृष	10:06:1974	32.75
मिथुन	11:07:1974	32.83
कर्क	10:08:1974	32.92

कन्या भुक्ति		
(10:08:1974 - 10:08:1975)		
कर्क	09:09:1974	33.00
मिथुन	10:10:1974	33.08
वृष	09:11:1974	33.17
मेष	10:12:1974	33.25
मीन	09:01:1975	33.33
कुम्भ	08:02:1975	33.42
मकर	11:03:1975	33.50
धनु	10:04:1975	33.58
वृश्चिक	11:05:1975	33.67
तुला	10:06:1975	33.75
कन्या	11:07:1975	33.83
सिहं	10:08:1975	33.92

सिहं भुक्ति		
(10:08:1975 - 10:08:1976)		
कर्क	09:09:1975	34.00
मिथुन	10:10:1975	34.08
वृष	09:11:1975	34.17
मेष	10:12:1975	34.25
मीन	09:01:1976	34.33
कुम्भ	09:02:1976	34.42
मकर	10:03:1976	34.50
धनु	10:04:1976	34.58
वृश्चिक	10:05:1976	34.67
तुला	10:06:1976	34.75
कन्या	10:07:1976	34.83
सिहं	10:08:1976	34.92

जैमिनी चर दशा

धनु दशा

(09:08:1976 TO 10:08:1982)

वृष भुक्ति		
(10:08:1976 - 10:08:1977)		
सिहं	09:09:1976	35.00
कन्या	10:10:1976	35.08
तुला	09:11:1976	35.17
वृश्चिक	10:12:1976	35.25
धनु	09:01:1977	35.33
मकर	08:02:1977	35.42
कुम्भ	11:03:1977	35.50
मीन	10:04:1977	35.58
मेष	11:05:1977	35.67
वृष	10:06:1977	35.75
मिथुन	11:07:1977	35.83
कर्क	10:08:1977	35.92

मेष भुक्ति		
(10:08:1977 - 10:08:1978)		
मीन	09:09:1977	36.00
कुम्भ	10:10:1977	36.08
मकर	09:11:1977	36.17
धनु	10:12:1977	36.25
वृश्चिक	09:01:1978	36.33
तुला	08:02:1978	36.42
कन्या	11:03:1978	36.50
सिहं	10:04:1978	36.58
कर्क	11:05:1978	36.67
मिथुन	10:06:1978	36.75
वृष	11:07:1978	36.83
मेष	10:08:1978	36.92

मीन भुक्ति		
(10:08:1978 - 10:08:1979)		
वृष	09:09:1978	37.00
मेष	10:10:1978	37.08
मीन	09:11:1978	37.17
कुम्भ	10:12:1978	37.25
मकर	09:01:1979	37.33
धनु	08:02:1979	37.42
वृश्चिक	11:03:1979	37.50
तुला	10:04:1979	37.58
कन्या	11:05:1979	37.67
सिहं	10:06:1979	37.75
कर्क	11:07:1979	37.83
मिथुन	10:08:1979	37.92

कुम्भ भुक्ति		
(10:08:1979 - 10:08:1980)		
वृष	09:09:1979	38.00
मेष	10:10:1979	38.08
मीन	09:11:1979	38.17
कुम्भ	10:12:1979	38.25
मकर	09:01:1980	38.33
धनु	09:02:1980	38.42
वृश्चिक	10:03:1980	38.50
तुला	10:04:1980	38.58
कन्या	10:05:1980	38.67
सिहं	10:06:1980	38.75
कर्क	10:07:1980	38.83
मिथुन	10:08:1980	38.92

मकर भुक्ति		
(10:08:1980 - 10:08:1981)		
वृष	09:09:1980	39.00
मेष	10:10:1980	39.08
मीन	09:11:1980	39.17
कुम्भ	10:12:1980	39.25
मकर	09:01:1981	39.33
धनु	08:02:1981	39.42
वृश्चिक	11:03:1981	39.50
तुला	10:04:1981	39.58
कन्या	11:05:1981	39.67
सिहं	10:06:1981	39.75
कर्क	11:07:1981	39.83
मिथुन	10:08:1981	39.92

धनु भुक्ति		
(10:08:1981 - 10:08:1982)		
वृष	09:09:1981	40.00
मेष	10:10:1981	40.08
मीन	09:11:1981	40.17
कुम्भ	10:12:1981	40.25
मकर	09:01:1982	40.33
धनु	08:02:1982	40.42
वृश्चिक	11:03:1982	40.50
तुला	10:04:1982	40.58
कन्या	11:05:1982	40.67
सिहं	10:06:1982	40.75
कर्क	11:07:1982	40.83
मिथुन	10:08:1982	40.92

जैमिनी चर दशा

मेष दशा

(10:08:1982 TO 10:08:1994)

मीन भुक्ति		
(10:08:1982 - 10:08:1983)		
वृष	09:09:1982	41.00
मेष	10:10:1982	41.08
मीन	09:11:1982	41.17
कुम्भ	10:12:1982	41.25
मकर	09:01:1983	41.33
धनु	08:02:1983	41.42
वृश्चिक	11:03:1983	41.50
तुला	10:04:1983	41.58
कन्या	11:05:1983	41.67
सिहं	10:06:1983	41.75
कर्क	11:07:1983	41.83
मिथुन	10:08:1983	41.92

कुम्भ भुक्ति		
(10:08:1983 - 10:08:1984)		
वृष	09:09:1983	42.00
मेष	10:10:1983	42.08
मीन	09:11:1983	42.17
कुम्भ	10:12:1983	42.25
मकर	09:01:1984	42.33
धनु	09:02:1984	42.42
वृश्चिक	10:03:1984	42.50
तुला	10:04:1984	42.58
कन्या	10:05:1984	42.67
सिहं	10:06:1984	42.75
कर्क	10:07:1984	42.83
मिथुन	10:08:1984	42.92

मकर भुक्ति		
(10:08:1984 - 10:08:1985)		
वृष	09:09:1984	43.00
मेष	10:10:1984	43.08
मीन	09:11:1984	43.17
कुम्भ	10:12:1984	43.25
मकर	09:01:1985	43.33
धनु	08:02:1985	43.42
वृश्चिक	11:03:1985	43.50
तुला	10:04:1985	43.58
कन्या	11:05:1985	43.67
सिहं	10:06:1985	43.75
कर्क	11:07:1985	43.83
मिथुन	10:08:1985	43.92

धनु भुक्ति		
(10:08:1985 - 10:08:1986)		
वृष	09:09:1985	44.00
मेष	10:10:1985	44.08
मीन	09:11:1985	44.17
कुम्भ	10:12:1985	44.25
मकर	09:01:1986	44.33
धनु	08:02:1986	44.42
वृश्चिक	11:03:1986	44.50
तुला	10:04:1986	44.58
कन्या	11:05:1986	44.67
सिहं	10:06:1986	44.75
कर्क	11:07:1986	44.83
मिथुन	10:08:1986	44.92

वृश्चिक भुक्ति		
(10:08:1986 - 10:08:1987)		
मीन	09:09:1986	45.00
कुम्भ	10:10:1986	45.08
मकर	09:11:1986	45.17
धनु	10:12:1986	45.25
वृश्चिक	09:01:1987	45.33
तुला	08:02:1987	45.42
कन्या	11:03:1987	45.50
सिहं	10:04:1987	45.58
कर्क	11:05:1987	45.67
मिथुन	10:06:1987	45.75
वृष	11:07:1987	45.83
मेष	10:08:1987	45.92

तुला भुक्ति		
(10:08:1987 - 10:08:1988)		
सिहं	09:09:1987	46.00
कन्या	10:10:1987	46.08
तुला	09:11:1987	46.17
वृश्चिक	10:12:1987	46.25
धनु	09:01:1988	46.33
मकर	09:02:1988	46.42
कुम्भ	10:03:1988	46.50
मीन	10:04:1988	46.58
मेष	10:05:1988	46.67
वृष	10:06:1988	46.75
मिथुन	10:07:1988	46.83
कर्क	10:08:1988	46.92

कन्या भुक्ति		
(10:08:1988 - 10:08:1989)		
कर्क	09:09:1988	47.00
मिथुन	10:10:1988	47.08
वृष	09:11:1988	47.17
मेष	10:12:1988	47.25
मीन	09:01:1989	47.33
कुम्भ	08:02:1989	47.42
मकर	11:03:1989	47.50
धनु	10:04:1989	47.58
वृश्चिक	11:05:1989	47.67
तुला	10:06:1989	47.75
कन्या	11:07:1989	47.83
सिहं	10:08:1989	47.92

सिहं भुक्ति		
(10:08:1989 - 10:08:1990)		
कर्क	09:09:1989	48.00
मिथुन	10:10:1989	48.08
वृष	09:11:1989	48.17
मेष	10:12:1989	48.25
मीन	09:01:1990	48.33
कुम्भ	08:02:1990	48.42
मकर	11:03:1990	48.50
धनु	10:04:1990	48.58
वृश्चिक	11:05:1990	48.67
तुला	10:06:1990	48.75
कन्या	11:07:1990	48.83
सिहं	10:08:1990	48.92

कर्क भुक्ति		
(10:08:1990 - 10:08:1991)		
कुम्भ	09:09:1990	49.00
मीन	10:10:1990	49.08
मेष	09:11:1990	49.17
वृष	10:12:1990	49.25
मिथुन	09:01:1991	49.33
कर्क	08:02:1991	49.42
सिहं	11:03:1991	49.50
कन्या	10:04:1991	49.58
तुला	11:05:1991	49.67
वृश्चिक	10:06:1991	49.75
धनु	11:07:1991	49.83
मकर	10:08:1991	49.92

मिथुन भुक्ति		
(10:08:1991 - 10:08:1992)		
कर्क	09:09:1991	50.00
मिथुन	10:10:1991	50.08
वृष	09:11:1991	50.17
मेष	10:12:1991	50.25
मीन	09:01:1992	50.33
कुम्भ	09:02:1992	50.42
मकर	10:03:1992	50.50
धनु	10:04:1992	50.58
वृश्चिक	10:05:1992	50.67
तुला	10:06:1992	50.75
कन्या	10:07:1992	50.83
सिहं	10:08:1992	50.92

वृष भुक्ति		
(10:08:1992 - 10:08:1993)		
सिहं	09:09:1992	51.00
कन्या	10:10:1992	51.08
तुला	09:11:1992	51.17
वृश्चिक	10:12:1992	51.25
धनु	09:01:1993	51.33
मकर	08:02:1993	51.42
कुम्भ	11:03:1993	51.50
मीन	10:04:1993	51.58
मेष	11:05:1993	51.67
वृष	10:06:1993	51.75
मिथुन	11:07:1993	51.83
कर्क	10:08:1993	51.92

मेष भुक्ति		
(10:08:1993 - 10:08:1994)		
मीन	09:09:1993	52.00
कुम्भ	10:10:1993	52.08
मकर	09:11:1993	52.17
धनु	10:12:1993	52.25
वृश्चिक	09:01:1994	52.33
तुला	08:02:1994	52.42
कन्या	11:03:1994	52.50
सिहं	10:04:1994	52.58
कर्क	11:05:1994	52.67
मिथुन	10:06:1994	52.75
वृष	11:07:1994	52.83
मेष	10:08:1994	52.92

जैमिनी चर दशा

कन्या दशा

(10:08:1994 TO 10:08:2005)

कर्क भुक्ति		
(10:08:1994 - 10:08:1995)		
कुम्भ	09:09:1994	53.00
मीन	10:10:1994	53.08
मेष	09:11:1994	53.17
वृष	10:12:1994	53.25
मिथुन	09:01:1995	53.33
कर्क	08:02:1995	53.42
सिहं	11:03:1995	53.50
कन्या	10:04:1995	53.58
तुला	11:05:1995	53.67
वृश्चिक	10:06:1995	53.75
धनु	11:07:1995	53.83
मकर	10:08:1995	53.92

मिथुन भुक्ति		
(10:08:1995 - 10:08:1996)		
कर्क	09:09:1995	54.00
मिथुन	10:10:1995	54.08
वृष	09:11:1995	54.17
मेष	10:12:1995	54.25
मीन	09:01:1996	54.33
कुम्भ	09:02:1996	54.42
मकर	10:03:1996	54.50
धनु	10:04:1996	54.58
वृश्चिक	10:05:1996	54.67
तुला	10:06:1996	54.75
कन्या	10:07:1996	54.83
सिहं	10:08:1996	54.92

वृष भुक्ति		
(10:08:1996 - 10:08:1997)		
सिहं	09:09:1996	55.00
कन्या	10:10:1996	55.08
तुला	09:11:1996	55.17
वृश्चिक	10:12:1996	55.25
धनु	09:01:1997	55.33
मकर	08:02:1997	55.42
कुम्भ	11:03:1997	55.50
मीन	10:04:1997	55.58
मेष	11:05:1997	55.67
वृष	10:06:1997	55.75
मिथुन	11:07:1997	55.83
कर्क	10:08:1997	55.92

मेष भुक्ति		
(10:08:1997 - 10:08:1998)		
मीन	09:09:1997	56.00
कुम्भ	10:10:1997	56.08
मकर	09:11:1997	56.17
धनु	10:12:1997	56.25
वृश्चिक	09:01:1998	56.33
तुला	08:02:1998	56.42
कन्या	11:03:1998	56.50
सिहं	10:04:1998	56.58
कर्क	11:05:1998	56.67
मिथुन	10:06:1998	56.75
वृष	11:07:1998	56.83
मेष	10:08:1998	56.92

मीन भुक्ति		
(10:08:1998 - 10:08:1999)		
वृष	09:09:1998	57.00
मेष	10:10:1998	57.08
मीन	09:11:1998	57.17
कुम्भ	10:12:1998	57.25
मकर	09:01:1999	57.33
धनु	08:02:1999	57.42
वृश्चिक	11:03:1999	57.50
तुला	10:04:1999	57.58
कन्या	11:05:1999	57.67
सिहं	10:06:1999	57.75
कर्क	11:07:1999	57.83
मिथुन	10:08:1999	57.92

कुम्भ भुक्ति		
(10:08:1999 - 10:08:2000)		
वृष	09:09:1999	58.00
मेष	10:10:1999	58.08
मीन	09:11:1999	58.17
कुम्भ	10:12:1999	58.25
मकर	09:01:2000	58.33
धनु	09:02:2000	58.42
वृश्चिक	10:03:2000	58.50
तुला	10:04:2000	58.58
कन्या	10:05:2000	58.67
सिहं	10:06:2000	58.75
कर्क	10:07:2000	58.83
मिथुन	10:08:2000	58.92

मकर भुक्ति		
(10:08:2000 - 10:08:2001)		
वृष	09:09:2000	59.00
मेष	10:10:2000	59.08
मीन	09:11:2000	59.17
कुम्भ	10:12:2000	59.25
मकर	09:01:2001	59.33
धनु	08:02:2001	59.42
वृश्चिक	11:03:2001	59.50
तुला	10:04:2001	59.58
कन्या	11:05:2001	59.67
सिहं	10:06:2001	59.75
कर्क	11:07:2001	59.83
मिथुन	10:08:2001	59.92

धनु भुक्ति		
(10:08:2001 - 10:08:2002)		
वृष	09:09:2001	60.00
मेष	10:10:2001	60.08
मीन	09:11:2001	60.17
कुम्भ	10:12:2001	60.25
मकर	09:01:2002	60.33
धनु	08:02:2002	60.42
वृश्चिक	11:03:2002	60.50
तुला	10:04:2002	60.58
कन्या	11:05:2002	60.67
सिहं	10:06:2002	60.75
कर्क	11:07:2002	60.83
मिथुन	10:08:2002	60.92

वृश्चिक भुक्ति		
(10:08:2002 - 10:08:2003)		
मीन	09:09:2002	61.00
कुम्भ	10:10:2002	61.08
मकर	09:11:2002	61.17
धनु	10:12:2002	61.25
वृश्चिक	09:01:2003	61.33
तुला	08:02:2003	61.42
कन्या	11:03:2003	61.50
सिहं	10:04:2003	61.58
कर्क	11:05:2003	61.67
मिथुन	10:06:2003	61.75
वृष	11:07:2003	61.83
मेष	10:08:2003	61.92

तुला भुक्ति		
(10:08:2003 - 10:08:2004)		
सिहं	09:09:2003	62.00
कन्या	10:10:2003	62.08
तुला	09:11:2003	62.17
वृश्चिक	10:12:2003	62.25
धनु	09:01:2004	62.33
मकर	09:02:2004	62.42
कुम्भ	10:03:2004	62.50
मीन	10:04:2004	62.58
मेष	10:05:2004	62.67
वृष	10:06:2004	62.75
मिथुन	10:07:2004	62.83
कर्क	10:08:2004	62.92

कन्या भुक्ति		
(10:08:2004 - 10:08:2005)		
कर्क	09:09:2004	63.00
मिथुन	10:10:2004	63.08
वृष	09:11:2004	63.17
मेष	10:12:2004	63.25
मीन	09:01:2005	63.33
कुम्भ	08:02:2005	63.42
मकर	11:03:2005	63.50
धनु	10:04:2005	63.58
वृश्चिक	11:05:2005	63.67
तुला	10:06:2005	63.75
कन्या	11:07:2005	63.83
सिहं	10:08:2005	63.92

जैमिनी चर दशा

मकर दशा

(10:08:2005 TO 10:08:2010)

वृष भुक्ति		
(10:08:2005 - 10:08:2006)		
सिहं	09:09:2005	64.00
कन्या	10:10:2005	64.08
तुला	09:11:2005	64.17
वृश्चिक	10:12:2005	64.25
धनु	09:01:2006	64.33
मकर	08:02:2006	64.42
कुम्भ	11:03:2006	64.50
मीन	10:04:2006	64.58
मेष	11:05:2006	64.67
वृष	10:06:2006	64.75
मिथुन	11:07:2006	64.83
कर्क	10:08:2006	64.92

मेष भुक्ति		
(10:08:2006 - 10:08:2007)		
मीन	09:09:2006	65.00
कुम्भ	10:10:2006	65.08
मकर	09:11:2006	65.17
धनु	10:12:2006	65.25
वृश्चिक	09:01:2007	65.33
तुला	08:02:2007	65.42
कन्या	11:03:2007	65.50
सिहं	10:04:2007	65.58
कर्क	11:05:2007	65.67
मिथुन	10:06:2007	65.75
वृष	11:07:2007	65.83
मेष	10:08:2007	65.92

मीन भुक्ति		
(10:08:2007 - 10:08:2008)		
वृष	09:09:2007	66.00
मेष	10:10:2007	66.08
मीन	09:11:2007	66.17
कुम्भ	10:12:2007	66.25
मकर	09:01:2008	66.33
धनु	09:02:2008	66.42
वृश्चिक	10:03:2008	66.50
तुला	10:04:2008	66.58
कन्या	10:05:2008	66.67
सिहं	10:06:2008	66.75
कर्क	10:07:2008	66.83
मिथुन	10:08:2008	66.92

कुम्भ भुक्ति		
(10:08:2008 - 10:08:2009)		
वृष	09:09:2008	67.00
मेष	10:10:2008	67.08
मीन	09:11:2008	67.17
कुम्भ	10:12:2008	67.25
मकर	09:01:2009	67.33
धनु	08:02:2009	67.42
वृश्चिक	11:03:2009	67.50
तुला	10:04:2009	67.58
कन्या	11:05:2009	67.67
सिहं	10:06:2009	67.75
कर्क	11:07:2009	67.83
मिथुन	10:08:2009	67.92

मकर भुक्ति		
(10:08:2009 - 10:08:2010)		
वृष	09:09:2009	68.00
मेष	10:10:2009	68.08
मीन	09:11:2009	68.17
कुम्भ	10:12:2009	68.25
मकर	09:01:2010	68.33
धनु	08:02:2010	68.42
वृश्चिक	11:03:2010	68.50
तुला	10:04:2010	68.58
कन्या	11:05:2010	68.67
सिहं	10:06:2010	68.75
कर्क	11:07:2010	68.83
मिथुन	10:08:2010	68.92

जैमिनी चर दशा

वृष दशा

(10:08:2010 TO 09:08:2020)

सिहं भुक्ति		
(10:08:2010 - 10:08:2011)		
कर्क	09:09:2010	69.00
मिथुन	10:10:2010	69.08
वृष	09:11:2010	69.17
मेष	10:12:2010	69.25
मीन	09:01:2011	69.33
कुम्भ	08:02:2011	69.42
मकर	11:03:2011	69.50
धनु	10:04:2011	69.58
वृश्चिक	11:05:2011	69.67
तुला	10:06:2011	69.75
कन्या	11:07:2011	69.83
सिहं	10:08:2011	69.92

कन्या भुक्ति		
(10:08:2011 - 10:08:2012)		
कर्क	09:09:2011	70.00
मिथुन	10:10:2011	70.08
वृष	09:11:2011	70.17
मेष	10:12:2011	70.25
मीन	09:01:2012	70.33
कुम्भ	09:02:2012	70.42
मकर	10:03:2012	70.50
धनु	10:04:2012	70.58
वृश्चिक	10:05:2012	70.67
तुला	10:06:2012	70.75
कन्या	10:07:2012	70.83
सिहं	10:08:2012	70.92

तुला भुक्ति		
(10:08:2012 - 10:08:2013)		
सिहं	09:09:2012	71.00
कन्या	10:10:2012	71.08
तुला	09:11:2012	71.17
वृश्चिक	10:12:2012	71.25
धनु	09:01:2013	71.33
मकर	08:02:2013	71.42
कुम्भ	11:03:2013	71.50
मीन	10:04:2013	71.58
मेष	11:05:2013	71.67
वृष	10:06:2013	71.75
मिथुन	11:07:2013	71.83
कर्क	10:08:2013	71.92

वृश्चिक भुक्ति		
(10:08:2013 - 10:08:2014)		
मीन	09:09:2013	72.00
कुम्भ	10:10:2013	72.08
मकर	09:11:2013	72.17
धनु	10:12:2013	72.25
वृश्चिक	09:01:2014	72.33
तुला	08:02:2014	72.42
कन्या	11:03:2014	72.50
सिहं	10:04:2014	72.58
कर्क	11:05:2014	72.67
मिथुन	10:06:2014	72.75
वृष	11:07:2014	72.83
मेष	10:08:2014	72.92

धनु भुक्ति		
(10:08:2014 - 10:08:2015)		
वृष	09:09:2014	73.00
मेष	10:10:2014	73.08
मीन	09:11:2014	73.17
कुम्भ	10:12:2014	73.25
मकर	09:01:2015	73.33
धनु	08:02:2015	73.42
वृश्चिक	11:03:2015	73.50
तुला	10:04:2015	73.58
कन्या	11:05:2015	73.67
सिहं	10:06:2015	73.75
कर्क	11:07:2015	73.83
मिथुन	10:08:2015	73.92

मकर भुक्ति		
(10:08:2015 - 10:08:2016)		
वृष	09:09:2015	74.00
मेष	10:10:2015	74.08
मीन	09:11:2015	74.17
कुम्भ	10:12:2015	74.25
मकर	09:01:2016	74.33
धनु	09:02:2016	74.42
वृश्चिक	10:03:2016	74.50
तुला	10:04:2016	74.58
कन्या	10:05:2016	74.67
सिहं	10:06:2016	74.75
कर्क	10:07:2016	74.83
मिथुन	10:08:2016	74.92

कुम्भ भुक्ति		
(10:08:2016 - 10:08:2017)		
वृष	09:09:2016	75.00
मेष	10:10:2016	75.08
मीन	09:11:2016	75.17
कुम्भ	10:12:2016	75.25
मकर	09:01:2017	75.33
धनु	08:02:2017	75.42
वृश्चिक	11:03:2017	75.50
तुला	10:04:2017	75.58
कन्या	11:05:2017	75.67
सिहं	10:06:2017	75.75
कर्क	11:07:2017	75.83
मिथुन	10:08:2017	75.92

मीन भुक्ति		
(10:08:2017 - 10:08:2018)		
वृष	09:09:2017	76.00
मेष	10:10:2017	76.08
मीन	09:11:2017	76.17
कुम्भ	10:12:2017	76.25
मकर	09:01:2018	76.33
धनु	08:02:2018	76.42
वृश्चिक	11:03:2018	76.50
तुला	10:04:2018	76.58
कन्या	11:05:2018	76.67
सिहं	10:06:2018	76.75
कर्क	11:07:2018	76.83
मिथुन	10:08:2018	76.92

मेष भुक्ति		
(10:08:2018 - 10:08:2019)		
मीन	09:09:2018	77.00
कुम्भ	10:10:2018	77.08
मकर	09:11:2018	77.17
धनु	10:12:2018	77.25
वृश्चिक	09:01:2019	77.33
तुला	08:02:2019	77.42
कन्या	11:03:2019	77.50
सिहं	10:04:2019	77.58
कर्क	11:05:2019	77.67
मिथुन	10:06:2019	77.75
वृष	11:07:2019	77.83
मेष	10:08:2019	77.92

वृष भुक्ति

(10:08:2019 - 10:08:2020)

सिहं	09:09:2019	78.00
कन्या	10:10:2019	78.08
तुला	09:11:2019	78.17
वृश्चिक	10:12:2019	78.25
धनु	09:01:2020	78.33
मकर	09:02:2020	78.42
कुम्भ	10:03:2020	78.50
मीन	10:04:2020	78.58
मेष	10:05:2020	78.67
वृष	10:06:2020	78.75
मिथुन	10:07:2020	78.83
कर्क	10:08:2020	78.92

वैदिक ज्योतिष से आपकी जीवन यात्रा

आपकी लग्न राशि मिथुन है, जिसे दो बच्चों के चित्र के द्वारा प्रदर्शित किया गया है– दोहरेपन/द्वैध–अवस्था का प्रतीक। यह राशि वायुतत्व, साधारण या लचीली राशि के रूप में वर्गीकृत की जाती है। कई अन्य प्राकृतिक गुणात्मक विशेषताएं भी इसमें निहित हैं। यह मानव, दोहरा–शरीर या द्वि–शारीरिक संबंधी, बंजर और हिंसक प्रकृति की राशि है। यह वाणी की भी राशि है।

आपकी कुण्डली के प्रथम भाव का विश्लेषण

सामान्य जानकारी, मानसिक शांति, ब्यक्तित्व, अवसर और जीवन की दिशा

लग्न में मिथुन राशि होना बहुत सुखदायक होता है तथा आपको आकर्षक स्वरुप देता है। आमतौर पर आप लंबे, बड़े हाथ एवं पैर वाले, दुबले–पतले, खूबसूरत आंखों वाले तथा तेज नाक वाले हो सकते हैं। आपकी बुद्धि एवं मनभावन चाल आपके चेहरे की रौनक को बढ़ा देंगे। आपके पास राजनीतिक बातचीत करने का विशेष कौशल हो सकता है तथा आप व्यापार में कुशल हो सकते हैं। आपके पास नाटकीय प्रदर्शन करने की प्रतिभा होगी तथा आपके अंदर अपनी भावनाओं को छुपाने की बड़ी क्षमता होगी। आपके अंदर उभय स्वभाव का विशेष गुण होगा।

आप आधारभूत रूप से एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे– संभवतः आपमें कुछ कलात्मक झुकाव होगा और जब यह बौद्धिक शौक के रूप में आएगा तब आप मेहनती बनेंगे। अनोखे प्रकार की प्रतिभा, द्वैतवादी प्रकृति तथा कुछ हद तक उत्तेजक प्रवृत्ति आपकी कुछ विशिष्ट विशेषताएं होंगी। आप अत्यंत बुद्धिमान और बहुत दयालु, दूसरों के प्रति सुहृदय, वास्तव में न्यायी और निष्पक्ष होंगे। आप बहुत विनम्र, मैत्रीपूर्ण, कौशलपूर्ण और एक विशिष्ट वक्ता होंगे। विभिन्न प्रकार के ज्ञान एवं सूचना के लिए आपमें एक अतृप्त प्यास होगी और आधुनिक तकनीकी विकास आपको पूर्णतः आकर्षित करेंगे। आप खोजी प्रकृति के होंगे और संबंधित विषयों के प्रत्येक पहलु का अन्वेषण करने का प्रयास करेंगे।

आप संकोची एवं अपनी भाषण में सोच–समझकर बोलने वाले होंगे। आपको दूसरे लोगों से मिलना, यात्रायें करना और कहीं से भी ज्ञान प्राप्त करना बहुत पसंद होगा। आप दूसरों को प्रभावित करने में कुशल होंगे तथा विपरीत लिंगी व्यक्तियों के साथ समय बिताना अच्छा लग सकता है। आमतौर पर आप दोहरे व्यक्तित्व वाले हो सकते हैं। आपका स्वभाव लचीला तथा समय के अनुरुप ढ़लने वाला हो सकता है। आपकी मनोदशा एवं परिस्थितियों के अनुसार कभी गंभीरता आ जाती है, कभी आप तुच्छ हरकतें करने लग सकते हैं। आपके जीवन में सफलता दूसरे लोगों के विचारों एवं भावनाओं पर निर्भर कर सकती है। दूसरों की भावनाओं के अनुसार ही उन्हें प्रभावित करता है। दूसरों के भावनाओं को समझने के कारण आप एक सफल लेखक या उपन्यासकार बन सकते हैं।

आपकी शिक्षा, ज्ञान और बुद्धि आपके पेशे के साथ–साथ आपके जीवन में भी प्रगति करने में आपकी सहायता करेंगे। आप तार्किक और खुले विचारों वाले होंगे। आपकी बुद्धिमत्ता और कूटनीतिक योग्यता आपको आपके विरोधियों को पराजित करने या नष्ट करने में आपकी मदद करेगी। आप अनुशासनप्रिय और सिद्धान्तवादी व्यक्ति होंगे। किन्तु इतने सारे वांछित गुण होने के बावजूद आपमें धैर्य की कमी हो सकती है। आप निरन्तर परिवर्तनशील विचारों एवं बदलते उद्देश्यों वाले हो सकते हैं। आज आप जो कहेंगे या जिसमें विश्वास करेंगे, उसके अगले दिन आपके विचार उसके ठीक विपरीत हो सकते हैं। कई बार आपको देखने वाले लोग काफी भ्रमित या उलझन में हो सकते हैं। तब भी वे आपको हमेशा एक रुचिकर व्यक्ति समझेंगे। आप सभी को प्यार करेंगे।

आप लम्बे, दुबले–पतले और सुन्दर शारीरिक संरचना वाले होंगे। आपका चेहरा आकर्षक होगा और आँखें भावबोधक होंगी, माथा चौड़ा, घुंघराले बाल, भुजाएं और उंगलियां लम्बी होंगी।

सकारात्मक गुण

आप रचनात्मक, कलात्मक और कल्पनाशील होंगे। आपमें परिस्थितियों के अनुसार समायोजन करने की योग्यता विद्यमान होगी। अपने हास्यकर प्रकृति और आकर्षक व्यक्तित्व के कारण आप महफिलों की शान होंगे। आप सहानुभूतिपूर्ण होंगे एवं लोगों की हमेशा सहायता करेंगे। आप बुद्धिजीवी और बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न होंगे। आपकी बोलने की क्षमता अद्वितीय होगी।

नकारात्मक गुण

आप चीजों को जानने में अपना समय व्यर्थ में गवां सकते हैं। मित्रों के चुनाव में आपकी पसन्द गलत हो सकती है– जैसाकि वे आपको धोखा दे सकते हैं। आप धोखेबाज हो सकते हैं।

विशिष्ट गुण

1– आप बुद्धिमान, कौशलपूर्ण और मौलिक होंगे।
2– आप प्रतिभाशाली और अनेक क्षेत्रों का ज्ञान रखने वाले होंगे।
3– आप मजाकिया, चतुर और उर्जा से परिपूर्ण होंगे।
4– आपको पढ़ने–लिखने का अत्यधिक शौक होगा।

खान–पान, स्वास्थ्य और ब्यायाम

आप अपने शरीर और तन्दुरूस्ती के प्रति बहुत जागरूक होंगे। आप व्यायामशाला में मेहनत करेंगे अथवा अत्यंत उर्जावान व्यायाम करेंगे। आपको विभिन्न प्रकार का भोजन करना पसन्द होगा। पेय पदार्थों के साथ तीन प्रकार का भोजन आपका आदर्श भोजन होगा। आप अपने सहकर्मियों या संबंधियों के साथ भोजन करना पसन्द करेंगे। आप बहुत शीघ्र तनावग्रस्त हो सकते हैं। स्वयं को मजबूत रखने के लिए निरंतर चुनौतियां आपकी जरूरत हो सकती हैं। आपमें उपस्थित उच्च चयापचय दर के कारण, आपको बार–बार भोजन और पर्याप्त जल ग्रहण करने की आवश्यकता होगी। सामान्यतः आप बहुत शीघ्रता से भोजन करेंगे। आपमें पित्त की अधिकता होगी।

आप अपने भोजन में और अधिक कार्बोहाइड्रेट या आग पर भूनी हुई सब्जियां या मीट शामिल कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आप संतरा, कीवी, अवोकाडु, स्ट्रॉबेरी आदि जैसे फल शामील कर सकते हैं। आपके लिए ठंडा जूस और सलाद भी फायदेमंद होगा। आपके शरीर में पित्त या गर्मी की अधिकता है, इसलिए आपको अपने शरीर प्रणाली को संतुलित रखने और इन तत्वों को शांत करने के लिए क्षारीय भोजन की मात्रा अधिक रखनी चाहिए, जो कि आपके पेट में उपस्थित अम्लीय स्तर का प्रतिरोध कर सके।

आपको तला हुआ और अधिक मसालेदार भोजन नहीं करना चाहिए। आपको पौधों से प्राप्त तेल से अपना भोजन तैयार करना चाहिए, ना कि पशुओं से प्राप्त घी, मक्खन आदि से अर्थात आपके लिए जैतून का तेल, सूर्यमुखी का तेल, बादाम का तेल आदि से भोजन पकाना स्वास्थ्यवर्द्धक होगा। आप हृदय संबंधी विकारों से ग्रसित हो सकते हैं, इसलिए आपको लाल माँस, मक्खन या घी का सेवन नहीं करना चाहिए। आपको हृदय को शक्ति प्रदान करने वाले व्यायाम करना चाहिए। आप अपने शरीर पर अत्यधिक काम का बोझ डाल सकते हैं। इसलिए आपको व्यायाम, भोजन, काम और नींद सबका अनुसरण करना चाहिए।

आपकी कुण्डली के द्वितीय भाव का विश्लेषण

धन–सम्पदा, परिवार, मान–सम्मान, भाषण कला और समाज में स्थान और सामाजिक संबंध

आपके भाषण या बोलने का तरीका बहुत भावुक होगा तथा आपके परिवार एवं संबंधियों के बीच संबंधों एवं आर्थिक स्थिति में उतार–चढ़ाव आते रह सकता है। आपके परिवार में महिलाओं की संख्या अत्यधिक हो सकती है। आपकी आर्थिक स्थिति में अस्थिरता रह सकती है अर्थात आपके पास धन की मात्रा घटती–बढ़ती रह सकती है। आप तरल पदार्थों, पानी अथवा इमारती लकड़ी से जुड़े कार्य से धनोपार्जन कर सकते हैं। आपको एवं आपकी पत्नी को पानी से खतरा हो सकता है, अतः आपको सावधानी बरतना चाहिए एवं पानी वाले स्थानों से दूर रहने का प्रयत्न करना चाहिए। आपके पिता को छाती या वक्षस्थल से संबंधित रोग से पीड़ित रहना पड़ सकता है। आपकी पहली संतान के पेशे का संबंध लोगों की देखभाल से जुड़ा हो सकता है अथवा वह चिकित्सा या नर्स के पेशे में संलग्न हो सकती है। संभवतः आपकी पहली संतान की रूचि ऐतिहासिक विषयों के अध्ययन में भी हो सकती है अथवा वह रेस्टोरेन्ट या कला संग्रह या आक्रिटेक्चर के पेशे में संलग्न हो सकती है। आप बहुत जल्दी–जल्दी, किन्तु रूचिकर वक्ता हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के दूसरे भाव में सूर्य स्थित है। आपका पारिवारिक कलह बहुत ज्यादा बढ़ सकती है।

आपकी कुण्डली में दूसरे भाव में बुध स्थित है। आप स्वभाव से घमंडी, विपरीत लिंग वाले व्यक्तियों के प्रति अधिक आकर्षित, बुद्धिजीवियों द्वारा सम्मानित तथा अच्छी–खासी संपत्ति के मालिक होंगे। आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति अधिक सचेत रहना चाहिए।

आपकी कुण्डली के तृतीय भाव का विश्लेषण

साहस और पराक्रम, शौक और रूचियाँ, भाई–बहन और पड़ोसी

आप तेज मिजाज वाले तथा बहुत शीघ्र उत्तेजित होने वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आप साहसी, अहंकारी एवं खुलकर बोलने वाले हो सकते हैं। आप बहुत बुद्धिमान होंगे तथा अपने रोजगार के क्षेत्र में अच्छी स्थिति में होंगे। आमतौर पर आप उच्च महात्वाकांक्षा वाले होंगे तथा अपने प्रयासों के माध्यम से धन अर्जित करेंगे। दूसरों के प्रति लगाव एक सीमा तक ही रख सकते हैं। जब आपको लगता है कि कोई व्यक्ति विशेष आपके काम का नहीं है, आप रिश्तों को खत्म कर सकते हैं। आपकी रूचि यात्राओं में नहीं हो सकती है। आप आत्मनिर्भर होंगे तथा अपने स्वयं के प्रयासों से अधिकार व शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता अपने साथियों या साझेदारों के साथ मिल–जुलकर नहीं रह सकते हैं तथा उनके मध्य विवाद या मुकदमे भी उत्पन्न हो सकते हैं। आपके छोटे सहोदर उदारचरित, सरल हृदय व खुले विचारों वाले हो सकते हैं। वे प्रभावी प्रकृत्ति के हो सकते हैं। आपके ससुर एक उच्च पद पर आसीन हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में शुक्र स्थित है, आप कामुक/मिलनसार हो सकते हैं तथा मौज–मस्ती के लिए गलत लोगों की संगति पकड़ सकते हैं। आपको शिक्षा के प्रति दिलचस्पी नहीं हो सकती है तथा आपकी बुद्धिमत्ता एवं भाग्य साथ नहीं दे सकती है। आपकी संतान प्रेरणा के श्रोत होंगे तथा आप स्वयं एक आकर्षक एवं बातूनी हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के चतुर्थ भाव का विश्लेषण

माता, भूमि–भवन–वाहन, शिक्षा और स्वयं का परिवार और सुःख

आपकी माता एक शिक्षिका या लेखिका हो सकती हैं। आपके घर में किताबों की संख्या बहुत अधिक हो सकती है। आप बौद्धिक जीवन व्यतीत कर सकते हैं तथा आपके मित्र या बहुत करीबी मित्र नहीं हो सकते हैं। आप अपने अध्ययन क्षेत्र में उत्तम कार्य कर सकते हैं एवं एक लेखक बन सकते हैं। गूढ़ एवं कम विख्यात विषयों की ओर आपमें तीव्र व अनवरत रूचि हो सकती है। आप एक व्यापारी के रूप में अच्छा कार्य कर सकते हैं। संभवतः आप जीवन पर्यन्त अपना घर बदलते रह सकते हैं। आप ऐसे घर में निवास कर सकते हैं, जिसका संबंध किसी प्रकार से आपके पेशे से हो सकता है। आप अधिक से अधिक धन जमा करने में लगे रहेंगे, हालांकि उस संपत्ति को बचाये रखने में आप असमर्थ हो सकते हैं। आमतौर पर आप बहुत बुद्धिमान होंगे एवं तुरंत से संपत्ति जमा करने में सक्षम होंगे। आप प्रभावशाली लोगों के संपक्र में आयेंगे, लेकिन आपका खुलापन एवं सहानुभूति का स्वभाव कुछ अनैतिक लोगों को संपर्क में लेकर आ सकता है, जो कि आपको बदनाम एवं दुःखी कर सकते हैं। हालांकि आप अपनी स्थिति को पुनः प्राप्त करने एवं बदनामी को साफ करने में सक्षम होंगे।

आपकी कुण्डली के चौथे भाव में राहु स्थित है, आपके मन में असंतोष बढ़ सकता है। आपका वैवाहिक जीवन बहुत जटिल हो सकता है एवं भावनात्मक असंतोष बढ़ सकता है। आप शारीरिक रुप से कमजोर या मानसिक रुप से असंतुलित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के पंचम् भाव का विश्लेषण

सन्तान, विद्वता और बुद्धि, पूर्वपुण्य, लेखन, मानसिक स्थिति और ज्ञान

आपको खुशहाल पारिवारिक जीवन तथा योग्य संतानों की प्राप्ति होगी। आप शिक्षा एवं बौद्धिक विकास से संबंधित कार्यों में दिलचस्पी नहीं ले सकते हैं। आपकी दिलचस्पी जीवनसाथी, बच्चे एवं पैसे में हो सकती है। आपको जीवन के उंच्च मूल्यों में दिलचस्पी केवल सतही तौर पर हो सकती है। आप अपने परिवार एवं समाज के लिए नायक की तरह होंगे जो कि सफलता एवं व्यक्तिगत उपलब्धि प्राप्त करना चाहता है। आपके पिता धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा भक्ति मार्ग द्वारा धर्म का पालन करेंगे। उनका जीवन सुखमय व्यतीत हो सकता है। आपकी माता धनी, किन्तु रोगी प्रकृति की हो सकती हैं। आपके बड़े सहोदर अथवा मामा/मौसा को खतरा हो सकता है। आप मानसिक रूप से बहुत चिन्तित व विचलित रह सकते हैं। आपकी पत्नी प्रतियोगिता या प्रतिस्पर्द्धाओं में सफलता अर्जित करेंगी तथा उनको स्वयं की आय भी प्राप्त होगी। आपकी संतान सुन्दर व व्यवहार कुशल होगी तथा अपने कार्य क्षेत्र में भी उत्तम कार्य करेगी। आपकी सबसे बड़ी संतान प्रेम विवाह कर सकती है। उसको अपने जीवनसाथी के माध्यम से धन की प्राप्ति हो सकती है तथा वह धनी व संपन्न हो सकती है।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा कुम्भ राशि में स्थित है। यह एक सकारात्मक, स्थिर और वायुतत्व की राशि है, जो शनि द्वारा शासित है और घड़े का पानी खाली करते हुए एक परिपक्व मनुष्य की आकृति द्वारा चिन्हित है। सामान्यतः चंद्रमा के साथ इस राशि में जन्म लेने वाला व्यक्ति अपनी गंभीर प्रकृति और चारित्रिक बल के लिए जाना जाता है। अन्वेषी दिमाग, विचारों में अथाह गहराई, आत्मसातीकरण की शक्ति और अपार धैर्य आपकी विशिष्ट विशेषताएं होंगी। चंद्रमा पर पड़ने वाले अन्य ग्रहों के संशोधनकारी प्रभावों के आधार पर, कुछ विशिष्ट परिवर्तन होने की भी प्रबल संभावना है। एक सीमा तक, यह आपको विषादपूर्ण स्वभाव, एकान्तप्रिय और रात्रि में काम करने वाला व्यक्ति बना सकता है। फिर भी आप दार्शनिक दृष्टिकोण वाले होंगे और उपयोगी कार्यों में संलग्न रहेंगे– जो कि वैज्ञानिक या शिल्प–विज्ञानीय अथवा अन्य उच्च तकनीकी से संबंधित हो सकता है।

आप कुछ हद तक सुस्त हो सकते हैं, किन्तु आप निश्चिन्त होंगे, प्रबल संभावना है कि आप कुछ ऐसा नया व अनूठा लेकर आएंगे– जिसके लिए आपका नाम व यश दूर–दूर तक फैलेगा। आप शान्ति व धैर्य के साथ मूल्य व महत्व जोड़ेंगे एवं ज्ञानी, बुद्धिमान व पवित्र लोगों की संगति की खोज करेंगे। जबकि दूसरी ओर, आप दयालु प्रवृति और कलात्मक झुकाव लिए हुए तीव्र बुद्धि व हंसमुख प्रकृति वाले व्यक्ति होंगे। आप गंभीर व शांत स्वभाव वाले होंगे– पूर्णतः उपद्रवी भावनाओं से रहित। किसी महत्वपूर्ण सभा और सम्मेलन में सम्मिलित होना आप एक नैतिक कर्तव्य व जिम्मेदारी समझेंगे। भौतिक विज्ञान, इंजीनियरिंग, तकनीकी, कृषि और सजावटी–कला जैसे विषय आपको अत्यधिक आकर्षित कर सकते हैं। आप अपने भाग्य के निर्माता स्वयं हो सकते हैं और यह आपके लिए किसी दूरस्थ अतंर्देशीय स्थान अथवा विदेश में भी संभव हो सकता है।

आप ऐसे विषयों की ओर भी अत्यंत आकर्षित हो सकते हैं, जो मूलभूत रूप से असाधारण होंगे, तो भी वास्तविक व अनुठे होंगे। ज्योतिष, हस्तरेखाशास्त्र, अंकज्योतिष, स्वप्न–फल आदि जैसे तंत्र–मंत्र व रहस्यमयी विषयों में गहन रूचि होने के कारण, आप जहां भी रहेंगे आकर्षण का केन्द्र बने रहेंगे। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे लोग भी हो सकते हैं, जो आपके झुकाव को पक्षपातपूर्ण समझ सकते हैं और आपको सनकी की संज्ञा दे सकते हैं। किन्तु सामान्य लोग आपको विकसित दिमाग, आशावादी प्रकृति, दार्शनिक दृष्टिकोण, सहानुभूतिपूर्ण और लोकोपकारी प्रवृत्ति से परिपूर्ण एक सुयोग्य व्यक्ति मानेंगे।

आप अपने को मात्र एक परिवार में जन्मे या उससे संबंधित, सीमित अधिकार व जिम्मेदारी युक्त व्यक्ति समझने की बजाय, अपने जीवन को किसी प्रकार के उद्देश्य की पूर्ति के रूप में देखेंगे और दूसरों के लिए किए गए अच्छे कार्यों के द्वारा अपने जीवन के उद्देश्य की पूर्ति में सक्षम होने के आधार अपनी सफलता का आकलन करेंगे। आप किसी विशिष्ट कार्य के लिए अपना जीवन समर्पित कर सकते हैं– इसके लिए आप सक्रियता से किसी धर्मार्थ संस्था या मानवतावादी संगठन के लिए कार्य कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली के षष्ट भाव का विश्लेषण

रोग और कष्ट, शत्रु, दुर्घटना, ननिहाल, नौकर और चोट

आपके जीवन में किसी तरह के स्वास्थ्य संबंधित समस्यायें उत्पन्न हो सकते हैं। आप लंबे समय तक अपने निवास स्थान से दूर रह सकते हैं। कुछ ऐसी बीमारियां एवं अपमानजनक स्थितियां सामने आ सकती हैं, जिसके बारे में खुले तौर पर चर्चा भी नहीं की जा सकती। आप दोहरे चरित्र वाले हो सकते हैं। इसकी वजह से आपके व्यक्तित्व में कमी आ सकती है। आप धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे, किन्तु धार्मिक क्षेत्र में किए गए आपके प्रयासों को सफलता नहीं मिल सकती है। आप कुछ नई अवधारणाओं व तथ्यों का पता लगाने के लिए अनवरत प्रयास कर सकते हैं। आपको अपने प्रयासों में सफलता बहुत कठिनाई से प्राप्त हो सकती है। आप सामान्यतः मलाशय व उत्सर्जन प्रणाली से संबंधित रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपको पाचन क्रिया से संबंधित रोग भी हो सकता है। संभवतः आपके दीर्घायु पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। आप पर्याप्तता व प्रचूरता के मध्य भी दुखी महसूस कर सकते हैं। आप वित्तिय मामलों के कारण परेशान रह सकते हैं। आप संकोची व एकांतप्रिय होंगे, जिसके कारण आपके शत्रु आपकी कमजोरियों का पता लगाने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। आपके शत्रु हिंसक प्रवृत्ति के हो सकते हैं, जो दुराचारी एवं तेज रफतार से जीने वाले हो सकते हैं। आपको चोर, पीठ पीछे धोखा देने वाले लोगों तथा सरीसृपों से खतरा हो सकता है। आप दूराचारी प्रवृत्ति के लोगों से दूरी बनाकर रह सकते हैं। आपके पिता कई बार अपनी नौकरी गवां सकते हैं। आपकी पत्नी बहुत खर्चीली प्रकृत्ति की हो सकती हैं। आपकी संतान अपने शिक्षा के माध्यम से धनोपार्जन कर सकती है। आपके बड़े भाई/बहन किसी कार्य में संलग्न नहीं हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के सप्तम् भाव का विश्लेषण

जीवनसाथी, साझेदारी, वैवाहिक सुख, प्रतिष्ठा और जीवन के प्रति उत्साह

आप व्यापार प्रबंधन के कार्य में संलग्न हो सकते हैं तथा धन–संपदा से संपन्न हो सकते हैं। आपकी पत्नी बहुत धार्मिक प्रवृत्ति व स्वतंत्र विचारों की एवं भाग्यशाली महिला होंगी, वह शांतिप्रिय व प्रसन्नचित्त हो सकती है, किन्तु बुद्धिमान नहीं हो सकती है। आपकी पत्नी परिष्कृत, शिक्षित, संस्कारी, ईमानदार तथा उदारचित्त होगी। आपकी पत्नी को केवल कारण व तर्क से ही संतुष्ट किया जा सकता है। आपको अपने पारिवारिक जीवन में दुःखों का सामना करना पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी सम्मानित होंगी लेकिन आपसी रिश्ते में गर्माहट की कमी हो सकती है। कोई जरुरी नहीं है कि रिश्तों में गर्माहट की कमी यौन संबंधों के कारण हो। ज्यादा संभावना है कि शारीरिक बीमारी या मनोवैज्ञानिक विषमता के कारण भी ऐसा हो सकता है। आपके जीवनसाथी को गैर पारंपरिक मौज–मस्ती की भी इच्छा हो सकती है। कारण जो भी हो, आपका वैवाहिक जीवन खुशहाल नहीं हो सकता।

आपकी कुण्डली के अष्टम् भाव का विश्लेषण

आयु, असाध्य रोग, मानसिक कष्ट, अप्रत्यासित लाभ–हानि, अड़चनें और छुपी हुई प्रतिभा

आप शिक्षित एवं धार्मिक होंगे। आप प्रकृति के उन शक्तियों के प्रति आवेगी हो सकते हैं, जो व्यक्तिगत विचारों के स्तर को सामाजिक चिंता का विषय बनाने में सक्षम हो सकता है। आप संकीर्ण मानसिकता वाले हो सकते हैं। आप किसी भी विषय का अध्ययन बहुत गहराई के साथ कर सकते हैं। आपको अपने जीवन काल में एक बार अपने व्यवसाय में आघात लग सकता है। आपको रोगादि से ग्रसित होने के कारण शल्य चिकित्सा से गुजरना पड़ सकता है अथवा गंभीर चोट लगने के कारण आपको कष्ट हो सकता है। आप विदेश यात्रा पर जा सकते हैं, जहां आपको कष्ट हो सकता है।

आपकी कुण्डली के नवम् भाव का विश्लेषण

पिता, गुरू, धार्मिक रूचि, तीर्थ यात्रा, दानशीलता और भाग्य

आप आध्यात्मिक रुप से अधिक रमे हुए हैं तो आपकी अधिक उन्नति होगी। आपको अधिक आध्यात्मिक होने के लिए बल प्राप्त होगा, जिससे कि आप बड़े पैमाने पर मानवता के जरुरतों के प्रति संवेदनशील होंगे। काफी समृद्ध स्थिति एवं सुख प्राप्ति के बाद आप उन शक्तियों से प्रभावित होंगे, जो कि मानवता एवं संसार की उन्नति का मार्गदर्शन करती है। आप आध्यात्मिकता के पथ पर काफी तेजी से प्रगति करेंगे। आपके पिता सामाजिक गतिविधियों में अधिक संलग्न हो सकते हैं तथा सामाजिक अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने का प्रयास कर सकते हैं। आपके पिता को अपने जीवन में असफलता, आघात व निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आप स्वतन्त्र विचारधारा के व्यक्ति हो सकते हैं तथा धर्म व दर्शन के संबंध में आपके अपने विचार हो सकते हैं। धर्म के प्रति आपका रवैया बहुत रुढ़िवादी व अनुशासित हो सकता है। आपको अपने धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति के माध्यम से सामाजिक उपकार का कार्य करने के लिए मिल सकता है। आपके पेशे का कोई संबंध कानून से हो सकता है तथा संभवतः आपको अपने जीवन में कानूनी मामलों में भी उलझना पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली के नौवें भाव में चन्द्रमा स्थित है। आपको विलासिता के सारे सुख–साधन प्राप्त होंगे, लेकिन आप हर सुख का आनंद प्राप्त करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। आप दूसरों के लिए काम कर सकते हैं एवं जरुरतमंदों को अपने धन का कुछ हिस्सा दे सकते हैं।

आपकी कुण्डली के दशम् भाव का विश्लेषण

ब्यवसाय, कर्म, आजिविका के साधन, ब्यापार और धार्मिक कार्य

आप बहुत धार्मिक होंगे तथा परंपरागत मूल्यों एवं नैतिकता की वकालत करने वाले होंगे। आपकी किसी उद्देश्य के लिए कार्य करना चाहेंगे तथा जब तक आपको सर्वोतम फल प्राप्त नहीं होगा, तब तक आप संतुष्ट नहीं हो सकते। मीन राशि धार्मिक साहित्य, समुद्र, मछली, जहाज, पारम्परिक रीति–रिवाज आदि का कारक है तथा आप इन्हीं में से किसी कारक को अपने पेशे के रुप में अपना सकते हैं। आप अपने वास्तविक इरादे को अंधेरे में रख सकते हैं तथा सबसे अधिक धार्मिकता का प्रदर्शन कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली के दसवें भाव में मंगल मीन राशि में स्थित है। आप किसी आदर्शवादी कार्य को आगे बढ़ाने में संलग्न होंगे, जिसके लिए आपको अपनी संपत्ति का बड़ा हिस्सा त्याग करना पड़ सकता है तथा समाज के भी क्रोध का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली के दसवें भाव में केतु मीन राशि में स्थित है। आपके चारों तरफ आपके कार्यों, जीवन एवं जीवन के अंत से संबंधित एक रहस्यमयी प्रभामंडल होगी। आपके बारे में सब कुछ असामान्य हो सकता है। हालांकि आपको अपने जीवन में किसी चीज की कमी नहीं हो सकती है, लेकिन इसके साथ ही आपके पास ऐसा कुछ भी नहीं हो सकता है, जिसे आप अपनी उपलब्धि के रुप में पेश कर सकें। इस तरह की विरोधाभाषी स्थिति एक रहस्य के रुप में आपके साथ जुड़ी रह सकती है।

आपकी कुण्डली के एकादश भाव का विश्लेषण

लाभ, भौतिक सुख की प्राप्ति, लोभ, पुरस्कार और दण्ड और स्वास्थ्य लाभ

आपको धनोपार्जन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। धन अर्जित करने के लिए आपको काफी संघर्ष करना पड़ सकता है तथा किसी संस्था में कर्मचारी के रुप में काम करना पड़ सकता है। आमतौर पर आप किसी सरकारी विभाग में कार्यरत हो सकते हैं, जहां पर रोजाना एक ही काम करना पड़ सकता है। ऐसा करते हुए आप बहुत दुःखी महसूस कर सकते हैं। जब तक आप अपने करियर में सक्रिय भूमिका नहीं निभायेंगे, तब तक आपको मनोवैज्ञानिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आप मुख्य रुप से सामाजिक जीवन, कामुक सुख तथा अपना व्यक्तित्व एवं आकर्षण प्रदर्शित करने में रुचि रख सकते हैं। जब तक आपकी ये इच्छायें पूरी नहीं होंगी, तब तक आपको ऐसा महसूस होगा कि आप जीवन के आखरी दौर से गुजर रहे हैं। आपको सरकार या विदेश से लाभ प्राप्त हो सकता है तथा आपको चौपायों के माध्यम से भी धन–लाभ प्राप्त हो सकता है। आप प्रतियोगिता या प्रतिस्पर्द्धा में सफलता अर्जित कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली के द्वादश भाव का विश्लेषण

ब्यय, अलगाव, हानि, सुख, निद्रा, विदेश यात्रा और मानसिक संतुलन

आप अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए व्यय करना पसन्द कर सकते हैं। आपका कोई प्रेम–प्रसंग नहीं हो सकता है। आपकी पत्नी उत्तम भोजन व उत्तम रहन–सहन पर खर्च करना पसन्द कर सकती हैं। आपकी संतान किसी नए स्थान पर जाकर निवास कर सकती है तथा आपको अपनी संतान से अधिक खुशी व सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आप भौतिक गतिविधियों में अधिक संलग्न रह सकते हैं। अपनी मौजूदा परिस्थितियों से आप असंतुष्ट रहेंगे। आप अपनी परेशानियों को कम करने के लिए हमेशा कुछ न कुछ करते रहेंगे, लेकिन आप सही दिशा में नहीं जा सकते हैं। आप भौतिक सुख–साधनों की इच्छा को पूरा करने के लिए अपने–आप को पेशानियों में भी डाल सकते हैं।

आपकी कुण्डली के बारहवें भाव में बृहस्पति स्थित है। अपनी बेकार की आदतों के कारण आपके पारिवारिक जीवन में बहुत सारी कठिनाइयां उत्पन्न हो सकती हैं। हालांकि आप सम्मानित होंगे तथा दूर के किसी स्थान पर प्रसिद्ध भी होंगे। आपकी बौद्धिक क्षमता की वजह से आपको अपने जीवन में कोई स्थायी सहयोग प्राप्त नहीं होगा। हालांकि आपको अपने संपर्कों से आर्थिक मदद प्राप्त हो सकती है। आप कई तरह के गंभीर रोगों से पीड़ित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के बारहवें भाव में शनि स्थित है। आप कई देशों की यात्रा करने में सक्षम होंगे और इसकी वजह से आपकी चल एवं अचल संपत्ति बर्बाद हो सकती है। समाज में आपके सम्मान में कमी हो सकती है, लेकिन आप किसी भी तरह की सार्वजनिक प्रक्रिया से नहीं डरेंगे। आपके अंदर नैतिकता की भी कमी हो सकती है।

शुभ और अशुभ ग्रह

1– बुध, पहले व चौथे भाव का स्वामी, सर्वाधिक शुभ है।
2– चंद्रमा तटस्थ है।
3– शुक्र, पांचवें भाव का स्वामी शुभ है।
4– सूर्य, मंगल और शनि अशुभ हैं।
5– बृहस्पति मारकेश है।

सर्व ग्रह दोष और उपाय

वैदिक ज्योतिष में, मुख्य रूप से मंगल, शनि, राहु और केतु के अशुभ प्रभाव चुनौतियाँ ला सकते हैं लेकिन विकास और परिवर्तन के अवसर भी ला सकते हैं। ये ग्रह, हालांकि कठिन हैं, हमें हमारे सुविधा क्षेत्र से बाहर निकालते हैं और आत्म-सुधार के लिए प्रेरित करते हैं। रत्न, मंत्र, अनुष्ठान, उपवास और दान सहित वैदिक उपचारों का उपयोग इन हानिकारक प्रभावों को कम करने और हमारी ऊर्जा को ब्रह्मांडीय गति के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, शनि के प्रभाव को कम करने के लिए नीला नीलम पहनना, विशिष्ट मंत्रों का जाप करना या जरूरतमंदों को भोजन देना शामिल हो सकता है। ये उपाय तत्काल समाधान नहीं हैं, लेकिन इस सदियों पुराने ज्ञान में लगातार अभ्यास और विश्वास हमें जीवन की चुनौतियों से बेहतर ढंग से निपटने में सहायता कर सकता है। इसलिए, अशुभ ग्रहों का प्रभाव बाधाएं नहीं हैं, बल्कि आत्मनिरीक्षण और आध्यात्मिक विकास के संकेत हैं, जो वैदिक उपचारों द्वारा सुगम होते हैं।

सूर्य से संबंधित दोष और उनके उपाय

अमावस्या तिथि का जन्म

यदि आपका जन्म अमावस्या के दिन हुआ है, तो इस दिन जन्म होने के कारण आपके पारिवारिक और मानसिक सुख में कमी, संतान सुख में बाधा और यथोचित मान-सम्मान में कमी आ सकती है। आपको सफलता के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ सकता है और योग्यता होते हुए भी आपको मान्यता नहीं मिल सकती है।

आपका जन्म अमावस्या के दिन नहीं हुआ है।

शांति के उपाय –

अग्निकोण में एक कलश स्थापित करके उसमें जल भरें तथा नीम, आम, गूलर, बड़, पीपल आदि के पत्तों से युक्त टहनियों से सजायें। इस कलश को लाल सफेद कपड़े के जोड़े से लपेटें। मंत्रों से सभी देवों का आह्वान करें। तत्पश्चात, कलश पर आपोहिष्ठा मंत्र से जल छिड़क कर अमावस्या की अधिष्ठात्री की पूजा करें। रुद्रसूक्त से रुद्राभिषेक करके घी से छायापात्र का दान करें, तील, चावल, घी से हवन करें और 108 आहुतियां दें। जरूरतमंदों को अपनी सामर्थ्य के अनुसार सोना, चांदी, तांबा और अन्न का दान करें।

कार्तिक मास का जन्म –

सूर्य का अपनी नीच राशि तुला में रहने के दौरान जन्म लेने वाले जातक पर कार्तिक जन्म का दोष लागू होता है। अपने सबसे नीच बिन्दु के आस-पास कार्तिक जन्म दोष का प्रभाव सबसे अधिक होता है।

आपका जन्म लग्न मिथुन है। शास्त्रों के अनुसार, कार्तिक मास में जन्म लेने के कारण आपके पारिवारिक और संतान सुख में कमी हो सकती है।

आपका जन्म कार्तिक मास में नहीं हुआ है।

शांति के उपाय –

कार्तिक जन्म शांति की पूजा किसी भी संक्रान्ति के दिन, सूर्य के तुला राशि में होने पर, रविवार व हस्त नक्षत्र का योग होने पर, जातक के जन्म नक्षत्र में, ग्रहण के दिन अथवा क्रान्तिसाम्य काल में किया जा सकता है।

ईशान कोण में पूजा वेदी का निर्माण करके गेंहू के ढेर पर एक कलश की स्थाना करें। पूजा बेदी के चारों तरफ प्रदक्षिणा क्रम में चार और कलशों की स्थापना करें। इन्हें भी गेहूँ के ढेर पर रखें। पूरब वाले कलश पर ब्रह्मा जी, दक्षिण वाले कलश पर विष्णु, पश्चिम वाले कलश पर रूद्र और उत्तर वाले कलश पर सूर्य देव की पूजा करें एवं उनके मंत्रों का हजार या दस हजार बार जप करें। त्र्यम्बकम मंत्र का भी इतना ही जप करें। जप संख्या का दशांश हवन, छाया पात्र दान और सूर्य को अर्घ्य दें। इसके पश्चात यथासंभव अन्न, वस्त्र व फलों का दान करें।

संक्रांति के दिन का जन्म –

जिस दिन सूर्य अपनी अगली राशि में प्रवेश करता है, वह दिन संक्राति दिन कहलाता है। यदि आपका जन्म संक्रांति के दिन हुआ है, तो इस दिन जन्म लेने के कारण आपके वंश वृद्धि, आर्थिक स्थिति और स्वास्थ्य पर सूर्य का अशुभ प्रभाव पड़ सकता है।

आपका जन्म संक्रांति के दिन नहीं हुआ है।

शांति के उपाय –

इस दोष के निवारण के लिए पूजा स्थान में गेहूँ, चावल और तिल से एक सीध में 4 : 2 : 1 के अनुपात में ढेर बनायें और उपर पर 3 कलश स्थापित करें। इन कलशों में पवित्र स्थान का जल, घी, दूध, दही, शहद और चुटकी भर रेत डालें। बीच वाले कलश पर संक्राति देवी, दायें कलश पर चंद्रमा और बायें कलश पर सूर्य की पूजा करें। सभी मंत्रों के पहले व्याहृतियों का उच्चारण अवश्य करें।

सार्पशीर्ष में जन्म –

यदि आपकी कुण्डली में सार्पशीर्ष दोष लागू हो रहा है, तो इस दोष के साथ जन्म लेने के कारण आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है तथा आप सब प्रकार के सुखों से हीन हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में सार्पशीर्ष दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

इस दोष के कुफल को कम करने के लिए शाम के समय शिवालय में घी का दीया जलायें, जब तक कि शांति ना हो जाये। जब सूर्य मूल या श्लेषा नक्षत्र में हो तो देव पूजन के पश्चात गणपति के वेदमंत्र, पुरूषसूक्त, सूर्यसूक्त और रूद्रसूक्त का पाठ करने के पश्चात रूद्राभिषेक करें। फिर विष्णु के मंत्र से 108 आहुतियां दें।

क्रांतिसाम्य या महापात में जन्म –

यदि आपका जन्म क्रांतिसाम्य या महापात में हुआ है, तो आपके स्वास्थ्य और शारीरिक सुखों में कमी आ सकती है। आप असहाय हो सकते हैं।

आपका जन्म क्रांतिसाम्य या महापात में नहीं हुआ है।

शांति के उपाय –

इस दोष के कुफल को कम करने के लिए शाम के समय शिवालय में घी का दीया जलायें, जब तक कि शांति ना हो जाये। जब सूर्य मूल या श्लेषा नक्षत्र में हो तो देव पूजन के पश्चात गणपति के वेदमंत्र, पुरूषसूक्त, सूर्यसूक्त और रूद्रसूक्त का पाठ करने के पश्चात रूद्राभिषेक करें। फिर विष्णु के मंत्र से 108 आहुतियां दें।

सपात सूर्य दोष –

यदि आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य राहु या केतु के साथ स्थित है, तो आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू हो रहा है। इस स्थिति के कारण आपकी निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है और आकस्मिक दुर्घटना का भी योग बन सकता है।

आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

आपको त्र्यम्बक मंत्र का संपुट लगाकर रूद्रसूक्त का पाठ करना चाहिए। हर साल अपने जन्मदिवस के दिन प्रातः घी में दूब को डूबोकर त्र्यबकम मंत्र से 28 या 108 आहूतियां दें। उस दिन व्रत भी रखें।

सूर्य ग्रह के साधारण उपाय

प्रातः उठने के बाद मुँह धोकर गीले मुँह ही पूर्व दिशा की ओर मुँह करके गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। स्नान करने के बाद गणेश भगवान का द्वादशाक्षर स्तोत्र और सूर्य कवच का पाठ करके सूर्य को जल का अर्घ्य दें। सूर्य की ओर मुँह करके सूर्य का अष्टाक्षर मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। रात को सोने से पहले गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें।

1– सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।
2– माता–पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
3– मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग–द्वेष से दूर रहें।
4– अकारण ही क्रोध करने से बचें।

चन्द्रमा से संबंधित दोष और उनके उपाय

समान नक्षत्र दोष

यदि आपका जन्म आपके अपने भाई–बहनों अथवा अपने माता–पिता के नक्षत्र में हुआ है, तो एक नक्षत्र जन्मदोष लागू होता है। इस दोष की वजह से आपके पूरे परिवार की सुख–शांति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ सकता है।

शांति के उपाय –

अपने घर में किसी साफ–सुथरे स्थान पर पूजा बेदी का निर्माण करें और उस पूजा स्थान से ईशान कोण में एक कलश स्थापना करें। उस कलश को नये वस्त्र से ढक दें। देवताओं की पूजा के पश्चात सारे नक्षत्रों की पूजा करें। उसके बाद कलश पर जन्म नक्षत्र के देवता की विशेष रूप से पूजा करें। जन्म नक्षत्र के मंत्र से 108 आहुतियां देकर हवन करें। अपनी सामर्थ्य अनुसार अन्न, वस्त्र आदि का दान करें। जब चंद्रमा बड़े बिम्ब वाला हो, शुभ लग्न हो तथा रिक्ता तिथि एवं भद्रा करण ना हो, तो चंद्रमा के अनुकूल गोचर में यह उपाय करें।

लग्नस्थ चन्द्र दोष –

यदि आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा लग्न में स्थित है, तो आपकी विचारधारा इस तरह से दृढ़ हो सकती है कि आप समयानुसार अपने को बदल नहीं सकते हैं, जिसकी वजह से आप हठी और काफी हद तक अव्यवहारिक दृष्टिकोण वाले बन सकते हैं। आपकी मानसिक स्थिति के कारण आपके कार्य करने की क्षमता प्रभावित हो सकती है।

आपकी कुण्डली में लग्नस्थ चन्द्र दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

आपको चंद्रमा के सरल उपाय करने के साथ–साथ रुद्रसूक्त का भी पाठ करना चाहिए।

क्षीण चंद्र दोष –

यदि आपका जन्म कृष्णपष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की पंचमी के बीच में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में क्षीण चंद्र दोष लागू होता है। आप तुनकमिजाज, काम में लापरवाही बरतने वाले एवं बिना किसी लक्ष्य के काम करने वाले हो सकते हैं। कभी–कभी अवसाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है।

आपकी कुण्डली में क्षीण चन्द्र दोष लागू हो नहीं रहा है।

शांति के उपाय –

इस दोष को दूर करने के लिए चंद्रमा शांति के सरल उपाय के साथ–साथ भगवान शंकर की पूजा करें। चंद्रमा जितना अधिक क्षीण हो, पूजा की मात्रा उतनी अधिक होनी चाहिए।

केमद्रुम योग दोष –

यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा के आगे एवं पीछे के भावों में कोई ग्रह नहीं है, तो आपकी कुण्डली में केमद्रुम योग दोष लागू होता है। आपको जीवन पर्यन्त धन की कमी लगी रह सकती है, जिसके कारण पारिवारिक सुख और मानसिक शांति में कमी हो सकती है। यदि कुण्डली में चंद्रमा के साथ कोई ग्रह स्थित है या किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है या चंद्रमा या लग्न से केन्द्र में कोई ग्रह स्थित है, तो केमद्रुम योग का प्रभाव कम हो जाता है।

आपकी कुण्डली में केमद्रुम योग दोष लागू हो नहीं रहा है।

शांति के उपाय –

इस दोष को दूर करने के लिए चंद्रमा शांति के सरल उपाय के साथ–साथ ऋषि वशिष्ठ के द्वारा लिखे हुए भगवान शंकर के दारिद्र्यदहन स्तोत्र का पाठ करें।

सपात (चंद्रमा राहु या केतु के साथ) चन्द्र दोष –

यदि आपकी जन्म कुण्डली में चंद्रमा राहु या केतु के साथ स्थिति है, तो आपकी कुण्डली में सपात चंद्र दोष लागू हो रहा है। इस स्थिति के कारण आपकी निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है और आकस्मिक दुर्घटना का भी योग बन सकता है।

आपकी कुण्डली में सपात चन्द्र दोष लागू हो नहीं रहा है।

शांति के उपाय –

आपको त्र्यम्बक मंत्र का संपुट लगाकर रुद्रसूक्त का पाठ करना चाहिए। हर साल अपने जन्मदिवस के दिन प्रातः घी में दूब को डूबोकर त्र्यबकम मंत्र से 28 या 108 आहूतियां दें। उस दिन व्रत भी रखें।

नीच चंद्र दोष –

यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ है। शास्त्रों के अनुसार, आपकी कुण्डली में नीच चंद्र दोष लागू हो रहा है। इस दोष के कारण आपकी मानसिक स्थिति पर बुरा असर पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में नीच चंन्द्र दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

रोजाना स्नान के पश्चात शिव संकल्प सूक्त का पाठ करें (कम से कम पहला मंत्र अवश्य जपें)। शिव मंत्र का जप करें एवं श्रीसूक्त का पाठ करें।

कृष्ण चतुर्दशी जन्म दोष –

आपका जन्म कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन हुआ है। आपका संतान पक्ष कमजोर हो सकता है। आपके वैवाहिक जीवन में बाधा आ सकती है, परिवार में मान–सम्मान की कमी हो सकती है, धन की कमी हो सकती है तथा जीवनसाथी पर भी बुरा असर पड़ सकता है। आपके मन में आत्मघात की प्रवृति ज्यादा हो सकती है।

आपकी कुण्डली में कृष्ण चतुर्दशी जन्म दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

चारों दिशाओं में चार कलश की स्थापना करें और पाँचवां कलश अग्निकोण में स्थापित करें (शिवजी के लिए)। सामान्य पूजा करने के पश्चात अग्निकोण वाले कलश पर त्र्यम्बकम मंत्र का जप करते हुए शिव जी की पूजा करें। पूर्व की ओर से शुरू करते हुए पूर्वी कलश पर 'आनो भद्राः', दक्षिणी कलश पर 'भद्रा अग्नेः', पश्चिमी कलश पर 'पुरुषसूक्त' और उत्तरी कलश पर 'कदुद्राय प्रचेतसे' मंत्र का जप करें। शिव जी का अभिषेक करने के पश्चात नौ ग्रहों की पूजा करें। सामर्थ्यानुसार अन्न, धन का दान करें।

गण्डमूल दोष –

यदि आपका जन्म नक्षत्र रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, मूल, श्लेषा या मघा है, तो आपकी कुण्डली में गण्डमूल दोष लागू होता है।

आपकी कुण्डली में गण्डमूल दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

भगवार शंकर की पूजा करें। गण्डमूल शांति के लिए जन्म के बारहवें दिन, सताइसवें दिन या एक साल के भीतर कभी भी जन्म नक्षत्र में गण्डमूल की शांति करवा लेनी चाहिए।

नक्षत्र गण्डांत दोष –

यदि आपका जन्म चंद्रमा के रेवती, ज्येष्ठा या श्लेषा नक्षत्र के अंतिम बारह मिनट में या मूल, अश्विनी, मघा नक्षत्र के शुरूआती बारह मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में नक्षत्र गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में नक्षत्र गण्डांत दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

नक्षत्र गण्डान्त दोष के निवारण के लिए नक्षत्र के देवता और चंद्रमा की पूजा करनी चाहिए।

लग्न गण्डांत दोष –

यदि आपका जन्म लग्न के रेवती, ज्येष्ठा या श्लेषा नक्षत्र के अंतिम बारह मिनट में या मूल, अश्विनी, मघा नक्षत्र के शुरूआती बारह मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में मूल गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में लग्न गण्डांत दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

लग्न गण्डान्त दोष के निवारण के लिए लग्नेश ग्रह की पूजा करनी चाहिए।

आपका लग्नेश बुध और उसका मंत्र निम्न है––

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वामिष्यपूर्ते सँ सृजेथामयं च।
अस्मिन् सदस्थे अध्युत्तरस्मिन् वियवे देवा यजमानश्च सीदत्।।

तिथि गण्डांत दोष –

यदि आपका जन्म पूर्णा (5, 10, 15) तिथि के अंतिम 48 मिनट में या नन्दा (1, 6, 11) तिथि के शुरूआती 48 मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में तिथि गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में तिथि गण्डांत दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

तिथि गण्डान्त दोष के निवारण के लिए तिथि के देवता की पूजा करनी चाहिए।

तिथि देवता का मंत्र––बुध और उसका मंत्र निम्न है––

कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्।।

चन्द्रमा ग्रह के साधारण उपाय

सबसे पहले सूर्य दर्शन कर गायत्री मंत्र जपें। फिर नहा–धोकर गणेश, शिवजी और पार्वती का मंत्र जाप करें। फिर ऊँ नमः शिवाय मंत्र का 108 बार जप करें। चंद्रमा कवच का पाठ करें और सूर्य को अर्घ्य दें। सोमवार के दिन मांस–मदिरा का सेवन ना करें।

1– सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।
2– माता–पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
3– मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग–द्वेष से बचना चाहिए।
4– अकारण ही क्रोध करने से बचना चाहिए।

मंगल से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी कुण्डली में मंगल मीन राशि में बैठा हुआ है। आपको अपने सगे-संबंधियों की वजह से नुकसान हो सकता है या व्यापार में धोखा खा सकते हैं। प्रायः घर से बाहर होने के कारण आपको मानसिक कष्ट उठाना पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में मंगल दसवें भाव में स्थित है। आपका अपने उच्चाधिकारियों तथा बुजुर्ग परिवारजनों से कम ताल-मेल रहेगा। जिसकी वजह से आपकी मानसिक स्थिति पर इसका बुरा असर पड़ सकता है।

यदि आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है, तो आप मंगल कष्ट निवारक मंत्र का प्रतिदिन 8 बार जप करें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ संबंधों में सामंजस्य की कमी हो, तो आप रामचरितमानस के सुन्दर काण्ड का पाठ करें।

यदि आपके घर में अशांति हो तो ऊँ हां हां सः खं खः। मंत्र का 108 बार जाप करें। यदि यह पाठ घर के मुखिया या उनकी पत्नी के द्वारा किया जाता है, तो लाभ मिलने की संभावना अधिक हो सकती है।

यदि आपमें उत्साह की कमी या ज्यादा क्रोध अथवा अपने विचारों को व्यक्त ना कर पाने की कमी हो, तो आपको प्रतिदिन 28 बार मंगल गायत्री का जप करना चाहिए।

यदि मंगल दोष के कारण आपको बार-बार या साधारण चोट इत्यादि लगती है, तो आपको मंगल कवच का पाठ करना चाहिए।

यदि मंगल के कुप्रभाव आपकी संतान पर आ रहे हों तथा संतान का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता हो अथवा आपकी बात ना मानते हों, तो आपको मंगल कष्ट निवारक मंत्र का नियमित रूप से पाठ करना चाहिए।

यदि आप धन हानि, कर्ज में बढ़ोत्तरी आदि से परेशान हैं, तो आपको नियमित रूप से एक साल तक मंगलवार का व्रत करना चाहिए, जिससे मंगल के राशि जनित या भाव जनित दोष दूर हो सकते हैं।

मंगल ग्रह के साधारण उपाय

आपको रुद्रसूक्त का पाठ नियमित रूप से करना चाहिए। भैरव और हनुमान जी की नियमित पूजा करें। हनुमान चालीसा का नियमित पाठ करें। यदि रुद्रसूक्त का जप मुश्किल है, तो आगे लिखे हुए मंत्र का प्रतिदिन 28 बार जप करें।

अघोरेभ्यों अघघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेतु रुद्ररूपेभ्यः।

मित्रों और संबंधियों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करने से मंगल का अशुभ प्रभाव कम होता है।

बुध से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी कुण्डली में बुध कर्क राशि में स्थित है। आप एक साथ कई कार्यों में लिप्त रहेंगे, जिसकी वजह से आपके पास समय की बेहद कमी होगी। आपको अपने मित्रों और रिश्तेदारों से भी परेशानियां हो सकती हैं।

यदि आपकी वाणी में दोष है, जैसे हकलाना, तुतलाना इत्यादि अथवा बुद्धि कमजोर है या अपने जुबान पर नियंत्रण नहीं है, तो आप कार्तिकेय मंत्र का जप पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर दस बार करें। यह जप पुष्य नक्षत्र से शुरू करके अगले 27 दिनों तक करें।

यदि आप अपने विचार प्रकट करने में असमर्थ है या जनसमुदाय इत्यादि के सामने आप नहीं बोल पा रहे हैं, तो आप बुध कवच का नियमित पाठ करें।

यदि आपको तनाव से नींद नहीं आती है या नींद आने पर बुरे सपने दिखाई देते हैं, तो आपको बुध गायत्री मंत्र का दिन में 3 बार जप करना चाहिए।

यदि बुध के दोष के कारण धन नहीं ठहरता हो या आमदनी कम हो, तो आपको श्रीसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आपको व्यापार में सफलता नहीं मिल पाती है, तो बुध गायत्री का 10 हजार जप करें। जप के पश्चात अपने सामर्थ्य के अनुसार मूंग, घी, चाँदी या हाथी दाँत से बनी वस्तु का दान करें।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आप किसी असाध्य रोग से पीड़ित है, तो आपको विष्णु सहस्त्र नाम का जप करना चाहिए।

बुध ग्रह के साधारण उपाय

आपको प्रतिदिन या हर बुधवार के दिन विष्णु सहस्त्र नाम स्त्रोत का पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन सुबह ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नामक द्वादशाक्षरी विष्णु मंत्र का 28 या 108 बार जप करें।

1– बिना अपशब्दों का प्रयोग किए बोलें।
2– अपने से छोटों के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
3– किसी कार्य के लिए गलत तरीका ना अपनायें।

बृहस्पति से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति वृष राशि में स्थित है। आपको अपने जीवनसाथी के कारण परेशानी हो सकती है। और मन उदास रह सकता है। किसी दीर्घकालिक बीमारी के भी शिकार होने की संभावना है।

यदि बृहस्पति की कमजोरी के कारण घर में पैसे की बरकत ना हो, तो गुरु गायत्री मंत्र का दिन में 10 बार पाठ करें।

व्यापार में वृद्धि के लिए आठ गुरु मंत्रों से गंगा जल को अभिमंत्रित करके अपने काम–धंधे की जगह पर छिड़कें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ आपके मतभेद हैं, तो गुरु गायत्री मंत्र का रोज सुबह 10 बार पाठ करें।

यदि आपके बीच कलह की स्थिति है, तो शिव एवं पार्वती की पूजा करें एवं अर्धनारीनटेश्वर स्त्रोत का पाठ सुबह–शाम करें।

यदि लड़की के विवाह में रूकावट आ रही हो या रिश्ता बनते–बनते रह जा रहा हो, तो तीन सौ पार्थिव लिंगों पर पूजा करने से इस समस्या का निवारण हो सकता है। यदि लड़के के विवाह में ऐसी स्थिति बन रही हो, तो दुर्गा सप्तशती का 17 बार पाठ करें।

बृहस्पति ग्रह के साधारण उपाय

बृहस्पति जनित दोषों को दूर करने के लिए आपको स्कन्द पुराण में वर्णित बृहस्पति स्त्रोत का पाठ करना चाहिए और पूर्णिमा इत्यादि के दिन सत्यनारायण भगवान की कथा सुननी चाहिए। बृहस्पति देव को हल्दी से रंगे चावल, पीले फूल, पीले चंदन समर्पित करना चाहिए। बृहस्पतिवार के दिन साबुत हल्दी, चने की दाल, नमक आदि का दान करना चाहिए।

1– शिक्षकों, गरुओं, वृद्धों, साधु–संतों और उच्च शिक्षित लोगों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
2– कोर्ट–कचहरी में झूठी गवाही ना दें।

शुक्र से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी कुण्डली में शुक्र सिंह राशि में स्थित है। आप काफी लापरवाह हो सकते हैं। आपमें धैर्य की कमी हो सकती है तथा आप नेत्र रोग से पीड़ित हो सकते हैं।

संतान सुख के लिए कन्याओं को किसी भी प्रकार से ठेस नहीं पहुंचाना चाहिए। नवरात्र के दौरान कन्याओं का पूजन कर अपने सामर्थ्य के अनुसार भोजन एवं वस्त्र उपहार देना चाहिए। साल में किसी अवसर पर किसी व्यक्ति को शिव–पार्वती या विष्णु–लक्ष्मी का फोटो भेंट करना चाहिए या किसी ब्राह्मण को बिछाने योग्य चादर, तकिया या वस्त्रों का जोड़ा दान करना चाहिए। सौन्दर्य लहरी स्त्रोत या देवी सूक्त और श्रीकवच का रोजाना पाठ भी काफी लाभदायक होगा।

यदि शुक्र के दोष के कारण काम–वासना अनियंत्रित हो या अप्राकृतिक वासना के प्रति रूझान हो, तो आपको अथर्ववेद में कहे गये शिव संकल्प का रोजाना सोते समय एक बार पाठ करना चाहिए। आप शुक्र गायत्री का भी रोजाना 10 बार पाठ कर सकते हैं।

यदि घर में दरिद्रता हो या लक्ष्मी का वास ना हो, तो सुबह में अर्गला एवं कीलक स्त्रोत का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र दोष के कारण शरीर में आलस्य हो या अधिक सोने के कारण कार्य अधूरे रह जा रहे हो, तो सुबह एवं रात में सोते समय रात्रिसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र दोष के कारण विवाह में बाधा उत्पन्न होती है, या संबंध तय नहीं हो पा रहा है, तो शुक्र स्तवराज का पाठ करना चाहिए।

शुक्र के दोष के कारण यदि बार–बार चोट लगती है, या शरीर में विकार उत्पन्न होता है, तो शुक्र कवच का पाठ करना चाहिए।

शुक्र ग्रह के साधारण उपाय

रोजाना सुबह स्नान करने के पश्चात तुलसी के पौधे को सींचकर आगे लिखे मंत्र का एक बार पाठ करें। फिर वहीं पर खड़े होकर तुलसी कवच का पाठ करें।

1– अपने जीवनसाथी से ही संबंध रखें।
2– कन्याओं और पराई स्त्रियों के प्रति सम्मान का भाव रखें।

शनि से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी जन्मकुण्डली में शनि वृष राशि में स्थित है। धन की कमी एवं अपने से बड़े विपरीत लिंग के लोगों के प्रति आकर्षण के कारण आपकी मानसिक स्थिति पर बुरा असर पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि दूसरे भाव में स्थित है। आपके खर्चे अधिक हो सकते हैं। आपकी आंखों में कोई विकार हो सकता है। अपनी नींद पर आपका वश नहीं हो सकता है। आप कुशल वक्ता हो सकते हैं।

शनि के राशिगत अथवा भावगत दोष के निवारण के लिए शनि गायत्री मंत्र का जप रोजाना आसन पर खड़े होकर एक निश्चित संख्या में करें।

यदि शनि की दशा अथवा गोचर के दौरान किसी तरह के रोग या दुर्घटना की वजह से जीवन पर संकट आए, तो मार्कण्डेय जी द्वारा रचित भगवान शंकर के महामृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि आपकी संतान आपके बताये रास्ते पर ना चलकर आपकी अवहेलना करती है, तो आपको शनि गायत्री का नियमित 28 या 108 बार जप करना चाहिए। शाम के समय हनुमान जी का ध्यान करते हुए हनुमान जी के भुजंग स्तोत्र या शिवताण्डव स्तोत्र का पाठ करने से आपको लाभ होगा।

शनि के साढ़ेसाती, गोचर काल अथवा शनि की दशा या अन्तर्दशा के अनुसार, यदि कुफल प्राप्त हो रहा हो, तो शनि स्तवराज मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि शनि की दशा या गोचर के दौरान आपको बार–बार चोट लगती हो अथवा कोई रोग आपको परेशान कर रहा हो, तो आपको शनैश्चराष्टक स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

शनि ग्रह के साधारण उपाय

सोमवार, बुधवार एवं शनिवार को कडुवे तेल का मालिश करके स्नान करें और साफ–सफाई पर विशेष ध्यान दें। साफ–सुथरा रहने से शनि के सामान्य दोष स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं। स्नान के पश्चात रोजाना भगवान शंकर जी, हनुमान जी या भैरव जी की स्तुति करनी चाहिए। टूटे बर्तन या आईना या चारपाई का प्रयोग ना करें।

नौकरों, दासों, मजदूरों व मेहनतकश लोगों का हक ना मारें। उनका व्यर्थ में अपमान ना करें।

स्वास्थ्य सुख

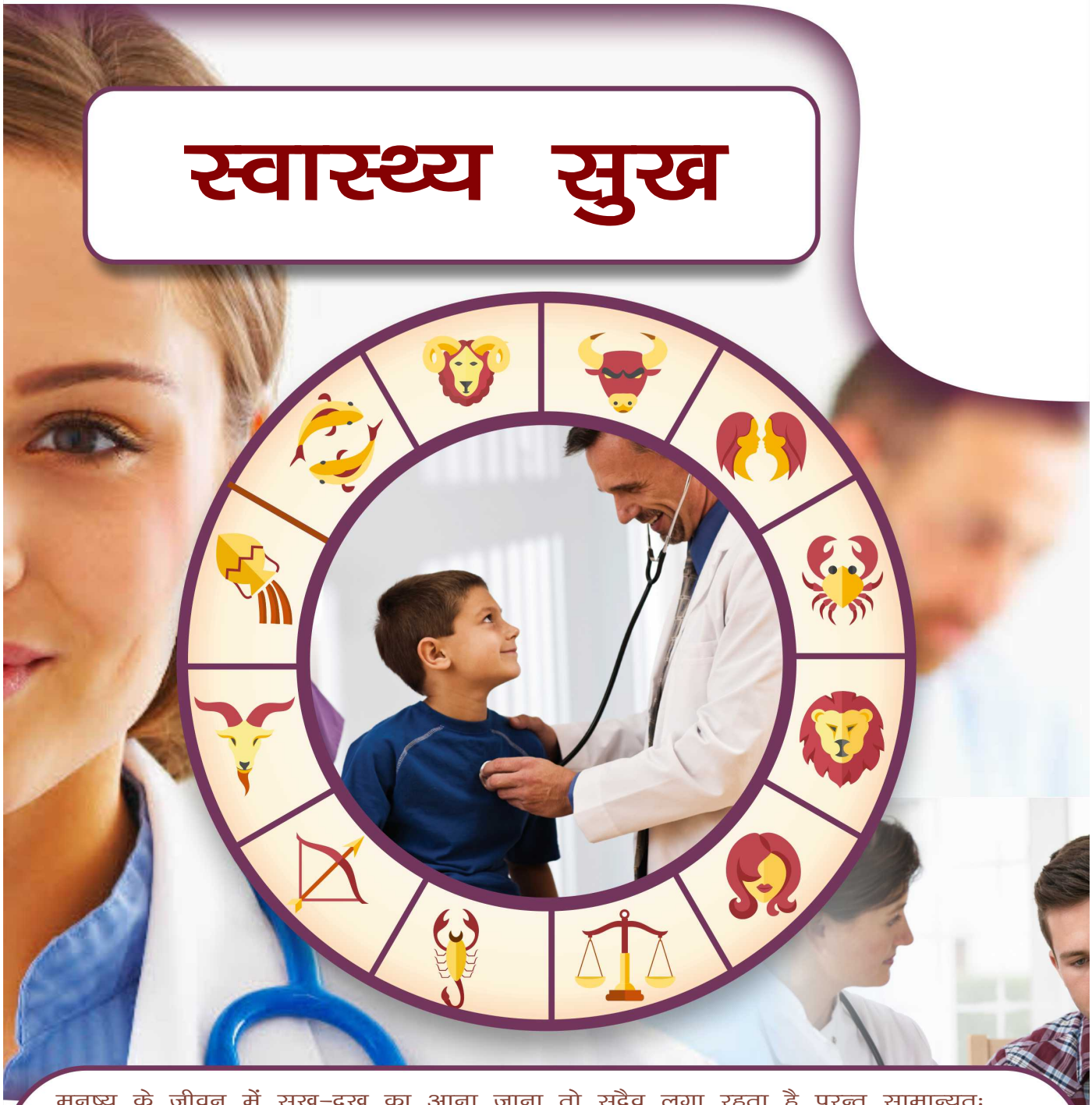

मनुष्य के जीवन में सुख–दुख का आना जाना तो सदैव लगा रहता है परन्तु सामान्यतः देखा जाए तो उसे सबसे अधिक कष्ट उसके शारीरिक अस्वस्थता के समय ही होता है। यदि शारीरिक रूप से व्यक्ति अस्वस्थ है तो उसके आस–पास का वातावरण कितना ही सुखमय क्यों न हो उससे उसको किसी प्रकार के सुख की अनुभूति नहीं होती। कहा जाता है कि जान है तो जहान है। वास्तविकता भी यही है कि व्यक्ति यदि स्वस्थ्य रहेगा तभी उसका जीवन जीवंत माना जाएगा, तभी उसे जीवन के अन्य सुखों का भरपूर आनन्द प्राप्त होगा अन्यथा जीवन के किसी भी प्रकार के सुख से वह वंचित रह जाएगा। इसलिए स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना और उसके लिए सभी प्रकार के चिकित्सीय व आवश्यक होने पर ज्योतिषिय उपाय आदि भी करना चाहिए। चिकित्सा के बिना स्वास्थ्य का ठीक हो पाना संभव नहीं हो सकता, परन्तु कई बार ऐसा होता है कि चिकित्सीय उपचार का व्यक्ति के रोग पर कोई असर ही नहीं होता ऐसी स्थिति में यदि ग्रहों की दशा को देखकर उपचार के साथ–साथ ज्योतिषिय उपाय भी किया जाय तो संभवतः रोग से निजात शीघ्रता से पाया जा सके।

स्वास्थ्य से संबंधित योग और उपाय

स्वास्थ्य सुख से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव का स्वामी कोई शुभ ग्रह है, अर्थात् बुध, गुरु अथवा शुक्र है तथा वह जल तत्व प्रधान राशि के नवांश में स्थित है। अतः आप शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं बलिष्ठ होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि उच्च राशि, स्वराशि अथवा मित्र राशि में उपस्थित है। आप दीर्घायु होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्र लग्न के स्वामी एवं चंद्र लग्न से आठवें भाव के स्वामी मित्र हैं। आपकी आयु लंबी होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न का नवांशेश एवं अष्टम भाव के नवांशेश मित्र हैं। आप दीर्घायु होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव का स्वामी सूर्य का मित्र है। आप दीर्घायु होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश जलीय राशि (कर्क या वृश्चिक या मीन) में स्थित है और लग्नेश का नवांश–राशिपति भी ऐसी ही राशि में स्थित है। इस योग को देह स्थूल योग कहा जाता है। इस योग के उपस्थित होने के कारण, यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो आपका स्वास्थ्य सुदृढ़ और शरीर पुष्ट होगा।

स्वास्थ्य सुख से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव का स्वामी एवं आठवें भाव का स्वामी एक दूसरे के सम ग्रह हैं। आप मध्यम आयु वाले व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्र नवांशेश एवं चंद्र लग्न से अष्टम भाव के नवांशेश परस्पर मित्र हैं। आप मध्यम आयु वाले व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य पहले, दूसरे या बारहवें भाव में स्थित है। आपको नेत्र रोग से पीड़ित होने की संभावना अधिक है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – यदि आपको स्त्रियों से कष्ट है, तो शनि के उपाय जैसे, नारियल, बादाम और तेल धर्मस्थान में या मंदिर में देना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध कर्क राशि में स्थित है। आपको क्षयरोग से पीड़ित होने की संभावना हो सकती है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – चंद्रमा और बृहस्पति का उपाय सहायता करेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे अथवा पांचवें भाव में राहु स्थित है एवं उस पर अन्य पाप ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है और पहले भाव का स्वामी कमजोर है। आपको हृदय रोग से परेशान रहने की संभावना अधिक है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – 400 ग्राम या एक किलो धनियां बहते पानी में सात बुधवार तक बहायें।

आपकी जन्मकुण्डली में दूसरे एवं बारहवें भाव में पाप ग्रह स्थित हैं एवं उन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि नहीं पड़ रही है। आपकी आयु बहुत अधिक नहीं हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश की एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ युति है, तथा इसके साथ कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह ना तो संबद्ध है और ना ही इस पर दृष्टि है। इसके अतिरिक्त, लग्न में कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह ना तो स्थित है और ना ही लग्न पर उसकी दृष्टि है। यह समग्र योग अपेक्षाकृत प्रतिकूल योग है, जिसे देह–कष्ट योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं है, तो आप आर्थिक रूप से सम्पन्न नहीं हो सकते हैं और/या परिस्थितिवश शारीरिक सुख–सुविधाओं से वंचित हो सकते हैं। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – यदि आपके घर में बिना खोला हुआ सूत या ऊन का गोला पड़ा हुआ है, तो उसे खोल दें।

स्वास्थ्य सुख बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) रोग मुक्ति के लिए इस उपाय को 21 दिन तक लगातार करना है। इस विधि को सोमवार से ही प्रारम्भ करना है। सोमवार के दिन पूजा करने के बाद ऊँ जूं सः (रोगी का नाम) पालय पालय सः जूं ऊँ' मंत्र का एक माला जाप करें और प्रणाम कर घर आ जाएं। अगले 21 दिन तक आपको इसी प्रकार पूजा व जाप करना है। इस उपाय के प्रभाव से रोगी शीघ्र रोगमुक्त हो जाएगा।

(2) गुरुवार के दिन एक श्वेत वस्त्र में एक लौंग का जोड़ा व थोड़ा सा कपूर बांधकर रोगी के हाथ में बांध देना चाहिए। यदि पुरुष बीमार हो तो उसके बाएं हाथ में तथा यदि कोई स्त्री बीमार हो तो उसके दाएं हाथ में बांधना चाहिए। इससे रोगी शीघ्र स्वस्थ्य होने लगेगा।

(3) अमावस्या के दिन एक नारियल पर एक लम्बा काला धागा जो कि रोगी की लम्बाई से सात गुना अधिक लम्बा हो, लपेट दीजिए और रोगी को कोई गहरे रंग का पुराना वस्त्र पहनाकर भूमि पर बैठा दीजिए। अब रोगी के दाएं हाथ में एक पान के पत्ते पर लौग का जोड़ा, हरी इलायची का जोड़ा, थोड़ा काला तिल, तीन कपूर की टिकिया व उस पर कुछ बूंद शुद्ध घी डाल दें और रोगी के बाएं हाथ पर कुछ रुपए रखें। दाएं हाथ पर रखी कपूर की टिकिया को जला दें तथा रोगी के पीछे खड़े होकर उस नारियल को सात बार उसारें और ध्यान रखें कि उसारा पूर्ण होने से पहले कपूर बुझने न पाए। उसारा कर लेने के बाद उस नारियल को जल से भरे हुए ऐसे पात्र में रखें जिसमें नारियल पूरा आ जाए। अब उस पात्र में अन्य नए पान के पत्ते पर वही सामग्री डाल कर पुनः उसे प्रज्ज्वलित कर दें और उसके ठण्डा होने की प्रतिक्षा करें। ठण्डा हो जाने के बाद उस पात्र को सारी सामग्री सहित किसी निर्जन स्थान पर किसी वृक्ष के नीचे छोड़ आएं। उसके बाद यदि रोगी स्नान करने की अवस्था में है तो उसे स्नान करवाएं अन्यथा किसी गीले कपड़े से पूरा शरीर पोंछकर उसे अन्य वस्त्र धारण करवाएं और उपाय के समय पहने हुए वस्त्र को किसी सफाई कर्मी को कुछ नगद धन राशि के साथ दे दें। रोगी के बाएं हाथ में जो रुपए रखे थे उनसे इमरती खरीदकर कुत्तों को खिलादें। यदि आप इस उपाय को पूर्ण विश्वास के साथ करेंगे तो आपको निश्चित रूप से सकारात्मक फल मिलेगा।

(4) यदि आपका स्वास्थ्य हमेशा खराब रहता हैं, तो आप सोमवार को 7 गोमती चक्र अभिमंत्रित कर उसमें चन्दन का रोली कर सफेद वस्त्र पर रख दें। भगवान शिव जी से अपनी परेशानी के निवारण हेतु प्रार्थना करें। फिर आप चार गोमती चक्र को लेकर बाहर आ जायें और उसमें से एक को लेकर किसी सुनसान जगह पर जाकर उसको अपने सर से सात बार उसार कर पिछे की तरफ फेक दें, वापस लौटते समय पिछे न देखें। उसमें से तीन को शिव जी के मन्दिर में रख कर प्रणाम करते हुए स्मरण करे और घर आ जायें। तीन बचे गोमती चक्र को अपने पलंग के दायें पाव में चांदी के तार से बांध दें।

शिक्षा, विद्या और विद्वता

प्राचीन समय में शिक्षा का स्वरूप वर्तमान शिक्षा से पूर्णतया भिन्न था। तब शिक्षा को अर्थोपार्जन का माध्यम न मानकर ज्ञान व मोक्ष प्राप्ति का माध्यम माना जाता था। इसलिए उस समय की शिक्षा में इस प्रकार की प्रतियोगिता नहीं थी जो कि वर्तमान समय की शिक्षा में दृष्टिगोचर होती है। इस वैज्ञानिक युग में जिस गति से विकास हुआ उसी गति से अर्थोपार्जन के लिए अनेकोंनेक स्रोत खुलते चले गए एवं इस विकास की गति को अत्यधिक गति प्रदान के लिए शिक्षा का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता चला गया। आज स्थिति यह है कि यदि कोई अशिक्षित रह जाता है तो उसे निश्चित तौर पर इस विकसित युग में अविकसित होकर ही जीना पड़ेगा। शिक्षा प्राप्त करना भी अब उतना आसान नहीं है। इस क्षेत्र में प्रतियोगिता ही एक मात्र बाधा नहीं है बल्कि अन्य अनेक बाधाएं भी हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली तो ऐसी हो गई है कि उससे धनोपार्जन का माध्यम बनाने के लिए पहले उसमें धन का निवेश करना भी आवश्यक है। ऐसी बाधाएं तो सामाजिक तौर पर सबको पार करनी पड़ती हैं, परन्तु जीवन में व्यक्तिगत रूप से भी कई बार शिक्षा के मार्ग में बाधाएं आने लगती हैं। इन बाधाओं के कारण व्यक्ति का भविष्य बाधित होता है, उसका विकास बाधित होता है या संक्षिप्त में कहा जाए तो उसके जीवन का प्रत्येक क्षेत्र प्रभावित होता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह या उसकी संतान उच्च से उच्च शिक्षा ग्रहण कर सके, किन्तु इन बाधाओं के कारण सबके लिए ऐसा संभव नहीं होता। ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से व्यक्ति के शिक्षा में आने वाली बाधाओं में भी ग्रहों का प्रभाव समाहित होता है। ग्रहों के प्रतिकूल होने की दशा में शिक्षा बाधित होती है। इसलिए इन बाधाओं से सचेत रहने के लिए इसके बारे में जानना भी आवश्यक है।

शिक्षा, विद्या और विद्वता से संबंधित योग और उपाय

शिक्षा, विद्या और विद्वता से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र शत्रु ग्रह के द्विस्वभाव राशि में स्थित है तथा शनि मित्र राशि में बैठा हुआ है। आप संस्कृत भाषा में निपुण होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में दूसरे भाव का स्वामी केन्द्र अथवा त्रिकोण में विराजमान है। आप विलक्षण प्रतिभा वाले व्यक्ति होंगे एवं आपको विभिन्न विषयों का ज्ञान होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा एवं शुक्र में पारस्परिक दृष्टि संबंध है एवं शुक्र नीच राशि का अथवा अस्त नहीं है। इसलिए आपमें नेतृत्व करने का गुण विद्यमान होगा। आप विनम्र, विचारवान, सदाचारी एवं विख्यात होंगे तथा समाज का नेतृत्व करने में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

जैसाकि एक ग्रह (सूर्य के अलावा) चंद्रमा से दूसरे भाव में उपस्थित है। यह सुनफा नामक ग्रह योग का निर्माण करता है। इस योग की उपस्थिति के कारण, आप अत्यंत बुद्धिमान होंगे, आपकी आय बहुत उत्तम होगी तथा बहुत धनवान होंगे। अपने संबंधियों और मित्रों के साथ आप आरामपूर्ण और आधुनिक जीवन का आनन्द लेंगे।

शिक्षा बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) शिक्षा बाधा को दूर करने के लिए किसी भी माह के गुरुवार के दिन भगवान दत्तात्रेय के मंदिर में जाकर मात्र एक बार एक पीला वस्त्र, कोई भी एक पुस्तक व कलम अर्पित करें और शुद्ध घी का दीपक जलाएं। उसके बाद भगवान से अपनी शिक्षा में उन्नति प्रदान करने की प्रार्थना करें व प्रणाम कर घर वापिस आ जाएं।

(2) कठिन से कठिन परिश्रम करने पर भी कई बच्चे परीक्षा में असफल हो जाते हैं, जिसका दोष भाग्य पर मढ़ दिया जाता है। इसके लिए इस उपाय को करें: जब परीक्षाएं हो रही हों, तो बच्चों को नियमित दही दिया करें। केवल उसके समय में परिर्वतन करने चाहिएं। इसमें रहस्य केवल इतना है कि अगर एक दिन सुबह 8 बजे दही दिया है, तो उससे अगले दिन 9 बजे दें, अगले दिन 10 बजे दें। इस क्रिया को दोहराते रहें तथा हर रोज एक घंटा बढ़ाते रहें, तो परमात्मा हर हाल में सहायता करेगा। अगर हो सके, तो दही मीठा ही हो।

(3) यह प्रयोग अत्यंत प्रभावशाली है। विशुद्ध स्फटिक माला लें। एक लकड़ी के पाटे पर पीला वस्त्र बिछा लें। मुख पूर्व की ओर होना चाहिए। पाटे पर पीला वस्त्र बिछा कर, उसपर स्फटिक माला को आदर से रखें। माला को केसर का तिलक लगाएं, धूप, दीप दिखाएं। प्रतिदिन 108 बार मंत्र का जाप 9 दिवस तक करें। नौवें दिन, जाप के बाद, पवित्र पूजित स्फटिक माला अपने गले में धारण कर लें। माला पहन कर आराम से इंटरव्यू देने जाएं। जब माला न पहनी हुई हो, चांदी की डिबिया में घर के मंदिर में रखें। मंत्र इस प्रकार है :

ह्रीं वाग्वादिनी भगवती मम कार्य सिद्धि करि-करि स्वाहा।

(4) यदि आप परिक्षा में बार-बार असफल हो जा रहे हैं, तो आप वसंत पंचमी के दिन अपने सामने मां सरस्वती का चित्र रखकर इस मंत्र का -

ऊँ सरस्वती वाग्वादिनी कश्मीरवासिनी हंसवाहिनी बहु बुद्धिदायिनी मम जिह्वाग्रे स्थिर भव स्वाहा।

108 बार जप करें। इसके बाद आप अष्टगंध में गंगा जल मिला कर भोजपत्र पर इस मंत्र को लिखें। फिर भोजपत्र को चांदी के कवच में भरकर अपने दायें हाथ की भुजा में पहन लें। इस उपाय को करने के बाद आप परिक्षा में हमेशा सफल होंगे।

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय

भौतिक संसार में रहते हुए मनुष्य की अनेक आवश्यकताओं का जन्म होता है। जिन्हें पूरा करने के लिए उसे विभिन्न प्रकार के कार्य व व्यवसाय को अपनाना पड़ता है। सभी प्रकार की जरूरतों को पूर्ण करने हेतु मनुष्य का आर्थिक रूप से सुदृढ़ होना आवश्यक है। जबकि वर्तमान समय में इस तरह की परिस्थिति व प्रतिस्पर्द्धा का माहौल बन गया है कि सभी एक दूसरे से आर्थिक व सामाजिक स्तर पर आगे निकलना चाहते हैं। ऐसी परिस्थिति में कोई बहुत आगे निकल जाता है तथा कोई इतना पिछे रह जाता है कि उसके लिए अपनी आम जरूरतों को पूरा कर पाना भी कठिन होने लगता है। जीवन का प्रत्येक पक्ष किसी न किसी रूप से आर्थिक पक्ष से अवश्य जुड़ा हुआ है। ऐसे में व्यवसाय, नौकरी आदि में किसी भी प्रकार की बाधा आना जीवन में कठिनाई उत्पन्न कर देता है। ये बाधाएं किसी भी प्रकार की हो सकती हैं जैसे किसी प्रकार की कोई व्यापारिक दुर्घटना, हानि, ऋण में वृद्धि, शत्रुओं द्वारा किया षडयंत्र आदि। यद्यपि बाह्य तौर पर इन्हें परिस्थितिजन्य माना जाता है, परन्तु ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस प्रकार की बाधाएं ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों के कारण उत्पन्न होती हैं। यदि व्यक्ति अपनी जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों को समय रहते जान कर उसके लिए उपाय करे तो संभवतः वह इन बाधाओं को दूर करने में सफल भी हो सकता है।

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय से संबंधित योग और उपाय

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रह केन्द्र में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन–समृद्धि व मान–सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा एवं शुक्र में पारस्परिक दृष्टि संबंध है एवं शुक्र नीच राशि का अथवा अस्त नहीं है। इसलिए आपमें नेतृत्व करने का गुण विद्यमान होगा। आप विनम्र, विचारवान, सदाचारी एवं विख्यात होंगे तथा समाज का नेतृत्व करने में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, तृतीयेश का नवांश–राशिपति वर्गोत्तम स्थिति में है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है, इसे रण प्रवीण योग कहा जाता है। आप एक सक्षम रणनीतिकार हो सकते हैं तथा युद्ध और/या सक्रिय सेवा में जीत की श्रृंखला हासिल कर सकते हैं।

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में दसवें भाव में कोई पापी ग्रह स्थित है। आपको अपने व्यवसाय या नौकरी अथवा जो भी कार्य आप करते हैं उसमें बाधाएं आती रहेंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवें भाव का स्वामी आठवें भाव के स्वामी के साथ बारहवें भाव में स्थित है। आपको अपनी नौकरी छोड़नी भी पड़ सकती है, परन्तु आप उसी नौकरी को कुछ संघर्ष करके कुछ समय बाद पुनः प्राप्त भी कर लेंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – सिर पर चोटी रखें। जूठा भोजन न करें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव में कोई पापी ग्रह स्थित है और सातवें भाव का स्वामी किसी अन्य अशुभ भाव में स्थित है। आपको अपने जीविकोपार्जन में कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – यदि आपकी कुण्डली में बृहस्पति और चंद्रमा एक साथ बैठे हुए हैं, तो बरगद के वृक्ष में पानी डालें।

आपकी जन्मकुण्डली में दूसरे भाव में कोई पापी ग्रह स्थित है। आपके जीवन में सदैव धनाभाव बना रहेगा।

जीविकोपार्जन/नौकरी/ब्यापार बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) व्यापार में घाटा हो रहा हो, या काम चल नही रहा हो, तब आप एक चुटकी में आटा ले कर इतवार के दिन व्यापार स्थल, या दुकान के मुख्य द्वार के दोनों ओर थोड़ा–थोड़ा छिड़क दें। साथ में कहें :

जिसकी नज़र लगी है, उसको लग जाए और बुरी नजर वाले तेरा मुंह काला। यह क्रिया या उपाय शुक्ल पक्ष में ही करें। संभव हो तो प्रयत्न करें कि इस क्रिया को कोई न देखे और हो सके तो गुप्त रूप से करें।

(2) व्यापार स्थिर करने हेतु, थोड़ा सा कच्चा सूत ले कर उसे शुद्ध केसर में रंग लें, इस रंगे हुए सूत को ग्यारह बार श्री हनुमते नमः का पाठ कर के अभिमंत्रित कर लें और इसको व्यापारिक स्थल पर बांध दें। व्यापार आगे बढ़ने लगेगा। नौकरी से संबंधित व्यक्ति इसे अपनी दराज़ में रखें, ऐसा करने से तरक्की का योग बनने लगेगा तथा हर प्रकार की मनोकामना पूर्ण होने की संभावना बढ़ जाएगी।

(3) व्यवसाय के उद्घाटन के समय एक चांदी के कटोरे में धनिया रखकर उसमें मां लक्ष्मी और श्री गणेश की मूर्ति रखें। आप इस कटोरे को पूर्व दिशा में रखें और प्रति दिन आप पांच अगरबत्ती से अनका पूजन किया करें। ऐसा करने से आपके व्यवसाय में विकास होगा।

(4) आप अपने व्यवसाय स्थल पर जाने से पहले पूरे हते अलग अलग तरीके से जायें –

रविवार : रविवार के दिन पान खा कर जाना चाहिए, जो व्यक्ति नही खाते हैं तो साथ में पान का पत्ता लेकर जाना चाहिए।
सोमवार : दर्पण देख कर जाना चाहिए।
मंगलवार : गुड़ खा कर जाना चाहिए।
बुधवार : धनिया खाते हुए जाना चाहिए।
गुरूवार : जीरा खाकर जाना चाहिए।
शुक्रवार : दही खा कर जाना चाहिए।
शनिवार : अदरक खा कर जाना चाहिए।

विवाह

सामान्यतः गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के लिए प्रथम और अनिवार्य शर्त विवाह को माना जाता है। इसलिए इसका हमारे जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। जीवन में अनेक प्रकार की बाधाएं आती हैं जिनमें विवाह से संबधित बाधाएं भी होती हैं। जैसे इच्छानुकुल वर या वधु का न मिलना, विवाह योग्य आयु होने पर विवाह न हो पाना, विवाह में किन्ही कारणवश विलम्ब होना, वर या वधु के सर्वगुण सम्पन्न होने के बाद भी विवाह न हो पाना, विवाह के लिए आर्थिक अभाव का आड़े आना आदि। ज्योतिषिय दृष्टिकोण से ऐसी बाधाओं या कठिनाईयों का कारण व्यक्ति के जन्म कुंडली में स्थित ग्रहों के प्रतिकूल प्रभाव के कारण होता है। विवाह तथा वैवाहिक जीवन को ग्रहों के अच्छे व बुरे प्रभाव सर्वथा प्रभावित करते हैं। यदि इनके अशुभ प्रभावों को विवाह के पूर्व ही ज्ञात कर लिया जाए तो इन प्रतिकूल प्रभावों का निवारण कर वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है। यहाँ हम जातक/जातिका की कुण्डली में स्थित ऐसे योग की जाँच करेंगे, इन बाधक योगों की संख्या जितनी अधिक होगी विवाह में उतना ही विलम्ब/कष्ट आदि की मात्रा उतनी ही अधिक होगी।

विवाह से संबंधित योग और उपाय

विवाह से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र चंद्रमा से सातवें भाव में स्थित है। आपका विवाह बहुत शीघ्र ही होगा तथा दाम्पत्य जीवन सुखमय व्यतीत होगा। साथ ही आपका दाम्पत्य संबंध लम्बे समय तक चलेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र अकेले स्थित है तथा उस पर बृहस्पति या चंद्रमा की दृष्टि पड़ रही है। आपका केवल एक ही विवाह होगा, जिससे आपको विशाल धन–संपदा, सामाजिक मान–प्रतिष्ठा व सुख–समृद्धि की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, सप्तमेश स्थिर राशि में स्थित है। यह योग आपका एक विवाह होने का सूचक है।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव के स्वामी की उच्च राशि में राहु अथवा केतु उपस्थित हैं। आप प्रेम विवाह कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें अथवा पांचवें भाव के स्वामी की युति नौवें भाव के स्वामी के साथ है। संभावना है कि आप प्रेम विवाह कर सकते हैं।

विवाह से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, सप्तमेश त्रिक भाव में स्थित है। आपकी पत्नी अल्पायु हो सकती हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में किसी पापी ग्रह के साथ स्थित है। आपके विवाह में अनेक बाधाएं आएंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – झूठी गवाही न दें।

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु अथवा सातवें भाव का स्वामी किसी त्रिक भाव अर्थात छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हैं। आपका विवाह विलम्ब से होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपना सिर हमेश ढक कर रखें।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य और चंद्र पर शनि की दृष्टि है। आपका विवाह विलम्ब से होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – आपको अपने पुश्तैनी मकान में हैण्डपम्प लगाना चाहिए। 12 शनिवार मछलियों को बादाम खिलायें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी दूसरे, छठवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है। आपके विवाह में अनेक बाधाएं आएंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – झूठी गवाही न दें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी दूसरे, तीसरे अथवा बारहवें भाव में स्थित है। आपके विवाह में अनेक बाधाएं उत्पन्न होंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – गले में माला पहनें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी किसी त्रिक भाव में स्थित है अथवा नीच या अस्त है। आपके विवाह में अड़चनें आएंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – पुखराज पहनें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव के स्वामी की नवांश राशि का स्वामी पाप ग्रह है। आपका विवाह आपकी इच्छा के विपरीत किसी कन्या से होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव के स्वामी की षष्ठयंश राशि का स्वामी पाप ग्रह है। आपका विवाह खूबसूरत कन्या से नहीं हो सकता है तथा साथ ही वे कटु वचन बोलने वाली एवं कर्कश स्वभाव की हो सकती हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी अथवा शुक्र नीच नवांश में स्थित है। आपका विवाह खूबसूरत कन्या से नहीं हो सकता है तथा साथ ही वे रोगग्रस्त, कटु वचन बोलने वाली एवं कर्कश स्वभाव की हो सकती हैं। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – गले में माला पहनें। अपनी पत्नी का सम्मान करें और उन्हें नीचा न दिखायें।

विवाह बाधा समाप्ति के सरल उपाय

(1) प्रत्येक सोमवार के दिन किसी भी मंदिर में जाकर शिवलिंग को कच्चे दूध से स्नान करा कर उस पर एक नागकेसर का जोड़ा एवं पांच पीले फूल चढ़ाए तथा मंदिर से बाहर आकर बैल या गाय को एक केला और कोई भी मिठाई अवश्य खिलाएं। ऐसा करने से भी विवाह में आने वाली बाधाएं समाप्त हो जाएंगी।

(2) लड़की या लड़का 43 दिन तक पीपल पर लगातार जल चढ़ाए, तो शादी की रुकावट दूर हो जाती है। इतवार को या मासिक धर्म के समय जल नहीं चढ़ाना चाहिए।

(3) विवाह बाधा के निवारण के लिए, रविवार को 1 मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

(4) शीघ्र विवाह एवं मनोभिलाषित वर की कामना की पूर्ति के लिए शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से निम्न लिखित मंत्र की 5 माला जाप प्रतिदिन करें। यदि शिव–पार्वती का स्वयंवर वाला चित्र उपलब्ध हो, तो अति उत्तम होगा।

नमः मनोभिलषितं वरं देहि हु ओम् गौरा पार्वती देव्यै नमः।

यह अत्यंत दिव्य प्रयोग है, श्रद्धापूर्वक करने पर, अवश्य अपना प्रभाव दिखलाता है।

दाम्पत्य सुख

व्यक्ति के विवाहोपरान्त दाम्पत्य जीवन की शुरुआत होती है। यह जीवन का वह भाग है जिसमें व्यक्ति का सर्वाधिक समय व्यतीत होता है। इसलिए इसके सुखमय अथवा कष्टमय होने से व्यक्ति का सारा जीवन प्रभावित होता है। दाम्पत्य जीवन पति–पत्नी दोनों के आपसी समझ, सामंजस्य, प्रेम, समर्पण, सहानुभूति, मधुरता, अपनापन आदि से मिलकर बनता है। यदि इनके विपरीत गुणों का समावेश दाम्पत्य जीवन में होने लगता है, तो परिस्थिति सुखमय होने की बजाय कष्टमय होने लगती है। सामान्यतः पति–पत्नी दोनों की ही यह जिम्मेदारी होती है कि वे अपने–अपने दायित्वों का पालन निष्ठा व प्रेम से करें। जिससे कि घर–परिवार में कलह क्लेश की स्थिति उत्पन्न न हो, परन्तु किन्हीं कारण वश ऐसा सदैव कर पाना संभव नहीं हो पाता है और दाम्पत्य सुख लुप्त होने लगता है। ज्योतिषशास्त्र में दाम्पत्य जीवन में होने वाले वाद–विवाद, कलह, अशांति आदि को दाम्पत्य सुख में बाधक माना गया है, जो कि ग्रहों के प्रतिकूल होने के कारण उत्पन्न होता है। यदि ग्रहों की प्रतिकूलता को पहले ही ज्ञात करके उसके अनुसार आचरण व उपाय किया जाय तो दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है। यहाँ हम जातक/जातिका की कुण्डली में स्थित ऐसे योग की जाँच करेंगे, इन बाधक योगों की संख्या जितनी अधिक होगी दाम्पत्य सुख में प्रतिकूलता, वाद–विवाद, कलह, अशांति आदि की मात्रा उतनी ही अधिक होगी।

दाम्पत्य सुख से संबंधित योग और उपाय

दाम्पत्य सुख से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, नवमेश, बृहस्पति और शुक्र तीनों चंद्रमा से केन्द्र में स्थित हैं। आप विशाल भूमि व अथाह धन–संपत्ति के स्वामी होंगे तथा आपके अनेकों नौकर–चाकर, कर्मचारी आदि होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, पाँचवें भाव में विषम राशि है। आप एक पुरुष देवता की अराधना करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, पंचमेष विषम राशि में स्थित है। आप एक पुरुष देवता की अराधना करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र चंद्रमा से सातवें भाव में स्थित है। आपका विवाह बहुत शीघ्र ही होगा तथा दाम्पत्य जीवन सुखमय व्यतीत होगा। साथ ही आपका दाम्पत्य संबंध लम्बे समय तक चलेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र अकेले स्थित है तथा उस पर बृहस्पति या चंद्रमा की दृष्टि पड़ रही है। आपका केवल एक ही विवाह होगा, जिससे आपको विशाल धन–संपदा, सामाजिक मान–प्रतिष्ठा व सुख–समृद्धि की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक अत्यंत शुभ योग मौजूद है। अपने स्वयं के प्रयत्नों को निर्देशित करके तथा अपनी इच्छाशक्ति के वास्तविक शक्ति के आधार पर आप अपने समकालीनों से बहुत आगे निकल जाएंगे। आपकी सभी महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी और आपकी अभिलाषित इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपके आस–पास के लोग आपको एक अनुकरणीय व्यक्ति तथा एक प्रेरणादायक स्रोत के रूप में मानेंगे। आप अपने जीवनसाथी, संतानों, संबंधियों और मित्रों के साथ समृद्धिपूर्ण और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

दाम्पत्य सुख से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश व पंचमेश शत्रु की राशि में स्थित हैं। आप नास्तिक अथवा विधर्मिक विचारों वाले व्यक्ति हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, सप्तमेश त्रिक भाव में स्थित है। आपकी पत्नी अल्पायु हो सकती हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, अष्टमेश व नवमेश किसी भी प्रकार से आठवें व बारहवें भाव में स्थित हैं। आपकी आर्थिक स्थिति दयनीय हो सकती है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – तेल और शराब का दान करें।

उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – सिर पर चोटी रखें। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – दूसरों को धोखा न दें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी दूसरे अथवा बारहवें भाव में स्थित है। आपको अपना चाल–चलन ठीक रखना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले एवं छठे भाव का स्वामी पाप ग्रहों से युक्त है। आपको अपना चाल–चलन ठीक रखना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नौवें भाव में स्थित है। आपको अपना चाल–चलन ठीक रखना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र चौथे अथवा आठवें भाव के अतिरिक्त किसी अन्य भाव में पाप ग्रह के मध्य में स्थित है। आपकी पत्नी को किसी उंचे स्थान से गिरकर गंभीर रूप से चोटिल होने की संभावना है।

दाम्पत्य सुख प्राप्ति के सरल उपाय

(1) यदि दाम्पत्य जीवन में खुशहाली व परिवार की सलामती चाहती हैं, तो प्रतिदिन दुर्गा मां के 108 नामों का जप करें और दुर्गा चलीसा का पाठ करें। ऐसा आप प्रतिदिन करती है तो आपको निश्चय ही लाभ मिलेगा।

(2) पापी ग्रहों से उत्पन्न कलह का निवारण, शुक्ल पक्ष के मंगलवार को स्नान कर हनुमान मंदिर जाएं तथा 100 ग्राम चमेली का तेल और 125 ग्राम सिंदूर हनुमान विग्रह पर चढ़ाएं। साथ ही गुड़ और चने चढ़ाएं। पूजा अर्चना कर वहीं बैठकर बजरंग–बाण का पाठ करें तथा हनुमान जी से गृह कलह समाप्त हो इसके लिए प्रार्थना करें। यह क्रम कम से कम 7 मंगलवार दोहराएं।

(3) यदि पति–पत्नी के मध्य वाक युद्ध होता रहता है तो जिस व्यक्ति के कारण कलह होता हो उसे बुधवार के दिन कुछ समय के लिए (दो घंटे के लिए) मौन व्रत धारण करना चाहिए।

(4) पति–पत्नी के मध्य गृह–कलह शांत करने के लिए, समय समय पर विधवा स्त्री का आशीर्वाद लेती रहे।

मकान/आवास सुख

मनुष्य का जीवन प्राप्त होने के बाद उसके जीवन में तरह–तरह की जरूरतें आती हैं, परन्तु जो मूलभूत आवश्यकताएं हैं उनमें से सबसे पहले वह भोजन और फिर वस्त्र के बारे में सोचता है और जब उसे पूरा कर लेता है तो उसके बाद उसे अपने रहने के लिए एक ऐसे आवास की जरूरत महसूस होती है जिसमें वह सुख–शांति से अपने परिवार के साथ रह सके। चूंकि प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि उसके पास उसका स्वयं का घर व सभी प्रकार की भौतिक सुख सुविधाएं हों, परन्तु वास्तव में सब कुछ हासिल कर पाना इतना आसान भी नहीं होता है। इन्हें प्राप्त करनें में अनेक बाधाएं आती हैं। किसी के जीवन में ये बाधाएं अधिक होती हैं तो किसी में कुछ कम एवं किसी को बहुत आसानी से सब कुछ उपलब्ध हो जाता है। ज्योतिष में इसी उतार–चढ़ाव के खेल को ग्रहों व भाग्य का खेल कहा जाता है जो कि सबका अलग–अलग होने के कारण सबको अलग–अलग परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

मकान/आवास सुख से संबंधित योग और उपाय

मकान/आवास सुख से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, नवमेश, बृहस्पति और शुक्र तीनों चंद्रमा से केन्द्र में स्थित हैं। आप विशाल भूमि व अथाह धन–संपत्ति के स्वामी होंगे तथा आपके अनेकों नौकर–चाकर, कर्मचारी आदि होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र अकेले स्थित है तथा उस पर बृहस्पति या चंद्रमा की दृष्टि पड़ रही है। आपका केवल एक ही विवाह होगा, जिससे आपको विशाल धन–संपदा, सामाजिक मान–प्रतिष्ठा व सुख–समृद्धि की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति बारहवें भाव में स्थित है। आप अपने सगे–संबंधियों, गरीब व जरूरतमंद लोगों, धार्मिक लोगों व अनुदान में अपना धन उदारतापूर्वक खर्च कर सकते हैं। फिर भी आपकी संपत्ति समाप्त नहीं होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वादशेश शुक्र के साथ स्थित है तथा उस एक शुभ ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। आप जन्म से ही धनी व सुख–सुविधा से संपन्न होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र चंद्रमा से सातवें भाव में स्थित है। आपको असीमित भूमि–संपत्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा शुक्रसे सातवें भाव में स्थित है। आपको असीमित भूमि–संपत्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में गजकेसरी योग बन रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में गजकेसरी योग बन रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र–गुरू–शुक्र मुद्रिका योग बना रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न का स्वामी एव चौथे भाव का स्वामी एक साथ हैं। आपको उत्तम आवास सुख प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे भाव का स्वामी दूसरे अथवा ग्यारहवें भाव स्थित है। आपको आवास सुख प्राप्त होगा।

मकान/आवास सुख से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे भाव पर पापी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। आपको अपने आवास सुख की प्राप्ति में बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।

भवन/आवास सुख बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) घर में पौछा व झाड़ू खुले स्थान पर ही रखें। खासकर भोजन कक्ष में कभी नही रखना चाहिए, इससे अन्न व धन की हानि होती है। रात को झाड़ू को बिस्तर के नीचे नही रखना चाहिए, ऐसा करना बीमारी को न्यौता देना जैसा होता है।

(2) पूर्व दिशा अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। पूर्व कटा हुआ हो या कोई अन्य दोष हो तो उसे दूर करने के लिए प्रतिदिन तांबे के पात्र से जल का अर्घ्य भगवान सूर्य को आदित्याय नमः कहते हुए प्रदान करें। धीरे–धीरे दोष समाप्त होने लगेंगे। साथ ही रविवार को मीठे गुड़ से युक्त दलिये का सेवन करें। वास्तुदोष कवच भी पूर्व दिशा में शुभ मुहूर्त में लगा सकते हैं।

(3) चांदी का सर्प–सर्पणी का जोड़ा भूमि पूजन करके मकान की नींव में डालना चाहिए। एक

पात्र या शीशी में शहद भी रखें। इससे मकान की नींव मजबूत होती है। भूकंप भी आए तो भी मकान सुरक्षित रहता है, दीवारों पर दरारें नहीं पड़ती, उनमें कभी सांप–बिच्छू नहीं निकलते हैं।

(4) अचल संपत्ति, पैतृक संपत्ति प्राप्ति हेतु, शुक्रवार के दिन मध्याह्न पूर्व शिव जी पर दूध चढ़ावें तथा इसके उपरांत किसी भूखे व्यक्ति को भर पेट भोजन कराएं। रविवार के दिन गाय को गुड़ खाने को दें। यह प्रयोग नियमित कुछ माह तक करें। ईश्वर की कृपा से अचल संपत्ति (मकानादि) की प्राप्ति संभव हो सकेगी। शिव जी (शिव परिवार) पर दूध चढ़ाने के बाद, यदि संभव हो सके तो, निम्न मंत्र की 1 माला का जाप करें। इससे कार्य में शीघ्रता आएगी।

मंत्र : दुर्गे स्मृतां हरसि, भीतिम शेष जंतोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्रयदुःख भयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।

वाहन/सवारी सुख

आधुनिक समय में भौतिक भोग विलास की वस्तुएं इस प्रकार से जीवन में अपना स्थान बनाती जा रहीं हैं कि उनके बिना जीवन कठिन प्रतीत होने लगता है। इस वैज्ञानिक युग में जितनी तेज गति से विकास हो रहा है व्यक्ति को भी उसी के अनुसार अपनी गति बढ़ानी पड़ रही है। अब वो समय नहीं रहा कि लोग बैलगाड़ी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर कई-कई दिन में जाएं। इसके लिए आधुनिक वाहनों का जीवन में महत्व बढ़ता ही जा रहा है, बल्कि ये कह सकते हैं कि यह इच्छा ही नहीं आवश्यकता बन गई है। चूंकि सभी के लिए वाहन आवश्यक होता जा रहा है, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि सबको वाहन सुख प्राप्त ही हो। किसी के पास अनेकोनेक वाहन होते हैं तो कोई उसे लाख प्रयत्न करने के बाद भी प्राप्त नहीं कर पाता है, कोई व्यक्ति वाहन होते हुए भी उसका भरपूर सुख नहीं उठा पाता है आदि की तरह जीवन में अनेक ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं। ज्योतिष की दृष्टि से देखा जाय तो यह अन्तर व्यक्ति के जन्म के समय में स्थित ग्रहों के प्रभाव के कारण होता है। यदि व्यक्ति अपने जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के प्रभाव को पहले ही जान कर उसके अनुसार वाहन का जीवन में प्रयोग करे तो वह स्वयं की सुरक्षा के साथ-साथ वाहन का सुख भी भरपूर प्राप्त कर सकता है।

वाहन/सवारी सुख से संबंधित योग और उपाय

वाहन/सवारी सुख से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, नवमेश, बृहस्पति और शुक्र तीनों चंद्रमा से केन्द्र में स्थित हैं। आप विशाल भूमि व अथाह धन–संपत्ति के स्वामी होंगे तथा आपके अनेकों नौकर–चाकर, कर्मचारी आदि होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति बारहवें भाव में स्थित है। आप अपने सगे–संबंधियों, गरीब व जरूरतमंद लोगों, धार्मिक लोगों व अनुदान में अपना धन उदारतापूर्वक खर्च कर सकते हैं। फिर भी आपकी संपत्ति समाप्त नहीं होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वादशेश शुक्र के साथ स्थित है तथा उस एक शुभ ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। आप जन्म से ही धनी व सुख–सुविधा से संपन्न होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र चंद्रमा से सातवें भाव में स्थित है। आपको असीमित भूमि–संपत्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा शुक्रसे सातवें भाव में स्थित है। आपको असीमित भूमि–संपत्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में गजकेसरी योग बन रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में गजकेसरी योग बन रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र–गुरू–शुक्र मुद्रिका योग बना रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे भाव पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि पड़ रही है तथा शुक्र पर चंद्र की अथवा चंद्र पर शुक्र की दृष्टि पड़ रही है। आपको अपने जीवन में वाहन सुख की प्राप्ति होगी।

वाहन/सवारी सुख से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे भाव में कोई अस्त, वक्री अथवा नीच का ग्रह स्थित है जिससे चौथा भाव दूषित हो गया है। आपको वाहन सुख प्राप्त करने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा।

वाहन सुख बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) वाहन सुख बाधा को दूर करने के लिए माह के प्रथम शुक्रवार को 300 ग्राम काले तिल को भिगों दें तथा उसमें गुड़ भी डाल दें। अगले दिन उसमें थोड़ा से दूध और मिश्री मिला कर उसे पीस लें। उसके बाद उसमें थोड़ा सा भूना हुआ बेसन मिलाकर उसके पांच लड्डू बना लें। अब उनमें से एक लड्डू सबसे पहले माता लक्ष्मी के मंदिर में चढ़ाएं, एक लड्डू गाय को खिलाएं, एक लड्डू कत्ते को खिलाएं, एक लड्डू पीपल पर रखें और अन्य शेष लड्डू किसी भिखारी को दे दें। ऐसा आप लगातार तीन बार करें। ऐसा करने से वाहन सुख में आने वाली बाधाएं दूर हो जाएंगी।

(2) यदि जीवन में किसी भी प्रकार की वाहन सुख से संबंधित बाधा आ रही है। तो उसे दूर करने के लिए माता लक्ष्मी की आराधना करनी चाहिए।

माता–पिता, भाई–बन्धु और संतान

परिवार की बात की जाए तो यह मात्र पति–पत्नी से पूर्ण नहीं माना जाता जब तक कि इसमें संतान का प्रवेश न हो जाए। ऐसा प्रत्येक सम्प्रदाय के लोगों में होता है। संतान के बिना समाज, देश या विश्व की कल्पना नहीं की जा सकती। इसलिए संतान की प्राप्ति किसी भी दम्पति के लिए सबसे अधिक खुशी प्रदान करने वाली होती है। खासकर हिन्दू समाज में अपने संतान तथा पुत्र संतान को अधिक मान्यता प्राप्त है क्योंकि पुत्र संतान को वंश परम्परा को आगे बढ़ाने वाला, पित्तरों का तर्पण करने वाला, पिता की मृत्यु के बाद उसकी आत्मा की शांति हेतु क्रिया–कर्म करने वाला आदि माना जाता है। परन्तु पुत्र अथवा पुत्री कोई भी संतान न होने की स्थिति में पुत्री संतान की भी उतनी ही तीव्र अभिलाषा लोगों में होने लगती है। चूंकि संतान सुख की इच्छा सभी को होती है, परन्तु इसकी प्राप्ति में बाधाओं का सामना भी करना पड़ता है। ज्योतिषशास्त्र में संतान सुख में आने वाली बाधाओं को ग्रहों के प्रतिकूल प्रभाव का कारण माना जाता है। पति अथवा पत्नी या दोनों की कुण्डलियों में यदि कोई ग्रह अशुभ व बाधक योग बनाता है तो उस दम्पति को संतान सुख प्राप्ति में बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

परिवार और संतान से संबंधित योग और उपाय

परिवार और संतान से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा पर शुक्र की दृष्टि है। सहोदर की प्राप्ति में आने वाली बाधाएं या कष्ट दूर होंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में पुरुष राशि एवं पुरुष राशि का नवांश पांचवें भाव में स्थित है। आपको पुत्र संतान की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्न मिथुन है और बुध आपका लग्नेश तथा चतुर्थेश भी है। कुण्डली में बुध की नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ युति (या बुध पर उसकी दृष्टि) है। यह एक अनुकूल योग नहीं है, इसे मातृ शत्रुत्व योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो प्रबल संभावना है, कि किसी कारणवश (या बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के) आप अपनी माता (या इसी प्रकार के अन्य किसी रिश्ते) के प्रति शत्रुतापूर्ण भाव रख सकते हैं और/या वह भी आपसे समान रूप से शत्रुता का भाव रख सकती हैं। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – यदि आपके घर में बिना खोला हुआ सूत या ऊन का गोला पड़ा हुआ है, तो उसे खोल दें।
आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश की नवमेश के साथ युति है या उसपर इसकी दृष्टि है, जबकि इन दोनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह अस्त या ग्रसित नहीं है। यह एक अनुकूल योग है, इसे पितृ मूलत धन योग कहा जाता है। इस योग के होने के कारण, आपको अपनी पिता से आर्थिक लाभ प्राप्त होगा।

परिवार और संतान से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, तृतीयेश और तीसरे भाव पर द्वितीयेश, अष्टमेश और दशमेश की अशुभ दृष्टि पड़ रही है। आपके सहादरों पर ग्रहों का प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में तीसरे भाव का स्वामी पहले, दूसरे, पांचवें या बारहवें भाव में उपस्थित है। आपको संतान की प्राप्ति में कठिनाइयां हो सकती हैं या संतान की प्राप्ति नहीं हो सकती है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – यदि आपको स्त्रियों से कष्ट है, तो शनि के उपाय जैसे, नारियल, बादाम और तेल धर्मस्थान में या मंदिर में देना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश नीच का है या एक शत्रु की राशि में स्थित है अथवा एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ संबद्ध है या एक बुरे षष्ठीआंश में स्थित है। यह योग काफी प्रतिकूल है, इसे बन्धुभिसत्याक्त योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुंछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस योग के होने के कारण आपके संबंधियों और मित्रों द्वारा जीवन में कभी आपका परित्याग किया जा सकता है– भले ही आपकी कोई छोटी गलती हो या वास्तव में कोई गलती ना हो।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति और शनि आपके बारहवें भाव में स्थित हैं– जबकि इनमें से कोई भी उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। यह एक प्रतिकूल योग है– इसे अरिष्ट योग कहते हैं। आपके किसी एक संतान को अपने जीवनकाल में किसी समय कष्ट सहन करना पड़ सकता है तथा उसका स्वास्थ्य व सुख आपके पारिवारिक सदस्यों के लिए गंभीर चिन्ता का कारण बन सकता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपके किसी एक संतान की मानसिक स्थिति उसके जीवनकाल में किसी समय कुछ–कुछ बिगड़ सकती है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – हरि पूजन करें। जूठा भोजन न करें।

संतान सुख प्राप्ति के सरल उपाय

(1) किसी भी कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन एक लौकी अपने एवं अपने जीवनसाथी के ऊपर से उसार कर एक लाल वस्त्र में बांधकर किसी भी बबूल के पेड़ पर लटका देना है। इससे संतान बाधा दूर होगी एवं संतान सुख की प्राप्ति भी अति शीघ्र होगी।

(3) किसी गरीब की पत्नी को सड़ियां ले कर देने से भी जल्दी संतान की प्राप्ति हो जाती

है।

(4) यदि भाइयों मध्य विवाद एवं शत्रुता रहती है, जिसके फलस्वरूप घर में क्लेश रहता है, तो निम्नलिखित उपाय करें। रोटी बनाते समय प्रथम रोटी गाय के निमित तथा अंतिम कुत्ते के निमित्त अवश्य बनाएं और नियमित रूप से गाय एवं कुत्तों को खिलाते रहें, इससे भाई–भाई का आपसी वैमनस्य दूर होगा और परिवार में शांति बनी रहेगी।

भाग्य, नियति या प्रारब्ध

इस संसार में आस्तिक एवं नास्तिक दोनों की तरह के मनुष्य हैं। भले ही नास्तिक मनुष्य ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते हैं। इसलिए उनके लिए भाग्य भी जीवन में कोई मायने नहीं रखता है, परन्तु चाहे अनचाहे ढंग से सबको इस सत्य को कभी न कभी स्वीकार करना पड़ता है कि ऐसी कोई शक्ति अवश्य है जो हमारे कर्मों के आधार पर हमारे भाग्य का निर्माण करती है। ऐसी धारणा है कि व्यक्ति के पूर्व जन्म में किए गए कर्मों का फल उसे अगले जन्म में प्राप्त होता है एवं इस कर्मों के फल को ही सामान्य शब्दों में भाग्य का लिखा माना जाता है जो कि व्यक्ति को वर्तमान में प्राप्त होता है। इसलिए मनुष्य का जीवन केवल भाग्य से ही प्रभावित नहीं होता अपितु उसे उसका कर्म भी उतना ही प्रभावित करता है अर्थात व्यक्ति के भाग्य का निर्माण उसके कर्मों के आधार पर ही होता है। अब प्रश्न यह उठता है कि यदि हमारा भाग्य हमारे किए गए कर्मों से बनता है तो क्यों कोई व्यक्ति वर्तमान में इमानदारी, सच्चाई, परोपकार आदि सद्गुणों का अनुसरण करने के बाद भी जीवन में अनेक कठिनाईयों को झेलता है, जबकि दूसरा व्यक्ति कुमार्ग पर चलते हुए भी सुखी जीवन व्यतीत करता है। यदि ध्यान से देखा जाय तो यह ज्ञात होता है कि कुमार्ग पर चलकर अर्जित की हुई खुशियां अधिक समय तक नहीं टिकतीं हैं। जबकि व्यक्ति के सद्कर्म उसके भाग्य में आने वाले अवरोधों को समाप्त करने में मदद करते हैं। यह विषय अत्यंत जटिल एवं तर्क योग्य है कि भाग्य श्रेष्ठ है या कर्म तथा भाग्य की वास्तविकता क्या है ? साधारण शब्दों में कहा जा सकता है कि जैसे ईश्वर सत्य है उसी प्रकार व्यक्ति का भाग्य भी उसके साथ होता है जो कि उसके कर्मों के आधार पर परिवर्तित होता रहता है।

भाग्य, नियति या प्रारब्ध से संबंधित योग

भाग्य, नियति या प्रारब्ध से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रह केन्द्र में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन–समृद्धि व मान–सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में तीसरे भाव में शक्तिशाली ग्रह स्थित है। आपको अपने भाग्य का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले, दूसरे, पांचवें, नौवें, दसवें एवं ग्यारहवें भाव के स्वामी में से किसी भी युग्म में नक्षत्र परिवर्तन हो रहा है। आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में गजकेसरी योग बन रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में गजकेसरी योग बन रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र–गुरू–शुक्र मुद्रिका योग बना रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में एक ग्रह (चंद्रमा के अलावा) सूर्य से दूसरे भाव में उपस्थित है। यह वेशि योग नामक ग्रह स्थिति उत्पन्न कर रहा है। जैसा कि संबंधित ग्रह एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है, अतः यह एक शुभ योग है। इस समग्र योग को शुभ–वेशि योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, आप लम्बे कद और सम दृष्टि वाले होंगे। इसके अतिरिक्त, आप सत्यनिष्ठ और आशावादी दृष्टिकोण वाले होंगे। हालांकि, आप बहुत उर्जावान प्रवृत्ति के नहीं हो सकते हैं। यद्यपि आप बहुत धनी नहीं हो सकते हैं, फिर भी, आप अपने भाग्य से खुश रहेंगे तथा चिन्ताओं से मुक्त रहेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में अनुकूल गज केसरी योग उपस्थित है। आपका जन्म काफी सम्पन्न परिवार में हुआ है, आपका पालन–पोषण बहुत उत्तम होगा, अपने वरिष्ठों से समर्थन व लाभ प्राप्त करेंगे, काफी स्थायी पद प्राप्त करेंगे तथा आपके भाग्य में धीरे–धीरे वृद्धि होगी।
आपकी जन्मकुण्डली में अनुकूल अमला योग उपस्थित है। आपका जन्म काफी सम्पन्न परिवार में हुआ है, आपका पालन–पोषण बहुत उत्तम होगा, अपने वरिष्ठों से समर्थन व लाभ प्राप्त करेंगे, काफी स्थायी पद प्राप्त करेंगे तथा आपके भाग्य में धीरे–धीरे वृद्धि होगी।

भाग्य, नियति या प्रारब्ध से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में आठवें या बारहवें भाव में नौवें भाव का स्वामी स्थित है। आपको अपने भाग्य से कोई लाभ प्राप्त नहीं होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – माँस–मदिरा का सेवन न करें।

भाग्य बाधा दूर करने के लिए सरल उपाय

(1) यदि नियमित रूप से प्रतिदिन अपने घर में जो भी आपसे बड़े–बुजुर्ग व्यक्ति हैं उनका चरण स्पर्श प्रातः उठते ही अथवा रात में सोने से पहले करेंगे तो भाग्य में आने वाली बाधाएं समाप्त हो जाएंगी।

(2) संध्या होते ही घर में रोशनी अवश्य कर दें। अधेरें घर में दरिद्रता और ऊपरी हवाऐं प्रवेश कर सकती हैं।

(3) हनुमान चालीसा का नियमित रूप से पाठ और बन्दरों को चने व फल खिलाने से महावीर हनुमान आपके सभी कार्यो को सफल करते हैं। जहाँ हनुमान जी का वास है वहाँ कोई जादू टोना अथवा ऊपरी हवा अपना प्रभाव नही दिखला पाती।

(4) किसी न किसी तरह दरिद्र, असहाय और हिजड़ों की शुभकामनाऐं लिया करें। हिजड़ों को दिए पैसे में से एक सिक्का लेकर अपने गले में डालें।

धन – संपत्ति

मनुष्य का जीवन मिलने के बाद उसकी आवश्यकताएं विभिन्न रूप धारण करके उसके समक्ष आ खड़ी होती हैं और इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसे किसी न किसी रूप में धन की आवश्यकता जरूर पड़ती है। मनुष्य का वर्तमान हो अथवा भविष्य आर्थिक पक्ष से अधिक प्रभावित होता है। यदि व्यक्ति का आर्थिक पक्ष सुदृढ़ है तो उसकी अनेक समस्याएं आसानी से दूर हो जाती हैं, परन्तु यह आवश्यक नहीं सबकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ ही हो। किसी के पास अपार धन होता है तो कोई धन के अभाव में अपना जीवन बहुत ही कठिनाई में व्यतीत करता है। जीवन में धन से जुड़ी हुई बाधाएं अनेक रूप में आती हैं। यह आवश्यक नहीं कि जिसके पास धनार्जन के अच्छे साधन हो अथवा जिसका व्यापार व आय अधिक हो उसे धन का कभी अभाव नहीं होता, एवं जिसकी आय कम होती है उसे ही धन बाधा का सामना करना पड़ता है। धन संबंधी बाधा तो किसी के भी जीवन में किसी भी स्वरूप में आ सकती है। ऐसी परिस्थिति जब व्यक्ति को धन की आवश्यकता हो और उसके पास प्रत्यक्ष रूप से धन उपलब्ध न हो तो उसे धन बाधा कहा जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस प्रकार की परिस्थितियां ग्रहों के योग से निर्मित होती हैं। यही कारण है कि एक ही माता–पिता की दो संतान माता–पिता द्वारा समान रूप से धन वितरण करने के बाद भी कोई धनवान व कोई गरीब हो जाती है। इसलिए इन ग्रहों के योग को जानना व्यक्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाता है।

धन – संपत्ति से संबंधित योग और उपाय

धन – संपत्ति से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश, द्वितीयेश और एकादशेश केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हैं। आपको उत्तम धन–संपत्ति का सुख प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रह केन्द्र में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन–समृद्धि व मान–सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, नवमेश, बृहस्पति और शुक्र तीनों चंद्रमा से केन्द्र में स्थित हैं। आप विशाल भूमि व अथाह धन–संपत्ति के स्वामी होंगे तथा आपके अनेकों नौकर–चाकर, कर्मचारी आदि होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र अकेले स्थित है तथा उस पर बृहस्पति या चंद्रमा की दृष्टि पड़ रही है। आपका केवल एक ही विवाह होगा, जिससे आपको विशाल धन–संपदा, सामाजिक मान–प्रतिष्ठा व सुख–समृद्धि की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति बारहवें भाव में स्थित है। आप अपने सगे–संबंधियों, गरीब व जरूरतमंद लोगों, धार्मिक लोगों व अनुदान में अपना धन उदारतापूर्वक खर्च कर सकते हैं। फिर भी आपकी संपत्ति समाप्त नहीं होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वादशेश शुक्र के साथ स्थित है तथा उस एक शुभ ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। आप जन्म से ही धनी व सुख–सुविधा से संपन्न होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र चंद्रमा से सातवें भाव में स्थित है। आपको असीमित भूमि–संपत्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा शुक्रसे सातवें भाव में स्थित है। आपको असीमित भूमि–संपत्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में गजकेसरी योग बन रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में गजकेसरी योग बन रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र–गुरू–शुक्र मुद्रिका योग बना रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक अत्यंत शुभ योग मौजूद है। अपने स्वयं के प्रयत्नों को निर्देशित करके तथा अपनी इच्छाशक्ति के वास्तविक शक्ति के आधार पर आप अपने समकालीनों से बहुत आगे निकल जाएंगे। आपकी सभी महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी और आपकी अभिलाषित इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपके आस–पास के लोग आपको एक अनुकरणीय व्यक्ति तथा एक प्रेरणादायक स्रोत के रूप में मानेंगे। आप अपने जीवनसाथी, संतानों, संबंधियों और मित्रों के साथ समृद्धिपूर्ण और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।
जैसाकि आपके ग्यारहवें भाव में एक अग्नि तत्व की राशि स्थित है। आपको अपने पैतृक/जन्म स्थान से पूर्व दिशा में स्थित स्थानों पर/से उत्तम लाभ प्राप्त हो सकता है।

जैसाकि एक ग्रह (सूर्य के अलावा) चंद्रमा से दूसरे भाव में उपस्थित है। यह सुनफा नामक ग्रह योग का निर्माण करता है। इस योग की उपस्थिति के कारण, आप अत्यंत बुद्धिमान होंगे, आपकी आय बहुत उत्तम होगी तथा बहुत धनवान होंगे। अपने संबंधियों और मित्रों के साथ आप आरामपूर्ण और आधुनिक जीवन का आनन्द लेंगे।

धन – संपत्ति से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र द्वादशेश के साथ तीसरे भाव में स्थित है। आपकी रत्न आभूषण प्राप्त करने की अभिलाषा कभी भी पूरी नहीं हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में, अष्टमेश व नवमेश किसी भी प्रकार से आठवें व बारहवें भाव में स्थित हैं। आपकी आर्थिक स्थिति दयनीय हो सकती है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – जूठा भोजन न करें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी छठवें भाव के स्वामी के साथ दसवें भाव में स्थित है। आपको अपने जीवन में शत्रुओं के कारण आर्थिक हानि उठानी पड़ेगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – मंगलवार का व्रत रखें।

आपकी जन्मकुण्डली में छठे, आठवें या बारहवें भाव के स्वामी के साथ पांचवें भाव के स्वामी की युति है एवं इन पर शुभ दृष्टि नहीं है। आपको अपना जीवन आर्थिक तंगी की स्थिति में गुजारना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्नेश या लग्न नवांशेश त्रिक भाव अर्थात छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है एवं दूसरे या सातवें भाव के स्वामी से युक्त अथवा दृष्ट है। आर्थिक दृष्टि से आपका जीवन उत्तम नहीं हो सकता है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – हरे रंग का प्रयोग कम से कम करें।

धन बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) यदि व्यवसाय में लाभ नहीं होता है या धन नहीं रूकता है, तो सोमवार के दिन शिव लिंग को दूध, दही, शुद्ध घी, शहद एंव गंगाजल से धोकर पवित्र करें और नागकेसर का पांच फूल शिव लिंग पर चढ़ा दें। इस प्रक्रिया को अगली पूर्णिमा तक प्रत्येक सोमवार को करें। इसके बाद अखिरी दिन चढ़ाये गये फूल, बिल्वपत्र का एक फूल और एक बिल्वपत्र सच्ची श्रद्धा से अपने घर ला कर धन के स्थान पर रख दें। इस उपाय के करने से अपार धन संपदा का आगमन होने लगेगा।

(2) यदि आपके उपर बहुत सारी जिम्मेदारियां है लेकिन धन की कमी के कारण अपनी समस्या को पूरा नही कर पा रहे है तो शुक्रवार को लाल कमल का फूल लायें और उस पर तिलक लगाकर लाल कपड़े के उपर रख कर अगरबत्ती से पूजा करें। पूजा करने के बाद उसी कपड़े में बांध कर धन के स्थान पर रख दें। इस उपाय को करते समय किसी को पता नही चलना चाहिए तभी लाभ प्राप्त होगा।

(3) यदि आप सदा धनवान रहना चाहते हैं, तो रात्रि में 3 से 5 के बीच में उठ कर अपने खुले स्थान पर जायें, जहाँ से आकाश स्पष्ट दिखाई देता हो। इसके बाद आप पश्चिम के तरफ मुख करके अपने दोनों हाथों को जोड़ कर आकाश की ओर देखते हुए हथेलियों को अपने मुख पर फेर लें। इस उपाय को करने से सदा धनवान बने रहेंगे।

(4) यदि आपको धन हानि व धन समस्या हो रही हो, तो इसके सामाधन के लिए आप दीपावली की रात्रि में इस मंत्र का 21 माला जप करें।

ऊँ नमो पद्मावति पद्मालये लक्ष्मीदायिनी।
वांछाभूतप्रेत बिंध्यवासिनी सर्व शत्रु संहारिणि।।
दुर्जन मोहिनी ऋद्धिसिद्धि वृद्धि कुरू स्वाहा।
ऊँ क्लीं श्रीं पद्मावत्यै नमः।।

मंत्र के जप करने से आर्थिक समस्याऐं समाप्त हो जायेगी और धन की प्राप्ति होगी। यदि धन से परिपूर्ण रहना चाहते हैं, तो नित्य सुबह अपने दैनिक कार्य से निपटने के बाद स्नान करके, स्वच्छ कपड़े धारण करें और आप इस मंत्र को प्रतिदिन

पदोन्नति/तरक्की और स्थानान्तरण

व्यक्ति किसी भी क्षेत्र चाहे सरकारी हो या गैर–सरकारी या व्यवसाय, वह अपने कार्यक्षेत्र में कार्य करते हुए अपने विकास की तीव्र इच्छा रखता है। वह जीवन भर एक ही स्तर को नहीं जीना चाहता है बल्कि सदैव अपने स्तर से ऊपर उठना चाहता है। उसकी यही इच्छा उसके कार्यक्षेत्र में उन्नति पाने की इच्छा को तीव्र करती है। वह अपनी आय में, अपने लाभ में, अपनी शक्ति में वृद्धि चाहता है। कई बार वह अपनी पदोन्नति सिर्फ आय में वृद्धि के लिए ही नहीं बल्कि अपने शक्ति व प्रभाव में वृद्धि के लिए भी चाहता है। इसके लिए वह भरपूर प्रयत्न भी करता है, लेकिन उसके प्रयत्न का प्रतिफल उसके परिश्रम के अनुरूप ही प्राप्त हो यह सदैव और सभी के साथ संभव नहीं होता। कई बार किसी को बिना अधिक परिश्रम के ही आय में वृद्धि व पदोन्नति प्राप्त हो जाती है, परन्तु किसी किसी को कठिन परिश्रम के बाद भी प्राप्त नहीं होती। ज्योतिष की मानें तो यदि व्यक्ति इमानदारी से अपना कर्म करता है एवं अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह करता है, परन्तु उसके बाद भी उसके जीवन में बार–बार इस प्रकार की कठिनाई अथवा बाधा का आती है तो यह उसके जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के प्रभाव से भी हो सकता है। ग्रहों की प्रतिकूलता व्यक्ति के उन्नति के मार्ग को बाधित करती हैं। इसलिए इसे जानना व्यक्ति के लिए आवश्यक है जिससे कि वह उचित मार्ग अपनाकर अपनी उन्नति में आने वाली बाधाओं को दूर कर सके।

पदोन्नति और स्थानान्तरण से संबंधित योग और उपाय

पदोन्नति/तरक्की और स्थानान्तरण से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में शनि पहले, चौथे या आठवें भाव में स्थित नहीं है एवं उच्च का या स्वराशि का नहीं है। आपकी पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न होंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – तेल और शराब का दान करें।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि दसवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है। आपकी पदोन्नति के मार्ग में बाधाएं उत्पन्न होंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – माँस–मदिरा का सेवन न करें।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवें भाव में छठें, आठवें या बारहवें भाव का स्वामी स्थित है। आपको अपनी पदोन्नति के लिए अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा।

पदोन्नति बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) पदोन्नति के मार्ग में आने वाली बाधा को समाप्त करने के लिए किसी भी माह के प्रथम बुधवार से प्रारम्भ कर सकते है। इसके लिए अपने घर के निकट स्थित किसी भी गणेश जी के मंदिर में जाकर अपनी शक्ति अनुसार पूजा व सेवा करें एवं मोदक का भोग आवश्यक तौर पर अर्पित करें। उसके बाद श्री गणेश अथर्वशीर्ष का एक बार पाठ करके उनकी सात बार परिक्रमा करें व 21 बार पंचाक्षरी मंत्र का जाप करें। अब प्रभु को प्रणाम कर मंदिर से बाहर आ जाएं एवं गाय को हरी घास, चारा या कोई हरी सब्जी खिलाएं। इस उपाय के प्रभाव से आपके मार्ग में आने वाली बाधा दूर हो जाएगी।

(2) पदोन्नति के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए अपने भोजन में प्रतिदिन काला नमक एवं काली मिर्च का सेवन करना प्रारम्भ कर दें और भोजन के पश्चात गुड़ का सेवन अवश्य करें।

(3) यदि आप जिस स्थान पर रहते है और वहाँ से ऊब चुके हैं तथा अपना स्थानांतरण अपनी पसंदीदा जगह पर कराना चाहते है। यह उपाय कीजिये शीघ्र काम हो जायेगा। शुक्रवार की रात या शनिवार की सुबह सितारों की छाया में, ठंडे पानी से स्नान करके, पूजा पाठ में लग जायें। सूर्योदय होने पर सूर्य देव को 21 लाल मिर्च या सात दानों का अर्ध्य दें पानी बिल्कुल नही डालना। सूर्य कृपा से 21 दिनों में स्थानांतरण हो जायेगा या आस हो जायेगी। यह सिद्ध किया हुआ तथा अनुभूत उपाय है, परन्तु इस उपाय को करते हुए मन में विश्वास ज़रूर होना चाहिए।

(4) सुबह उठ कर, नहा कर, शुद्ध वस्त्र पहन कर, 11 लाल मिर्च ले कर, सूर्य की तरफ फेंकें तथा कहें मेरी जल्दी से दूसरी जगह बदली (तबादला) हो जाए। ऐसा 43 दिन करें तो बदली हो जाएगी।

कर्ज/अपव्यय और लोन

मनुष्य के गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के साथ ही असीमित आवश्यकताएं उत्पन्न होने लगती हैं। वह अपनी सभी प्रकार की आवश्यकताओं को पूरा करने की इच्छा करता है, परन्तु आर्थिक परिस्थितियां सदैव अनुकूल नहीं होतीं और वह अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के उपाय करने लगता है। उसे जिस प्रकार से उचित लगता है वह प्रयत्न करता है कि उसकी व उसके परिवार की सभी आवश्यकताएं पूर्ण हो जाएं। इसी प्रयत्न में वह कई बार कर्जदार बनता चला जाता है। संभवतः कई बार जीवन में अकस्मात ऐसी परिस्थितियां भी उत्पन्न हो जाती हैं। जब व्यक्ति को ना चाहते हुए भी ऋण लेना पड़ता है। जीवन में ऋण लेना और उसे समय से चुका पाना कठिन कार्य होता है। कई बार स्थिति इतनी कष्टमय हो जाती है कि व्यक्ति का जीना दूभर हो जाता है। ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि में ऐसी परिस्थितियां ग्रहों के प्रभाव से उत्पन्न होती हैं। आर्थिक रूप से कर्जदार बनने की स्थिति में ज्योतिष में छठवें भाव व उसके स्वामी शनि को उसका कारण माना जाता है। ऐसी ही अनेक ग्रह स्थिति होती हैं जिसके कारण व्यक्ति को कर्ज लेना पड़ता है। इसे यदि पहले से जान लिया जाए तो कुछ हद तक परिस्थिति को अनुकूल बनाने का प्रयास किया जा सकता है।

कर्ज/अपब्यय और लोन से संबंधित योग और उपाय

कर्ज/अपब्यय और लोन से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, अष्टमेश व नवमेश किसी भी प्रकार से आठवें व बारहवें भाव में स्थित हैं। आपकी आर्थिक स्थिति दयनीय हो सकती है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपने मकान में एक अंधेरी कोठरी अवश्य रखें।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि बारहवे भाव में स्थित है। आपको कर्ज लेना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपना चाल–चलन ठीक रखें।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि की दृष्टि छठे भाव पर पड़ रही है। आप अपने जीवन में कर्जदार बनेंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपने मकान के दक्षिणी कोने पर काले कपड़े में 12 बादाम स्थापित करें।

आपकी जन्मकुण्डली में राहु या शनि बारहवें भाव में बैठे हुए हैं। आपको परिस्थिति वश कर्ज लेना पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी दसवें भाव में स्थित है। आपको कर्ज लेना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – हनुमान जी की पूजा करें।

कर्ज/ऋण बाधा मुक्ति के सरल उपाय

(1) दो अभिमंत्रित गोमती चक्र, सफेद मिठाई, पीला चंदन, नारियल पानी, शुद्ध घी का दीपक, पीले फूल, शहद आदि एकत्र कर लें। किसी भी चतुर्दशी के दिन प्रातःकाल स्नान आदि करके श्वेत वस्त्र धारण करें और निकट के शिव मंदिर में जाकर शिवलिंग को नारियल पानी में शहद मिलाकर स्नान कराएं एवं पंचोपचार विधि से अभिषेक करें। पीले चंदन से त्रिपुण्ड बनाएं व तिलक करें। उसके बाद पीला फूल अर्पित करें व दीपक जलाएं। दो गोमती चक्र में से एक गोमती चक्र शिवजी को अर्पित कर दें तथा एक गोमती चक्र को शिवलिंग से स्पर्श कराकर सदैव अपने पास अपनी जेब में रखें। उसके बाद वहीं पर बैठकर दारिद्रदहन शिवस्तोत्र का पाठ करें। इस उपाय के प्रभाव से आप अपना कर्ज चुकाने में समर्थ होने लगेंगे और शीघ्र ऋणमुक्त हो जाएंगे।

(2) अगर ऋण के बोझ से दबे हैं और आपकी आर्थिक स्थिति प्रतिदिन खराब होती जा रही हैं, तो किसी शुक्ल पक्ष में प्रथम तिथि से इसके लिए उपाय कर सकते है। स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहन कर पूर्व की तरफ मुख करके बैठ जायें। आप एक हत्था जोड़ी में नीले धागे को 110 बार लपेटते समय भगवान का स्मरण करते रहें। अब श्री गणेश जी का स्मरण कर 28 बार ‘‘ऊँ गं गणपत्यै ऋणहर्तायै नमः‘‘ का जाप करें। अब पीले रंग के चावल से 35 बार मंत्र जाप करे, जाप करने के बाद हत्थाजोड़े को किसी लाल वस्त्र पर रख कर प्रणाम करें फिर उठ जायें। इस तरह नवमी तक करते रहें। नवमी के रात में हत्थजोड़े को किसी वस्त्र में बांधकर आपने घर के किसी कोने में दबा दें। आप कुछ दिनो में कर्ज मुक्त हो जायेंगे।

(3) गेहूं पिसवाते हों, तो हमेश गुरुवार, या मंगलवार को ही चुनें। यदि पिसा–पिसाया आटा लाते हों, तो भी उपर्युक्त दिवस को ही लाएं, तो अत्यंत लाभ होगा और साथ ही थोड़ा सा आटा एवं शक्कर मिला कर घर के चारों कोनों पर डाल दें, परन्तु इसके लिए श्रद्धा का होना परम आवश्यक है।

शत्रु/कोर्ट कचहरी

मनुष्य के जीवन में अन्य पहलुओं के अलावा एक और महत्वपूर्ण पहलु होता है वह है मित्र व शत्रु का। जहां व्यक्ति मित्रों व सहयोगियों के सहयोग से सफलता अर्जित करता है, वहीं शत्रु उसे सफलता के मुकाम से पिछे ढकेलने का भरपूर प्रयत्न करता है। मित्रों का चयन करना और मित्र बनाना जितना ही मुश्किल होता है, शत्रु बनाना उतना ही आसान अथवा इसे ऐसे भी कहा जा सकता है कि शत्रु बिना बनाए भी बन जाते हैं। शत्रु बनने में किसी एक कारण की भूमिका नहीं होती, अपितु अनेक कारण हो सकते हैं। आपकी सफलता, आपका योग्यता, आपका सम्मान, आपका धन, आपकी कर्मठता, लोगों में प्रतिस्पर्द्धा की भावना, आगे निकलने की होड़ आदि अनेक ऐसे कारण हैं जिससे अन्य लोगों को आपसे इर्ष्या होने लगती है। यही इर्ष्या व्यक्ति के लिए शत्रु पैदा करती है। आपके मित्र आपको समय पर सहायता पहुंचाएं या ना पहुंचाएं परन्तु आपके शत्रु समय पाते ही आपका अहित करने का पूरा प्रयास करते हैं। जीवन में शत्रुओं का सक्रिय होना अत्यंत समस्याएं उत्पन्न करता है। शत्रु का होना भी एक प्रकार का रोग होता है जो व्यक्ति को हानि अवश्य पहुंचाता है। ज्योतिष में हर उस कारक को शत्रु की संज्ञा दी गई है जो व्यक्ति को हानि पहुंचाता है अथवा हानि पहुचाने का प्रयास करता है। शत्रुओं का व्यक्ति के जीवन में सक्रिय होना ग्रहों की उपस्थिति से प्रभावित होता है। यही कारण है कि कोई व्यक्ति अनेक शत्रुओं के होते हुए भी वह उनका दलन करते हुए सफलता अर्जित कर लेता है, जबकि अन्य को शत्रुओं के कारण जीवन में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इसलिए ग्रहों के प्रभाव को जानना आवश्यक हो जाता है।

शत्रु/कोर्ट कचहरी से संबंधित योग और उपाय

शत्रु/कोर्ट कचहरी से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल दसवें भाव या दसवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है एवं शत्रु बाधा योग बन रहा है। यद्यपि आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने का भरपूर प्रयत्न करेंगे, परन्तु वह अपने इरादे में सफल नहीं हो पाएंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – मीठा भोजन करें।

आपकी जन्मकुण्डली में, तृतीयेश का नवांश–राशिपति वर्गोत्तम स्थिति में है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है, इसे रण प्रवीण योग कहा जाता है। आप एक सक्षम रणनीतिकार हो सकते हैं तथा युद्ध और/या सक्रिय सेवा में जीत की श्रृंखला हासिल कर सकते हैं।

शत्रु/कोर्ट कचहरी से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी छठवें भाव के स्वामी के साथ दसवें भाव में स्थित है। आपको अपने जीवन में शत्रुओं के कारण आर्थिक हानि उठानी पड़ेगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – हिरण पालें।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह– जो कि उच्चस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में नहीं है– आपके दूसरे भाव में स्थित है। द्वितीयेश या इसका नवांश–राशिपति एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है अथवा नीच या अस्त या ग्रसित होने के कारण कमजोर है अथवा लग्न कुण्डली या नवांश कुण्डली में एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ संबद्ध है। इस प्रतिकूल योग को दुर्मुख योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपका व्यक्तित्व आकर्षक नहीं हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आपका स्वभाव चिड़चिड़ा हो सकता है, बहुत जल्दी क्रोधित होने की प्रवृति हो सकती है और कठोर व अपशब्दों का प्रयोग कर सकते हैं– जिसके लिए आपके अपने लोग तक आपको बहुत नापसन्द कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में पाश योग नामक एक नभश योग मौजूद है। यह एक बहुत अनुकूल योग नहीं है, तथा आपके जीवन में किसी समय के दौरान, आपको प्रतिकूलताओं और बाधाओं के विरूद्ध संघर्ष करना पड़ सकता है। आप दयनीय स्थिति में औसत पारिश्रमिक पर दूसरों की सेवा में रह सकते हैं तथा आपको उचित सम्मान भी नहीं मिल सकता है। यद्यपि आप कार्य में कुशल होंगे, फिर भी आपका स्वभाव कुछ हद तक विद्वेषपूर्ण हो सकता है। कई बार आप शिष्टाचार भूल सकते हैं तथा औचित्य की भावना खो सकते हैं। परिस्थितिजन्य अनिवार्यता के कारण आपको अपनी इच्छा के विरूद्ध किसी स्थान पर रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

शत्रु वर्ग से सुरक्षा के लिए सरल उपाय

(1) यदि आपको कोई व्यक्ति ज्यादा परेशान करता है तो पलंग के नीचे कांस्य के वर्तन में जल भर कर उसमें लाल चन्दन व सोना या चांदी का सिक्का रखें। अगले दिन उस जल को किसी पेड़ की जड़ में डाल दें।

(2) यदि आपको किसी प्रकार का कष्ट हो रहा है, तो पलंग के नीचे एक बर्तन में सरसो का तेल रखें और अगले दिन उसमें उड़द मिलाकर गुल गुला बना दें। अब आप गुल गुले को गरीब आदमी और कुत्ते को खिला दें। ऐसा करने से आपकी समस्या का सामाधान हो जायेगा।

(3) अपने शत्रु का नाम पीपल के पत्ते पर, कर्पूर के काजल से बनी स्याही द्वारा, लिख कर निर्जन स्थान पर भूमि खोद कर दबा दें, तो शत्रु कभी पीड़ित नहीं करता।

(4) दुर्गा आराधना एवं दुर्गा सप्तशती पाठ से व्यक्ति, सभी विघ्न–बाधाओं से दूर रह कर–सुख–समृद्धि प्राप्त करता है। परंतु हर व्यक्ति के लिए दुर्गा पाठ करवाना, कर पाना संभव नहीं है। अतः ऐसे लोगों को दुर्गा सप्तशती के अंतर्गत विघ्न–बाधा निवारण मंत्र की 1 माला रोज अवश्य जपनी चाहिए। मंत्र इस प्रकार है :

सर्वावाधा विनिर्मुक्तो धन–धान्य सुतान्विते।
मनुष्योमत्प्रसादने भविष्यति न संसयः।।

इस मंत्र के जाप से कारोबार में विघ्न–बाधाएं दूर होती हैं। विशेष फल प्राप्ति हेतु मां दुर्गा के प्रति विश्वास जरूरी है तथा संभव हो सके, तो इसी मंत्र से काले तिल, घृत का हवन करें।

यश/शोहरत और प्रसिद्धि

मनुष्य के मन में असीमित इच्छाएं होती हैं। वह संसार के समस्त भौतिक भोग विलास की वस्तुएं, धन–संपदा, सुख–समृद्धि इन सब को प्राप्त करना चाहता है एवं इन्हें प्राप्त करने के लिए आजीवन अपने सामर्थ्य के अनुसार प्रयत्न भी करता है। इसके साथ–साथ उसकी एक और इच्छा भी होती है वह है समाज में एक प्रतिष्ठित स्थान की प्राप्ति। वह चाहता है उसके द्वारा किए गए कार्यों की सराहना हो, उसे सब लोग सम्मान दें, उसकी ख्याति दूर–दूर तक फैले इत्यादि। इतना ही नहीं वह अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए चाहता है कि उसके घर–परिवार के सदस्य भी ऐसा कोई कार्य न करें जिससे उसे अपयश मिले। यह सर्वथा सत्य है कि मनुष्य चाहे इस संसार में कितनी ही भौतिक संपदा एकत्र कर ले, परन्तु उसकी मृत्यु के उपरांत उसके साथ मात्र उसके अच्छे कर्म ही जाते हैं एवं इस भौतिक संसार में भी उसे उसके कर्मों के अनुसार ही आजीवन याद किया जाता है। व्यक्ति का एक गलत आचरण उसके जीवन के समस्त अच्छे कार्यों को अपयश में बदल देता है। इसलिए यश की कामना करने वाले व्यक्ति को सदैव अपने कार्यों का चयन बुद्धिमतापूर्ण ढंग से करना चाहिए। किन्तु कई बार ऐसा भी होता है कि व्यक्ति को अपयश उसके या उसके पारिवारिक जनों के कार्यों के कारण नहीं मिलता अपितु अनचाहे, अनजाने अथवा विपरित परिस्थितियों के कारण मिल जाता है। ज्योतिषिय दृष्टि से इसमें व्यक्ति का दोष नहीं होता बल्कि उसके ग्रहों की प्रतिकूलता के कारण ऐसा होता है जो कि उसके भाग्य में सम्मिलित होने के कारण उसे उसका भुगतान करना पड़ता है। इस प्रकार की यश बाधाएं व्यक्ति को मानसिक रूप से बहुत पीड़ा देती हैं। इसलिए इन्हें जानकर इसके लिए उचित उपाय करना चाहिए।

यश/शोहरत और प्रसिद्धि से संबंधित योग

यश/शोहरत और प्रसिद्धि से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रह केन्द्र में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन–समृद्धि व मान–सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, नवमेश, बृहस्पति और शुक्र तीनों चंद्रमा से केन्द्र में स्थित हैं। आप विशाल भूमि व अथाह धन–संपत्ति के स्वामी होंगे तथा आपके अनेकों नौकर–चाकर, कर्मचारी आदि होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति बारहवें भाव में स्थित है। आप अपने सगे–संबंधियों, गरीब व जरूरतमंद लोगों, धार्मिक लोगों व अनुदान में अपना धन उदारतापूर्वक खर्च कर सकते हैं। फिर भी आपकी संपत्ति समाप्त नहीं होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में गजकेसरी योग बन रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में गजकेसरी योग बन रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र–गुरू–शुक्र मुद्रिका योग बना रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा एवं शुक्र में पारस्परिक दृष्टि संबंध है एवं शुक्र नीच राशि का अथवा अस्त नहीं है। इसलिए आपमें नेतृत्व करने का गुण विद्यमान होगा। आप विनम्र, विचारवान, सदाचारी एवं विख्यात होंगे तथा समाज का नेतृत्व करने में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, तृतीयेश का नवांश–राशिपति वर्गोत्तम स्थिति में है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है, इसे रण प्रवीण योग कहा जाता है। आप एक सक्षम रणनीतिकार हो सकते हैं तथा युद्ध और/या सक्रिय सेवा में जीत की श्रृंखला हासिल कर सकते हैं।

यश/शोहरत और प्रसिद्धि से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में बारहवें भाव में दसवें भाव का स्वामी स्थित है। आपको यश आसानी से प्राप्त नहीं होगा, आपको अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – केसर या हल्दी का तिलक लगायें।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह– जो कि उच्चस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में नहीं है– आपके दूसरे भाव में स्थित है। द्वितीयेश या इसका नवांश–राशिपति एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है अथवा नीच या अस्त या ग्रसित होने के कारण कमजोर है अथवा लग्न कुण्डली या नवांश कुण्डली में एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ संबद्ध है। इस प्रतिकूल योग को दुर्मुख योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपका व्यक्तित्व आकर्षक नहीं हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आपका स्वभाव चिड़चिड़ा हो सकता है, बहुत जल्दी क्रोधित होने की प्रवृति हो सकती है और कठोर व अपशब्दों का प्रयोग कर सकते हैं– जिसके लिए आपके अपने लोग तक आपको बहुत नापसन्द कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में पाश योग नामक एक नभश योग मौजूद है। यह एक बहुत अनुकूल योग नहीं है, तथा आपके जीवन में किसी समय के दौरान, आपको प्रतिकूलताओं और बाधाओं के विरूद्ध संघर्ष करना पड़ सकता है। आप दयनीय स्थिति में औसत पारिश्रमिक पर दूसरों की सेवा में रह सकते हैं तथा आपको उचित सम्मान भी नहीं मिल सकता है। यद्यपि आप कार्य में कुशल होंगे, फिर भी आपका स्वभाव कुछ हद तक विद्वेषपूर्ण हो सकता है। कई बार आप शिष्टाचार भूल सकते हैं तथा औचित्य की भावना खो सकते हैं। परिस्थितिजन्य अनिवार्यता के कारण आपको अपनी इच्छा के विरूद्ध किसी स्थान पर रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता

है।

यश बाधा दूर करने के लिए सरल उपाय

(1) यश में वृद्धि करने के लिए सदैव अपने घर–परिवार की महिलाओं को सम्मान देना चाहिए। ऐसा करने से आपके यश में आने वाली बाधाएं समाप्त हो जाएंगी एवं शीघ्र ही यश में वृद्धि होने लगेगी।

(2) आप अपना काम कर रहे हो कठिन परिश्रम के बावजूद भी लोग आपका हक मार देते हैं। अनावश्यक कार्य अवरोध उत्पन्न करते हों। आपकी गलती न होने के बावजूद भी आपको हानि पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा हो तो यह प्रयोग आपके लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध होगा। रात्रि में 10 बजे से 12 बजे के बीज में यह उपाय करना बहुत ही शुभ रहेगा। एक चौकी के ऊपर लाल कपड़ा बिछा कर उसके ऊपर 11 जटा वाले नारियल। प्रत्येक नारियल के ऊपर लाल कपड़ा लपेट कर कलावा बांध दें। इन सभी नारियल को चौकी के ऊपर रख दें। घी का दीपक जला करके धूप–दीप नैवेद्य पुष्प और अक्षत अर्पित कर, नारियल के ऊपर कुमकुम से स्वास्तिक बनाए और उन प्रत्येक स्वास्तिक के ऊपर पांच–पांच लौंग रखें और एक सुपारी रखें। माँ भगवती का ध्यान करें। कष्टों से मुक्ति के लिए माँ से प्रार्थना करें। कम्बल का आसन बिछा कर ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाय विच्चे ओम् शैलपुत्री देव्यै नमः11 माला जाप करें, तत्पश्चात नारियल सहित समस्त सामग्री को सफेद कपड़े में बांध कर अपने ऊपर से 11 बार वार कर सोने वाले पलंग के नीचे रख दें। सुबह ब्रह्म मुहूर्त में बिना किसी से बात किए यह सामग्री कुएं, तालाब या किसी बहते हुए पानी में प्रवाह कर दें। कैसी भी कानूनी समस्या होगी उससे छुटकारा मिल जाएगा।

(4) पुष्य नक्षत्र में चमेली की जड़ सिद्ध करके चांदी या सोने के तावीज़ में धारण करने से शत्रु पर विजय हासिल होती है जिसके लिए सिद्ध करके डाली जाती है।

Disclaimer

The calculations, future predictions, and remedies given in this Astrological Report are all based on the principles of either on Vedic Astrology, KP System, Jaimini or Lal Kitab, Numerology which are the result of consulting and engaging highly learned astrologers and astrology practitioners. This Report will prove to be highly useful for astrologers and practitioners of Astrology. We earnestly request the common users of this Report that they should not follow the Lal Kitab and or other prediction/remedies given in this Report without consulting a learned astrologer or an expert on this subject. Failing to do so might lead you to unexpected results which may or may not be favorable towards your well-being.

www.lalkitabnadi.com/MindSutra Software Technologies makes no warranty about the accuracy of any data contained herein, and the native is advised to not to take as conclusive any prediction generated for him. If you follow the advice given in this report you do so at your own risk, www.lalkitabnadi.com/ MindSutra Software Technologies or any of its associates are not responsible for the consequence of any event or action.

www.lalkitabnadi.com/MindSutra Software Technologies shall not stand liable for any damages or harm done.

All disputes are subject to New Delhi Jurisdiction only.

Wishing the very best – prosperity and happiness.